



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

I SSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १४९ म अंक ०१ मार्च २०१४ (वर्ष १ मास १३ अंक १४९)



ए अकमे अछि:-

# पतझाड़

(वसुधै कुरुते)

जगदीश प्रसाद मण्डल



# समारपन

असतत कथा प्रयुक्तमान ओग कथा प्रेमीके समरपित जे कथ्य कथन कथाक मर्के पकडा कथापन करै छथि । अघठमे खसन ओग हुन सदृश कथाके कथे-प्रेमी ल कोमन पंख पकडा जन गंगामे म्णान करा गरिब गग पहिवा देरसिब चढ सदृश रंगरैत । ओग मर्केदी शिकावीके तहेदिन समरपित ।





## कथाक सतुवि

गोअरु योव.....	00
छेकरा सगड 1.....	00
अगसोच.....	00
पजसाड.....	00
सोस्रीक यज्जा.....	00
यति-गति.....	00
बिज्जुष्ट.....	00
अगस सग झूठ.....	00
सुयति.....	00
लेव प्रुठरनि.....	00
याघरु घुव.....	00
खट.....	00
अखर-दोखर.....	00
पेठगसह.....	00
बैडरु माता.....	00
धवती-अकास.....	00
बैकठाँअ.....	00



## पाष्क योव

हथिया लै रबमले रौडि-साडि क काज अगते शुक भ२ गेन । काहि कोजगवा डी । उगा समथ लौदियाह जकाँ भ२ गेन अछि । द्वाद समेोक (मामोक) तँ अगल ग्वा-धर्म होग छै । छैथन ओस बहिनो जमीनमे ठँठ तँ पमविध गेन अछि । लोकका सुकजक जे मोहनगवता एरी चाली से तँ आरिध गेन अछि । रौध-रौधमे भनहि रौदी रूमि पडै, मरहल-मरहला देखि पडै द्वाद रौध-साडि क कप तँ ओते नहिये रिगडन अछि । तद्दमे जाडक उमवण थोड जे पाकाक पनना पडि टिठुवन बहत, रबमातक ले उगाडि डी ! सबनो त्मना तँ बहूक दूना । नतीउ-हती आकि साडि-मुड जे अगते अर्थात् रबमातसँ पहिले पवना रम्व रँदनि नर रम्वक संग नर कनशेक नर द्वादिये नर फुनक संग नर फलोक जेवण तँ जेवणागथ गेन अछि । नर सुकजक संग बरिकाणत नर दिक नर काज दिस नजवि उठौननि तँ देखि पडननि जे दबीमक रौडि जाएरँ जकवी अछि । केते वंगक कीडि-मकोडि, उगदर शुक क२ देल हथ । रीना किमहरो तकल ओ दबीमक रौडि रिदा भेना । रौडि क द्वाहाँरिना गाडुगव नजवि पडि ते दीपकक छिपी मल पडननि । मल पडननि दुर्गापुजाक डुध्रीमे आएन मिलाहकान्त । कनशेथपल दिस छिपी देल डन । जगमे निथन छेले जे रीसम दिस पवीडाक फावम भवाएत, कोलेजक पडिनो रौकी जे अछि सेहो नागत । नाँ निथोना पडाति एको-पाग देलो ल छेकि । दबीमक रौडिसँ छोठे घुमि बरिकाणत दवरँजजाक चावक ओमतीक रँतीमे थोमन छिपी निकालि दोहवा क२ पठननि । पवीडाक फावम भवाएत तगले पाष्कक ओवियाण कवरँ छेननि । एनो निथन छेननि जे दीपक अगल गाम आरि मात्रिकक कोजगवा पुवि जेत आ तेसब दिस आगमो भ२ जाएत । उगा केते पाष्कक ओवियाण कवरँ अछि से म्पयष्ट नहिये अछि द्वाद रँठीक पठि गक अतिम घडिमे किड रँजना तँ नहिये जा सकै । तद्दमे कोलेजक आथिरी पवीडा छि । अतिम पवीडा मलमे अरिंते बरिकाणतकेँ थुनी उगकननि । रँठीक म्नातक भेल पविरावक अगिना सीठि क एकठा पजेरौ जोड एत । एक पजेरौ जोडले एक सीठि क कप रँनि जागथ । तेतरेँ कि, ए की ले भेल जे सधावण पठन-निथन रौप, रँठीकेँ म्नातक रँना दूग्याँक रीट ठाँठ सेहो कवत । म्नातक तँ म्नातक होगथ । जेकवा बाज-काज चनरँक रूमि भ२ जाग छै । आव जे होड, जेहेन मल पकडि मेहनति कवत तेहेन रँगत । अगल जे कर्मक मकनग दूग्याँक संग डन से तँ अरँसमे पुति हएत । जिनगीमे सबकेँ अगल-अगल दयितर होग छै, तेकवा जे जेहेन मकनगक संग पुति करै से तेहेन रँनि ठाँठ होगथ ।

कोजगवा दिक सुकज उठि क२ एक रँस डुगव भेना, कवीरँ आठ रँजेत । दीपक लेनरेँ म्पेथिनसँ गामपव पहुँचन । जलिना दीपकक मलमे तेन-रौतीक जोगाडक रिचाव मडि गत तलिना बरिकाणतोक मलमे ओम तेन-रौतीक चिड चकलेव जेत बहत । दीपककेँ देखिते बरिकाणत रँजना-

“रौड, ताले रौत मलमे घुवि-हवि बहन अछि रँहूत दिस जीरह ।”

उगा पिताक अमिबरादसँ दीपकक मलमे मिसिओ भवि हनचन ले उठन, कावशो म्पयष्टे अछि । शेरँदराण अकाम मात्रसँ जोडन जा सकै द्वाद कर्मणा तँ धवती पकडि चनत । पएव डुध्री प्रणाम कवरँ तँ रीना म्पुर्षि भेल नहिये भ२ सकत । उगा दूनु हाथ जोडि शेरँदराणो चलेत अछि द्वाद ओ अगला सीमासे । पिता-पुत्रक रीटक जे सीमा होग छै ओ रीना म्पुर्षि भेल जँ हएत तँ हाथक आँगवक अघिकावक लमन हएत । आँगवोक अगल कर्मभूमि छै जे वणभूमिसँ वगभूमि धवि पहुँचरेत अछि ।

नग अरिंते दीपक पिता-बरिकाणतकेँ गोड नागि, राजन-

“रौव, काहि चलि जाएरँ । पाँचे दिस फावम भलेक रौकी अछि म्पे... ?”







मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“बौरुजी, किछु आला-आल लेखकक पोथी पबीढामे देखरि जकबी रूमि पढ़ैए, पोथी तँ अलको लेखकक अलको छै द्वादा जे चनमिमे अछि तेकरा देखि जेरै तँ जकबीए अछि किल, तँए किछु नर पोथी कीनरै अछि।”

दीपकक रात बरिकाण्ठ रूमि गेला। द्वादा कमा पागर्वनाकेँ अधिक पागक खटिना काज गकगव भाग्य जाग छै, जे बरिकाण्ठकेँ भेलनि। द्वादा रिचारोक तँ अपन मद्दद छै जगमे बग-बगक हिनकोव उठते बह छै। मसमे दोसब रिचाव उठि गेलनि। उठि गेलनि जे जे अखनि ओकरे गमाव रूमते जे भाग पढ़ै छी आकि रंथुआ। अपन काज एतरेँ भेल जे जे खटि कहत से देरै। कियो ब्यायाम आकि मलाबजक ब्रियामकेँ जेरिके रूमि लेत तेकर हम की कवरै। मसम होगत बरिकाण्ठ रंजना-

“रौआ, फुष्ठा-फुष्ठा कइ सब काजक खटि रूमि दैह, तग हिसारसँ पागक ओरिवाण कइ देरैह। जे ले जे माँगन-तोपन तहुँ राजह आ हम्हूँ दिख। तगसँ काजमे रेरिवाण हेतह। घटी-रंठरी भइ जेतह। आगुसँ जे काज कवरैह ओ रंठरी जेतह आ पछिना छुष्टि जेतह। जगसँ काजमे खटि ओतह। काजेक खटि जिनगीकेँ खंटाह रंनरैह।”

पिताक प्रेम सुनि दीपक असमझसमे पढ़ि गेल जे बापन-जोखन काज अछि ओकरा तँ स्पष्ट राजि सके छी द्वादा रिय नगना-जोखन काज तँ अछि। तखनि ? तखनि की, दु श्रेणीक काज रंन रंजना-

“कोलेजमे तीस हजाव नगत, मल्लिक खटि रूमिमे अछि तखनि नर पोथी लेन अन्दाजेसँ काज चना जेरै।”

दीपकक रात बरिकाण्ठकेँ जँचननि। रंजना-

“छह-सात हजावसँ काज चनि जेरै चाली ?”

उत्साहित होगत दीपक रंजना-

“जँ कनी-मनी घंठरै कवत तँ मोर्रागनसँ कहि देरै अछि एष्टी.एस.मे पठा देरै।”

सोम-साम बस्ता देखि बरिकाण्ठक मसमे काजक अँकाव तँ भइ गेलनि द्वादा हाथमे केते अछि आ केते ओरिवाण कवए पढ़त से अँकाव नगरैक रिचाव उठननि।

मल-मल बरिकाण्ठ खटिक अँकाव नगरिते बहनि आकि पनी-चन्द्रारती आरि मंठकि रंजनी-

“बस्ता-पेवाक थाकन-ठहियान रंछा आएन अछि पहिल किछु दूहमे कनसँ दैत तँ अपन बमा-कठोना सुनरैह नगनि। रातो केतो पढ़ एन जाग छेले जे पहिल मसम पमावि दैनि।”

चन्द्रारतीक रिचावक मोड़ कनी आगु बहनि तेरीच दीपक निहुरि कइ पएव छुपि गोड़ नगनकनि। पछिना रातकेँ ब्रेकलेन सागकिन जकाँ एकएक बोकि, अमिबरादक प्रदुखता रूमते रंजनी-

“अखनि हाथी मस दूनु पवानी जेरिते छी।”

साएक रात जहिला दीपककेँ उत्साह भवनक तहिला बरिकाण्ठक उत्साहकेँ दरनक। दरनक जे जे जग काजसँ दीपक आशि रंनरि आएन अछि ओकरा आगु केना जेरित बाखन जाए ओ रिया रूमले केना हएत ? रूमन बहत तखनि ले अखलसँ नगि ओकरा पवरैक पवियाम कवरै आकि गुमे-गुम बहि, जेरै कान रंजना जे एते पागक काज अछि। कोलो कि अपना हाथमे कागतक कपेआ छुपैक



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मशीन अछि जे रैठम दारि देरै आ हवहरा क२ खसत । अगला हाथक तँ ओहण मशीन अछि जे काज कगमे जनम न२ समेक मंग चलैत समाप्तमाव दैत । द्वादा अ तँ भेन रूमिहाव जेन, कम रूमिहाव आकि ले रूमिहाव जेन तँ दोसव उगए अछि । रैठो सोमनामे जँ ओ रैजनी तँ उचिते रैजनी, अगल अघिकावक प्रयोग केनी । अगल अघिकाव अ जे जन्मेसँ रैछाक खेरो-पीरोक माले पेट-भरेक भाव हुनके उंगव देननि, जगसँ तुख अरै-जागक रैठ रूमे छथि । ठीके कहननि जे द्वाजयवपुवसँ अरैमे चाबि-पाँट घँठाक मगल नगले हेते, तद्दमे दृष्टिक ओवियाषक आदति नगले छननि । आदति अ जे भागसक रैव उगहन जागए घबमे नुन ले अछि आ अहाँ अगला तानमे रैतान छी । खेव जे होउ, द्वादा अ रात दारिओ क२ बाखरँ परिवार जेन नीक नहियेँ भेन । रैजना-

“दीपक केतए आएन, किए आएन से जँ अरिते ले पुछि जेतियँ, तखनि समेपव ओकव ओवियाष केना हेत ? ”

पतिक रात सुनि चन्द्रारती ठमकनी । मल पडननि पारमिक उगाम । दीपककेँ खागमे कनी अरैव भेन हेते, द्वादा अगला तँ पारमिक ब्रत भवि-भवि दिन सहि क२ कयिते छी । कहाँ पवाष छुटि जागए । तद्दमे की दीपकक बस्ता-रैठक दोकान-दोरी आकि गलाव-कन रँग भ२ गेन छेले । बस्ता-रैठमे तँ लोककेँ अगल आशिषव ले चने पड छै । कियो जे केतो जागए तैठाम जँ मंगरै बहन तँ तेकव आशि भेन जँ मेहो ले बहन तँ अगल आशि कवि क२ ले चने पड छै । एना द्वाह मारि रैठो आगु रोजरँ नीक ले भेन ।

चन्द्रारतीक मलक गनानि बरिकाणत रूमि गेना । रूमि एना गेना जे द्वाहक ठोव सिफुडए नगननि । द्वादा रैठो सोमनामे किछ अणजान राजरो उचित ले रूमि, रात रैदलेत रैजना-

“पाँट हजाव कपेखा जे बथेले देल बरौ, से तँ हेरै कवत किल ? रैछाकेँ हजाव-पाण मए आगव कवि क२ ले देरै तँ आणठाम केकव द्वाह ताकत ? ”

कपेखाक हिसारँ सुनि चन्द्रारती सकपकेनी । अखनि धवि जे खर्च पतिकेँ कहि देनथि, बरिकाणत घबक खर्च रूमि थैक-दान ले करै देनथि द्वादा आग । रैठोक पठक ओवियाष कवरँ अछि, जहिला पाग-पागक खर्च हएत तहिला ले पाग-पागक ओवियाषा कवरँ अछि । रैजनी-

“एक हजाव तँ खर्च भ२ गेन ? ”

पलोक खर्च सुनि बरिकाणत ठमकि गेना । मलमे उठननि जे जहिये माहणरनी-पिहणक (आसीषक पहिन पख) चठन तनी दिन रैजावसँ महिला दिनक मभ खर्चक ओवियाष कगए देल छेनियनि, तखनि खर्च केतए क२ जेननि । पटाम कपेखा फुँटा क२ दसमी मेना देखेले देलौ बहियनि । तखनि ? रैजना-

“कथीमे खर्च भ२ गेन ? ”

उमोहित होगत चन्द्रारती रैजनी-

“दुर्गा-पुजाक नरनीए दिनक मेनामे एक हजाव उठि गेन । ”

पलोक रात सुनि बरिकाणत रैजना-

“अखनि छुटि पारमिकेँ रीमो दिनसँ उंगले अछि तखनि एते अणवराव किए कनि जेरो ? अछ्छा अ कद्द जे की मभ कीणरो ? ”

चन्द्रारती-

“चारिठो कोनियाँ, सुण, डगरी, छिष्टा, कुव, हाथी गत्यादि ले कनि जेरो । ”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मल-मल बरिकाण्त हिमर जोडा अँठकारि जेननि, द्वाद अलको प्रम एक संग उँठि गेननि ।  
सोमनामे रँष्टी-दीपकके देखि रौजरँ उँटित बुँमननि । रँजना-

“एक उँ कौनियाँक काज सुपेसँ होग छै तद्दमे एकठाकेँ माषलो जा सकैए, एँ जूगमे माँष्टक हाथीक कोष काज छै आँ आँरँ केतए येनक काज चलेए जे अलवे पागकेँ पाषिमे फेकि देनिधँ ? ”

पाषिमे फेकरँ सुनि चन्द्रारती उँमकि रँजनी-

“पुबख-पाव अलिा पारनिक रसतुकेँ दुँ छै ! ”

पनीक राँत सुनि रँसी तामर कवरँ उँटित लेँ बुँमि बरिकाण्त मल-मल रिटावए नगना जे काजो तेहेन अछि जे जोडरँ रँरँकुषी हएत द्वाद जँ अलिा योका पारि होगत बहन तखनि जिनगीक गाड़ि केना समवत ? नगले दोसब प्रम मलकेँ येरि क२ पकडाँ जेनकनि । येरि क२ & पकडनकनि जे एक परिवार एक पुबख-नारीक रीच ठाँठ अछि तेरीच दुँ वंगक रिटाव किए चलि बहन अछि । द्वाद जे धावा चलि बहन अछि ओहो उँ रँवखा पाषिक धावा लेँ, सुखायी धावक धावा जकाँ अछि । मल ठमकि गेननि । तीनु गोष्टे दीपक, चन्द्रारती आँ बरिकाण्त तीनु तीष दिस तकेत, द्वाद द्दहक रौन सरँहक हवाएन । बरिकाण्तक मल उँगागत जे, जे काज मानतनी छी अदोसँ होगत आँएन अछि ओ काज जिनगीक गाड़ि केँ बोकि देत, & केहेन भेन ? जिनगी चनरँक काज जिनगीए बोकि देत तखनि आँगु द्दहेँ गाड़ि समवत केना ? नगले आँगुमे ठाँठ दीपकपब नजरि पहुँचते मलमे उँठननि, कालिए भवि समए अछि तेरीच दोसब काजमे समए गमाएरँ उँटित लेँ । जिनगीक रँहूत सैघ काजक पबीछा छी । कालि दिस रँष्टीक द्दहेँ सुनरँ केते गनामिक राँत हएत जे कहत पठँक खट पिताजी लेँ जूमा सकना उँए आँगु रँठँमे रँधा भेन । ओना जेकब पिता सयैसँ पहिल मरि जाग छुषि, ओ केना पठँ पौत । द्वाद सेहो उँ बहियेँ अछि । जिँरँठ राँहि पठँनहार उँ पठँए लेत अछि । खेब जे होड, जेठाम एहेन पविमथिति रँलेए तेठामक प्रम & भेन । एँठाम उँ से लेँ अछि । अण मलक अतिनाया अछि जे रँष्टीकेँ सहातक रँषा दुँनियाँक रीच ठाँठ करी । मघष रँषमे हवाएन जकाँ माँगक द्दह देखि दीपक रँजना-

“रौरँजी, आँग जेते खटिक पारनि भ२ गेन अछि, ओहेन खटिक पारनि पुँरँज केना रँलोननि जे परिवार-जाक उँग होगत बहेए । ”

दीपकक प्रमक गँतीवता बरिकाण्तक मलकेँ ओहिना घकेलि देनकनि जलिा कियो घावक महावपब सँ रँहत रीच धावमे कुदि हेनि क२ उँपब आँरँए छहिए । द्वाद अण पुबतब भाव देखि बरिकाण्त रँजना-

“रौआ, तोहब प्रम ओहेन छह जेहेन मलख आँ मलखक भाषन कागतक छि हूँ । अदोसँ बहन जे आँजूक त्रैमक फन आँजूक जिनगीक समए छी । उँए किछु रँटा क२ कालि जेन बाखरँ अघुटित भेन, एहेनठाम पारनि-तिहार केना हएत ? द्वाद... । ”

रिसुधित होगत पितारँ देखि दीपक रँजना-

“द्वाद की ? ”

एक दिस काज दोसब दिस अवाय फूसीक रीच जलिा कियो ठहँखा जागत तलिा बरिकाण्त ठहँखा गेना । रँष्टीक जिँरँसा भवन प्रम सुँराती नखक अमृत बुँन जकाँ भ२ गेननि, जेठामँ एक दिस योती रँलेत उँ दोसब दिस रिय सेहो रँलेत अछि । ओना केकबो प्रमक उँतब पारि जे सतोख होग छै ओ रएह उँतब नदनासँ कम होग छै, उँए दीपककेँ बुँमा देरँ बरिकाण्त जकबी बुँमथि उँ दोसब



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

दिस जिणगीक एक सीढ़ी ठपेक काज देखथि । दूनुमे सँ कोला जोड़रैरना ले । कावण, जँ समेपव पागक उरियाण ले हएत, हावस ले भवाएत तँ पवीड़ा केना देत ? तद्दुमे अगना हाथमे पाग कम अछि कोला रँयोत कवए पड़त । अगना हाथक काजक ठेकाले केते । दूदा दीपको तँ पवीड़ामे रँसैरना रियाथी छी, अथनि जेते ओकवा रँवारवीकेँ भवन जेते, तेते ले पवीड़ामे अमाण हेते । तान-मेन रँसैरैत बरिकाणत रँजना-

“रौआ, किमाणी जिणगीमे किमाणसँ न२ क२ काज केनिहाव धरि अगहनमे धाण घब अलेए । चाहे खेतक उंपजा होग आकि रौाण आकि आरौ-आरौ उंपए, जेना-जेना अगहन पढाति समए आगु रँठ-ए तेना-तेना खट होगत जाग छे । घटरी होग छे । भदरौबिमे जे भदग-धाण आकि मकखा होग छे ओकवा पारनि-तिहावमे अगहन माणन जाग छे । दसव दिस आसीणक पनवह दिस खएण-पीअनि होग छे आ अगना पनवह दिस दुर्गापूजासँ कोजगवा धरि होग छे । तहिला कोजगवा प्रात जे कातिक चढ़-ए, ओकवा धर्माम मनि अलको तीर्थ-ब्रत आ पारनि-तिहाव होग छे । एहेन स्थितिमे की कएन जाए । दूदा अथनि रँसी कहक समए ले अछि । केकरो हाथे रँछा रँटि पहिल तोहव काज आगु रँठ । देरह पढाति कहियो निचेसँ आगुक रँत कहरह ।”

पतिक रँत सुनिते चन्द्रारतीकेँ जेना कोजगवाक पुलाटान आ दीपककेँ दिरानीक ज्योति जणि गेननि । fff

२२ दिसम्बर २०१३

## छेकका मगड १

आल दिस जकाँ लिसुबका चह पीअले शिरशिकव, क्लिबुनदेर, मिहेसुव, बाधाकात्त आ मलाहव एकरेव चहक दोकानपव पहुँचना। पाँचके जेहल गिनास चह दोकानक तेहल गिनास रात-रिटावक आ तेहल जिनगीक काजोक। उना पाँचो पाँच ठेनक, पाँच ज्ञातिक दूदा चहक दोकानक एकर निअम रँलोल जे अगल-अगल चहक खबटे अगला पीर आ समाजोकेँ सिखाएँ। भोज हेते। हिमारो सोमवधले, पाँचो गोठे छह-छह दिक भोजक खर्चाक हिमा तीस गिनास चहक दम एकरास जमा करैत बहथि। जगसँ तीसो गिनासक दाममे अगला तीसो दिस पीरैत आ चाक सगोठकेँ पीअरैत। ए रीचमे एकठाँ शिका ले कवर जे के कहिया पीअनसि। रँली-खतरना दोकानदाव पाहि नगा क२ नाम रँजेत जे आंग फल्लोक भोज छिनसि। उना चहक दोकान रँजावक ले गामक टोक पवहक। रँजावक दोकानमे निरिफ कारोबारक गप-सगप चलेत दूदा गामक टोक अन्तर्बाध्यस्थीय होगत। जेठाम सए० वंगक गप चलेत। केतो टिनमक टोखड़ १ तँ केतो ताड़ १-दाकक, केतो खेती-पखावीक तँ केतो शाम्ल-प्रवाणक। केतो पार्जियामेठ तँ केतो हगिरवमिष्टीक।

तीन दिससँ गुजेलिया दूनु पवाणी सोसे गाम केतो रँव भौड़ १ द२ देनक। भौड़ १क दगक कावा बहे जे शुकहेक जेरुआ नगनमे गुजेलिया करुतवीकेँ मोनासँ पष्टिया क२ रिखाह क२ देनक। फुमावि कन्या करुतवी ले बुमि सकनी जे दोती रँव गुजेली अछि। दूदा जखनि करुतवी सासुव आएन तँ सासुक जगह सौतीनक गावजगीमे हँसि गेन। जहिया पड़री नर-प्रवाण खोप ले टिनसि चहलेमे लोभा ज्ञाए तहिया। सौतीनक गावजगी करुतवीकेँ पमिस ए दूखाले ले होग जे जखनि एके घबरनाक दूनु घबरानी छिँ तखनि ओकव हुकम किए मागरै। जहिया ओकव घब छिँ तहिया ले हमरो छी आ जँ अगल गीक दूखाले हमसँ काज करा निअए तखनि अगला की बहत।

गुजेलिया अगल पसत बहए। होग जे कहूना साँपो मरि जाए आ नागीओ ल छुँए। मगड १ फुर्डा छी ज्ञाए आ दूनु घबरानीसँ गिनालो बहि ज्ञाए। मल-मल मोचए जे रँग-साएक रिखाह केनल पहिलका घबरानी छी, जँ कोला तवहक दुख हेते आ रेदारी कनगत तँ पड़ि जाएत। हो-न-हो हाथे-पएव ब्रह्म भ२ ज्ञाए तखनि की योग-योग चरै। तँ रिखाली घबरानीक डव होग दूदा दोसवसँ ए दूखाले डवागत बहए जे, घटकेतीकान घबरानी नग रँजि गेन बहए जे रिखाह-तिखाह ले भेन अछि। बस्ते-बस्ते करुतवीओ भाँज नगा लल बहए जे अगलामे एकठाँ म्लीगण छै। दूदा ३ भाँज ले पागि सकन जे सासु हएत आकि सौतीन।

गामक लोक दूनुक रातो सुनि निअए आ अगठांगओ दिअए। अगठरैक कावा बहे जे सत बुनेत जे सँ-रँहक मगड १ किए होग छै। उना गुजेलिओ आ करुतवीओमे सँ कियो पाछु हँजेते तैयारो ले। मवदे जकाँ गुजेलिओ लोक नग रँजे आ महिले जकाँ करुतवीओ।

तीन दिस गामक भौड़ १ केना पञ्जाति चहक दोकानपव गुजेलिया पहुँचना। गुजेलियाकेँ देखिते चहरना रँजन-

“अखनि गाममे केकरो चनती छै तँ ओ गुजेली भायकेँ अछि।”

रँगचपव रँसन शिरशिकव ठेनक-

“की चनती गुजेली भायकेँ छहिले ले ?”

दूह-रँगलेत दोकानदाव रँजन-

“अले री, चनती ! तेहल गुजेली भाय छथि जे महाभावतक तीरो छोड़ छथि आ मेना-पौडकी मारैरना गुलीओ।”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

चाहक दौकाषणव रैसन सब दौकाषणदावक रौत अकालैत दूदा अर्पे ल किशको भेठैनि । कियो किछु तँ कियो किछु ।

तही रौच करूतवी पहुँचन । गुलैतियाक रीना बोच वखल रौजनि-

“अ मवदरौकेँ प्रुछियौ जे अपुषाकेँ फुमार कहि किए रिखाहि अषनक ।”

सब छुप । छुपौ केना लै बहता । जखल दूद-दूदानह सोसहामे सरान-जराव कवत तँ पणटेतीउ अणल क२ जेत तगले पंचक कोष काज छै । पणैक प्रमक उँतव दैत गुलैतिया रौजन-

“अ सुठ केना भेल । जैठाम तीस-तीस, चागीस-चागीसठा लोक रिखाह करैए तैठाम तँ हम दूअष्टी केनौ, तगले एकवा नछी किए छै । कालो कि हमरीष्टी अपुषाकेँ फुमार कहनिअ आकि सब कहल हेते ?” fff

२४ दिसम्बर २०१३

## अपसोच

जिनगीक अंतिम सीढ़ीपर पहुँचला पढाति जखनि पाछु उभरि तके छी तँ वंग-रिबंगक काजक संग अपनार्के देखै छी । नीको आ खुरि नीको आ अधला आ खुरि अधला । तखनि कहै जे हँसितो ओतरे हएरि जेते कालेत हएरि । दूदा अपन पनटेती जँ अपन ले कवरि तँ दुनियाँमे केकवा एते फुवसति छै जे एहेन घोब-मछा पासिके लेवाँत । पनटेती केजो, मन माहित पंटेती केजो, पढिना सब सम-गम भए रीवरिबीपर मासि केजो । तँए सिमिओ तबि सोग-पीड । पढिना ले अछि । दूदा कशी खोच बहि गेन तैपर रिटाव करै छी । कहै जे जखनि सब कागध केजो तखनि खोच कशी किए बहि गेन । जहिना किछु फनक खोचटा फले संग ज़ीरन-मवण रितरैए, दूदा किछु फन तँ ओहला अछि जेकवा छीनि कए आकि मोहि कए कात करि देन जाग छै । हमर से ले अछि, जहिना देहमे नमहर या बहल कियो ओकर गमाज कवत आकि कछरी-तड़तीक खोचक दरौंग कवत । या तँ रँडके याक दरौंगसँ छुष्टि जाएत आ अपन किछु दिन पहुँचाग कए चलि जाएत ।

खोच ङ अछि जे नीको केनहा अधला भए गेन । खानी जँ अपनछा नीक रूमितो आ दुनियाँक लोक अधला रूमितए तैयो अपन गनती मासि केतो, सेहो ले भेन । अपनसँ रैसी देसब-तेसब नीक रूमितए । सचरूच जिनगीमे सएउसँ ङुंगव नडका-नडा किक रैराहिक समरूप सथापित केजो । नीक रूमि केजो, अखला रूमि छी दूदा तखनि भाले-भोव दुनावपुवराणी किए गछी योनि ? ङ तँ गुण अछि जे लोक सोमहोमे अधला करैत बहै, देखैत बहै छी, दूदा जँ रिया-पुता जानि ले रँजे छी तँ ङुहो सब रँडहाएन शरीर देखि रियदेखिहाले रूमि । ओग तँए अपनो हेदे-हेदा अछि । अखले मोगियाही गणो आ काजोसँ छैन बहै छी ।

दुनावपुवराणीक गछी यरैक कावण की ?

दुनावपुवराणीक पिता संगे लोकरी करै छना । लेटावा सात्रिक लोक । भनमसाहतक चलेत दु-टाबि दिनक दवगाहा रीडीउसँ कठरी नग छना । हुनका सन पछरिस-तीस गोष्टे जे पाँच दिनक दवगाहा कठरागओ कए अपनो भनमसाहतके ले छोडनि । कहियो रीडीओ सहिरि नग अपन सहाग ले देनखि । एक मदक खर्च रीडीओ सहिरैके चले छेननि ।

रँगए-राफि, रौनी-टानी दुनावपुवराणी-महेन्द्ररौरुके एहेन जे कियो अपन उंगस्यति हुनका डायरीमे लाष्ट कवरैए चहित । उंगकवि कए कहनिगि-

“ताय सहिरि, अहाँ रैष्टीक रिखाह ओहना (रिय जेन-देनक) कवा देरि ।”

अपन उंगकाव सरीकारैत महेन्द्ररौरु कहना-

“जखनि मखथ रँनि धवतीपर जन्म केजो तखनि जँ किछु सेरा ले केजो तँ जिनगीए की ।”

एक तँ अहूना समाजमे कथा-कथुमैती जोडमे नीक नछैए आ कन्यादानसँ जुडन दूख अफिया जँ करै छी तँ की कन्यादानक सुफलक भागी हम ले भेजो । जकर भेजो । दूदा हेब गार्ड किए ? सेहो तँ अपन रिटाव पडत । भेन ङ जे गामेक एकठी छोड केँ राप-माए मवि गेले । मैष्टीक पास कए लेल बहए । अखनका हरा तँ उठन ले छेले जे पहिल लोकरी पाछु रिखाह । रिखाहो पढाति केते गोष्टे पढरो केननि आ लोकरीओ केननि । ओग छोड केँ रिखाह कवा कहनि-

“सब दिनी लोकरी कव जगध, तँ चलि जे । कसेरली तखनि ल परिवार रँगते ।”

रात मासि गेन चलि गेन दिनी । रँगलाव, चेरैंग तँ छी ले जे अण्डेड भनमिया छत । एकठी कोठीमे भनमियाक काज देनक । माजे तबिमे फुलि कए माँकना हाथी जकाँ भए गेन ।





मनुषीभि संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

घबरावानी जेन रेडियो, कैमरा, बंग-बंगक गहना, साड़ ी लाल आएन । आरि क२ करौ केनक । जे  
बैलैया अगल घबरावानी घब एले आ अगल सीबाअगुक भलमिया दिन्नीमे बैनि गेल । गामे आँरैं जोडा  
देनक । जहिया कोला कताके भगलैं दुखारे लोक कावा रैन क२ दग दै तहिया दूनावखवरावानीके  
खबरो-पानि रैन क२ देनक । से की कोला अगला रिटाले केनक आकि महिरक रिटाले । रोटावी  
दूनावखवरावानीक पिता जिरित ले डुबहि जे आरि उपवाग देता । हुदा हमाँ उँ दोखी भेरै केनिं जे  
एकठा नीक परिवारक कर्नाके गुँ-खतामे रोडा देनिं । fff

२३ दिसम्बर २०१३

## पतनाड

पर्वणपव पञ्च बायोराँराकेँ आँथि झुगाँगेत ताडक छोटका पंथा हाथसँ निट्टाँ खसनि । पंथा खसिते पसेनाक ठँयावसँ कोठ्ठा याएन नीन अकचका क२ टूँटि गेननि । रँल आँथिद दहिला हाथसँ सिक्काक रँगनमे पंथा हँथोडए नगना झुदा निट्टाँ खसनि पंथा ले अँभवनि । आँथि थोनि सिक्कापव सिव सेरिया पञ्जवाक मसलनक रीच देह सेरियारैत झुड १ उँठा निट्टाँ देखेक कोशिसे केननि । टीनीपञ्जा मण पेष्ट, फीनपाँर पएव, सञ्ज साँप जकाँ दूनु रौँहिक गड नगरिते रँजना-

“की समए छन, की भ२ गेन आ की हएत तेकव कोला ठँकाष ले ।”

मडि याएन पतिक राँत सुनि, रँगनक टोकीपव पञ्च सुनिवाँ रिखनि लौँकेत रँजनी-

“सभ कर्मक फल छी । जेहल पिसरँ तेहल ले उँठाएरँ ।”

कहि हाँग-हाँग रिखनि लौँके नगनी । टाबि-पाँट हाथ हँठन टोकी तँ बायोराँराकेँ हरा ले नगनि । झुदा पनीक रौँन जेना ओन मण करँकराँ क२ नगि गेन होबहि, तहिला मणमे भेननि । हावन नरुँआ जहिला अणन कनाकेँ हारैत देखि जिनगीक हाव करुँन कवए नहोत अँछि तहिला मडँत जिनगी देखि बायोराँरा सेहो हाबि मालेक फ्रामे फ्रामि गतिये फ्रामे-फ्रामे मडि बहन छना । जरीरित दुनियाँक प्रेमी पति-पनी छी । ओना रिगत दम रँथसँ सुनिवाँ पतिकेँ मूँठरुव मणि बहन छेनी, झुदा पति-पनीक रीचक समरँण सुत्र जँ ओल हूँअ जे पतिक हाथमे पनीक छोव पकड १ देन जए आ पनीकेँ रिना छोवक जिनगी रँना देन जए तँ की ओ पनी पतिक रँवारँवी क२ सकत ? नीच कर्म केनिहार पकथकेँ उँपव बधि सकत ? झुदा... ? एहेन सथितिये सुनिवाँ, तँ झुद मडि तँ ले रँजि परो छेनी तेयो उँटित बुँमि नगनी नगा तँ कहरँ करै छेनथि । पनीक राँत सुनि पर्वणक निट्टाँ खसनि पंथा उँठा बायोराँरा हाँग-हाँग झुदपव पंथा लौँके नगना । पसीनासँ तीजन देह हराक सिहकी परिते मण सिहकि कनशनि । जितनासा करैत रँजना-

“से की ? से की ?”

पतिक जितनासु प्रम सुनिते सुनिवाँक मणमे उँठनि की जिनगी छन आ आँग की भ२ गेन । जहिला पुँवाष देह अणन भेननि तहिला ले हमारो भेन । तथनि तँ हननुक-हननुक देह अँछि, आँसकति ले नहोए, झुदा जे जीता जिनगी अणला फुँहवाम भ२ उँटि-रँस ले सकैए तँ के केकवा देखत । रँथी-पुँतोहूँ सहजे सात मागव दुव चनि गेन, ओकव कोष आँशि, तथनि ? झुदा उँगाँअ की ? नीक आँकि अंधना पति तँ एह छथि, हिनके आँशि ले कवए पडत । ओना तीत-गीठ राँत सभ दिससँ होगत आँएन, होगत बहत । नगले मण पाडु घुँसक गेननि । दम रँवथ पहिल की वोरँ छेननि, की बुँने छेनियनि आ आँग की छनहि आ की बुँमि बहन छियनि । एँ दम रँथक रीच, जहिला गाँडक पात एका-एकी मडए नहोत अँछि तहिला बायोराँरा हारैत निट्टाँ उँतवि बहन छना । सुनिवाँ जीतेत उँपव चरँ बहन छेनी । दुनियाँक रीच ले पति-पनीक रीच । रँजनी-

“किछ ले, बुँडाँ या फुँमि ।”

पनीक मँसाएन राँत सुनि बायोराँराक मण मडमड १ क२ उँडाँ गेननि । उँडाँ क२ सृतिक ओग दुनियाँमे पहुँच गेननि जेतए गुनारक फुँन मण नगिचगव आ कोगीक रसन्ती मदमसूत भवन रौँन मण रौनी सुनिवाँमे परो छना, तेतए आँग कोखाक रौँन आ कँठक गाँड गुनार देखि बहन छथि । देखि बहन छथि रिष पतराविक जिनगीक नाह, जे पतरावि छोटि धावमे उँमि बहन अँछि । जिनगीक जानमे अणनारकेँ ओमवाँगत जानक एक-एक सूत देखि नगना । केना छोट कोठनी रँशन टाककात



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गीवहसँ गीवहएन अछि । थिटागत ज्ञान जकाँ बायोराँरीक मल थिटा क२ दस रँवथ पाछु थिटा जेनसि । टागतिक पसीना आँशुवसँ काछि सिट्टाँ ह्येकिते बहथि आकि मल डुँपव तकनकसि । यएह घब डी जगमे पान पंथा। चलेत बहे डन, डतमे गजेतक मानडा क रीच दूनु रँकती सौनक हसिअब साड तीक रीच नठपंठागत ठहले डेलो, ठहले डेलो उग रिबदारनी रणमे जेठाम मन्द-मन्द हरा अणष मन्तीमे नटेत, प्वमकाव देन नतीकी जकाँ देहमे नठपंठा गदगदरँ डन, केतए जेन ! लोक कहैत धन देल धन रँठरँ करै छै, दूदा से कहाँ भेन, उगष्टि केना जेन ! जिनगीक घठन घठना आष ले रूमनक तँ ले रूमनक, कोष जकवी छै अणका रूमरँ, अणसँ उगाले ले तँ अणका की देखैत, दूदा अणष तँ अणष डन, से के रूमत, दूदा अणला कहाँ रूमजो । मल एकमात्र रँषेणव पडनसि । ओकब कोष आशी, दूदा ओकरो पनती कहाँ देखै छिई, रँठरँत मय, रँठरँत पविराव आ रँठरँत पीठतीक तँ उटिते हक रँले छै किल जे पडिनासँ रँनी सुख-तोगक जिनगी जरीए । जेठाम अणल लोकव-टाकव, जल-रौनितवक रंग वीन्या2 सँ घेवन बहे डेलो तैठाम जँ उ (रँषेण) अणष मयति उठा रिदमे ज्ञा कावथाणा रँना लोकव-टाकवक रीचक जिनगी रँना जेनक तँ उटिते केनक किल । आणु घूमकेत मलमे महाजनी एनसि । रँवा न२ न२ लोकक ठरँहि नगन बहे डन, रँखारीसँ धाष निकारि लोकव तौन कहे डन आ अणल जँहा जकाँ निथे डेलो । चाहे तीष सेवकेँ तीष पसेवी निथो आकि तीष पसेवीकेँ तीष मल । दूदा ज्ञाने तँ त२ सकेँ डन जे तीष मलकेँ तीष पसेवी आ तीष पसेवीकेँ तीष सेव निथ सकेँ डेलो से कहाँ निथागत डन । केना निथागत ? अणष जँहा अणल डेलो किल, जँ शिवारी, जूखावी अणका रँहू-रँषेणकेँ ले पविया अणलकेँ पवियौत तँ ओकब रँदचनसि केते दिस चनते । यएह पाय डी, तीष मलक उगजा साठर चाबि मल दग डन । तैपव थेतक उगजाक रंग रूमियारीक मल जेन-देनक रँगमाणीरँना आमदनी सेहो डन । केतरौ लोकव-टाकव जल-रौनितवकेँ दग छेजिई तैयो कहाँ घटे डन, सत िकडु चमके डन । अणषा पविरावमे कहिया माड-मानु तदुमे मिथिनटनक ननदूहाँ बोद्ध आ खसुकी कनेजी आकि दुधे-दही-डानहीक अभाब बहन । तौजो रँरँकेँ दुध-पकमाएन गौरिया केवा, दूगका-किशिमि, मिमवी तँ चटरिते बहलिसि, तथसि किए आग सत रँषेण त२ जेना । की सुकजे तगराण गाडमे रूमिया हसिअब-हसिअब डारि-पात, फड-फुनक रंग देरौ करै डथिष आ मय आनि सतठारकेँ साडि यो दग डथिष । कँठमे सुखोषक आभास भेनसि । पाषिक हय्या भेनसि । तेल्ले जलमावा रौद अछि जे यैजो-रँरँषेणक पाषि गलहोवा जेन हएत, जवन जेन ठँठ-शीतन टानी, जँ जवनपव जवन पडत तँ आरौ जड । क२ जडि या जएत । दूदा... ? अणल केना नगक रँरँषेण जोडि कनपव आष जएरँ । से ले तँ पणोकेँ कहिसि जे पियाम नागन अछि । दूदा नगमे मलमे एनसि जे जँ कही, जेना चाह पीरँ कान पियाम लल आरँए कहे डथि तल्लिा कहि दथि जे रँरँषेणमे अछि, न२ क२ पीरँ निथ, तथसि ? पनगपव रँसन बायोराँरी ले पाषि पीरँ उठि बहना अछि आ ले पणोकेँ कहि बहन डथि दूदा नजबि पणोएक टोकीपव नाटि बहन डथि । दूमियाँक रँषेणसँ हाथ पकडि सिबजणक दूमियाँ रँसलेक रचन देल डथिसि, रोग-रियाषिक रीच सहयोगीक रंग पुरैक रादा केल डथिसि जेकव रँदना डुहो अणष दिस-वातिक जिनगी समरपित केल डथि, तैठाम जल्लिा अणष तल्लिा ले हूकरो तुख-पियामक रंग मल-मलावथ सेहो डथि । से केते धवि पवा बहलिसि अछि ? हएव मल ठमकनसि । ठमकनसि जे पकथ हूअ आकि षावी, दूनु शक्ति मयल होगते अछि तँ उ गठरौ नीक ले । उगठजो ले ज्ञा सकेँ दूदा रोग-रियाषि, तुख-पियाम तँ शक्तिकेँ हिना-हिना दोसवाक सहयोगक

1 धडैनमे कपडाक नमहर हवा पसावैबला

2 खौदका, कर्ज लेनिहार



अपेक्षा करागए दग छै । तहीने ल मंगीक प्रयोजन होग छै । अथनि तँ कियो आन ले अछि, अपन दू लैकती छी, दुनियाँक मंग लोककें छन-अपट कब पडै छै, दुनियेँ छन-अपटक छी । अपन लेन तँ एह ल गीक जे जेहेन रेरहाव कबत, समरंण रैलीत तेकवा मंग तेहल रेरहाव कबी । जँ से ले कबर तँ दुनियाँक केतो अदि-अत छै जे जडा पकडा ठाठ हएव । एहला लोक तँ छथि जे सत्तकेँ सकन तीव रैना नदीमे तेव बहना अछि आ शेरद राष जोडत बहना अछि, दूदा तँए कि सुठ छी जे एहला लोक तँ अछि जे रैजेकान रेनगाम घोड । जकाँ सत्त-फुमिकेँ एके रूमि दुवपनियाँ पीरैए । ओह ! अलले मनकेँ रौअरै छी, अपन रात अपन दुबि-रूमि ले रूमि केले लोक पौन जागए । तहिला तँ अपन लेन ! मन ठामकनि । दस रैवथ पूर एह पनी छेनी जिनका अपवाजित करी मन आथि नजबि गिगिते अत्रिकाम उगोउग भ२ जाग छन आ एह आग काबकोआ मन रूमि पडा बहन छथि, आथि एना किए भेन ? लोक रैजेए ओन्ड रैठेन ओन्ड रागल आ ओन्ड रागल उतम होगए अथति पुवान पाण तहिला पुवान शिवर अपन सहयोगीक मंग घुलैत-गिलैत एक बस भ२ जागत तहिला रिटावरान पनी सृजनम पतिपानक भाव उठा छलैत, से कएँ भेन ? की अ सुठ जे प्रेमी पाँरि प्रेम प्रेमास्पदक सीमा पकडा कदमक गाढमे बाधा-प्रयण जकाँ यदूना किनहबिक गाढक डारिमे मुना मुनि रैवहामा गलैत । दूदा एहेन प्रेम भ२ कएँ पएन जे होगत ! अपन दस रैवथ पहनका जिनगी केहेन बहन जे होगत । की पघिराव छन, केते सेरा करै छेलियनि । घबक भाव भनमिया, पमिभवनी मंग जिनगीक कोला काज रौकी ले छन जगमे सहयोगी ले छेननि । दूदा आग ? आग तँ ओहिला ल ठूठ गाढ जकाँ भ२ गोन छथि जगमे एकोठा पात ले । सभ्ठा मरुड गोन । पातक-मंगरै छुठल दूड क धूमक मंग त्रौहवीओ सुथि थमि पडननि । जे सजन सजाएन गाढ ले सुखन-ठठएन ठूठ गाढ भ२ गोन छनहि । गजोतमे भनहि लोक भूत-धेत ले देखह दूदा अहबिया वाति हूअ आकि मनहनाएन गजोविया, ठूठ गाढ भूत जकाँ तँ देखिये पडत । मन घुमनि, जँ ओ -पनी- ठूठ गाढ जकाँ भ२ गनी तँ अपन की बहन । बहन खानी एक करीण्टन सतागम किजोक देह । देहपव नजबि पडा ते मनमे खुशी उपकननि । सार्ठि-सुतवि किजोरना देह जथनि करीण्टनिया रौवा पीठ आकि माथपव उठा नगए, तेराग ओगम दोरव उठरैक तागत तँ अपन देहमे अछि । दूरा जगिते बायोराँरा उठि क२ नाँपन रौनरीण उघारि जोठामे पाँरि टावि गिनसम पीरै नगना । एक गिनस पीरिते कोआ जकाँ मन कडकडनेनि । जहिला भवि दिन चरोड कएन कोआ साममे एकठाम भेना पछाति निखम रैनरैत जे, देख कालिस कियो ल अघना वृत्ति कबिहै आ ल अघना रौस खगहै । जेहेन थेमे तेहेन रूमि हेतो । गीक रात बहल एकदूहवी सभ माँरि छैत । दूदा अघवतियाक अघपेठिया रिटावो ल अघरिचविया होगत । सौमूका निखम रैदनि मशोपित निखम रैनरैत जे अदहा नीक कबिहै आ अदहा अघना खगहै । दूदा एह कोआ भोवमे ओछ निखमकेँ रैदनि निखम रैनरैत जे आग जोकव जे भेठौ से खहै आ जे मन माला से कबिहै । तहिला एक गिनस पाँरि पीना पछाति बायोराँराकेँ सेहो बिरक आगु रैठि मनकेँ कहनकनि । सुनिते निरिए केननि जे जथनि गवम चहो लोक सुआदि-सुआदि पीरिते अछि तथनि तँ हमी एकवती ठाठ मान पाँरि पीरौ तँ कोण अघना भेन । निखमन मनकेँ पाँरि चली आकि शीतन-ठठ । जन । मनमे रिटाव अरिते दोसव देरदुत अपन तबकशेँ तीव निकलि जोडनक, रौमाथ जेठमे जँ ठवन पाँरिमे सुआद होग छै तँ पुन माममे गवमे ल गीक होग छै । कि कियो गलहोव पीरैए । तर्कक मजगुती देखि बायोराँराक मन माँरि गोननि जे अ सभ सभ्ठा मन भडुवर छी जँ से ले छी तँ एक टिज सभकेँ एके वंग गीक किए ल नली छै । तर्कक रौनमे बायोराँराक नजबि पनीपव गोननि । पोटाड । दैत रैजना-

“रैड पियाम नगन छेनए ? ”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गतिक शिगाम स्वनि स्वमित्रो रँजनी-

“तँ रँजनी किय ल ? ”

एकरँजनी देखि बायोराँनी रँजनी-

“कहूना तेलो तँ अछूँ रँजनी तेलो किल । किय अलले अहाँकेँ हवाण करितो । अणन काज अणन कवी, मएह ल केलो । ”

अणन काज अणन कवी स्वनि स्वमित्रो रिटावमे धरूना नगननि । धरूना ३ नगननि जे जँ अणन काज अणन कवी तँ कियो केकरो ताव रँजनी किय ? रूदा उमेव पारि शीरोक तँ कण रँजनीते डै, तैठाम दोमराक जकवति तँ हरेँ कवत । रूदा... ? रूदा ३ जे लोकव-टाकवण जनिहावक जँ अणन रँजनी-पुतोहू दुव चलि जाए तँ तखनि रँजनी छीमे की हएत । नजबि रँजनी गेलनि । अणन जँ अणन रँजनी-पुतोहू नगमे बहेत तँ की अलि जिणगीक कण बहेत । ए अरमथामे दुहिहूकी केहेन भेल । जेते सम्पति रँजनी गामसँ चलि गेल तेते सम्पतिसँ की गाममे पोँठ लै भरिटे । तखनि ? तखनि तँ मएह ल जे छी तहीमे जरीक अछि । रँजनी-

“पैछना मत्त किछु रिमवि जाड, नीक भेल अकि अघना, जे भेल से भेल । अरँ केना जरी, तग दिस तकु । ”

पटास रँजनी पुरी बायोराँनीक रिखाह स्वमित्रो मंग भेलनि । बायोराँनीक पिता गामक जेठलेयत । रीम रीया जमीन । किमानी जिणगीक जे मत्तव होग छै तग मत्तवक जिणगी । रीमसँ कम सम्पत्ति अणन समाजमे पोँट-पाकेँ तँ कवनि रूदा महाजनी लै बहनि । पालीपट्टीक गाम । जग जमीनदावक गाम तिनका मंग देराणन्द फँस्यैती केलनि ।

गुना किछु गोठेक अहो कहँ अछि जे समतुन्य समरँण अरि नीक होग छै रूदा रिवातेक किबदानी तँ किबदानी छिगनि । ल दुष्टी मन्त्रकेँ एकवग रूह-काण रँजनी छिगनि अणन ल कनमक दुष्टी लोक एकवग कले छिगनि । जेते लोक तेते रूह अणन जेते निधिनिहाव तेते रँजनी निधारिटे । खैव जे होड, जलिा देराणन्दकेँ बाघरक समरँण जोडरँ नीक नगननि तलिा ठाँफरो प्रसादकेँ मोहनगव रूमि पडननि । जमीनदाव घराणमे रीया ३ उणमथित भेल बहनि जे दिादीक समरँण बहनि । दोसव रिमनपो लै रूमि पडननि । काका फँस्यैती तँ जातिमे हएत, तखनि तँ गोवगव-कनहगव देखि क२ कवी, से जँचननि । देराणन्दो दू पवानीक मण खूमीसँ भरि गेलनि । के ल उँगव उँठए छहए, दू पवानी देराणन्द रिटावि गेलनि जे जँ एको पाग दहेज नहियोँ जेते तैयो फँस्यैती कगए जेर । तल रँजनीकेँ लै रँजनी बहरँ, रूहदाला दगले तँ बहत । जखनि ठाँफव प्रसादक सिगाली देराणन्द रँजनीकेँ रिखाहक गण-मण उँठौननि तखनि देराणन्दो पनीक रिटावक अणन जोडि “हँ” रँजनी । गुना रिटाव भेल बहनि । सिगाली तँ सिगाली छल ठाँफव प्रसाद नग रीजन जे फँस्यैती कले जोकव अछि । फँस्यैती करे जोकव स्वनि ठाँफव प्रसादक पनी स्वनीता पडननि-

“से केना रूमनहक ? ”

जलिा गणवत्तुक मण रिद्यार्थी नितीक त२ कोला प्रमक उँतव करित तलिा सिगाली रीजन-

“प्रकथाह लोक देराणन्द छि । ”

प्रकथाह स्वनि स्वनीताक मणमे खूँ-खूँ उँठननि । खूँ-खूँ ३ जे जखनि परिवारमे प्रकथ अणन महिना काजक रीट सीमाक अछि तखनि एहेन रीत सिगाली किय कहनक । पडननि-

“से की ? ”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अपण रैठेत माण देथि सिगाली तिमिया-बुनिया नगरैत रौजम-

“एक तँ जागते देवी रीना किछ पुढल दवरैज्जापव रैसा अपण अँगण जा लोठामे गानि  
अनननि । एव धोलाँ ल बनी आकि चह-जमथे पहुँच गेल ।”

सुनीताक नजरि रैठी रीखापव बहनि तँ सिगालीक रातसँ काणमे मड पडए नगननि । रौजनी-

“अ सभ जोड़ह, काजक गण कवह ?”

काजक गण सुनि सिगाली गठ रैदनि दोसव दिन झूह रौलोक । रौजम-

“जखल फुँमैतीक गण-सगण उठैलौं आकि धाँग दइ रौजना जे निसटित जुड़रक्षण हेरै  
कवत । जाति-पाँजि कोला डीपन अछि । एकैस पुकथाक गतिहाम अछि । कहियो कियो  
गज्जति गमा कइ पाँजि ले रौलोननि । परिवारक काज डी किलकोसँ किछ रिचारेक प्रम ले  
अछि ।”

सिगालीकेँ तँसैत देथि पुनः सुनीता दोहलोननि-

“सुनित्राकेँ कोला दुख-तकनीफ तँ ल हएत । नडका केहेन अछि ?”

“मनिकाण, मएह ल कहे डेलौं, समरक्षणक प्रम अछि, समितव राँत रूमर जकवी अछि  
किल ।”

ठाकुर प्रसाद आ देराणदक रीच फुँमैती भइ गेल । फुँमैती भेना पछाति दान-दहेजक  
ठेकान ले बहननि । झूद दुष्टी प्रमथ बहनि । पहिन गामक सबकावी जमीन आ दोसव, महाजनीरना  
रौली सुमना देनकनि । जहिया नडनीक अगराा भेले डुपुव फाँडि धन-रैवथा होगत तहिया  
देराणदोकेँ भेननि । रैठेत कारौराव देथि, जन-रौनिहावक अतिविकृत तीणठी लाकरो वखननि ।  
दोसव दिन सुनित्रा जेन तीणठी लाकवणी मेहो लेहबेसँ आएन छेननि । दुनु पवानी देराणदो मवि गेना  
आ ठाकुरो प्रसाद दुनु रैकती । बहि गेना बाघर आ सुनित्रा । ओना तीणठी रैठीओ-जमाए आ रैठी-  
पुतोहू डथिन । जिनगीक चाकिस पडारणव पहुँचते बायोरौराकेँ चाक दिससँ धका नगननि । धका  
नगिते अपण देह देखननि ।

जेना जुग रैदने छै तहिया बायोरौराकेँ साँठ रैथिक अरमथामे भेननि । तीण-चावि मानक लोदी  
महाजनी था गेननि । कवतागत दुखले खेती रूँष्ट गेननि, तैपव महाजनी आ जमीनक बिराद मेहो  
समाजमे पसवि गेल । बायोरौरा डेगे-डेग पाडु झूहँ समरव नगना । समरैत-समरैत आग पचहतरि  
रैथिक अरमथामे पहुँच गेल छथि ।

जहिया गाढक फुणगीक डारिपव टिड-चूमझनी रैसा अपण जिनगीक गण करैए आ नटैत-  
गरैत-हँसैत-हँसैत-सठैत सभ मसत बहैए, तहिया तँ मयथोकेँ हेरौ चली से कल होगए । मस  
ठमकननि । किछ कान पछाति ठुफुआएन मस फुडफुडनेनि । फुडफुडना-

“जहियामँ दुनु गोठे एकठाम भेलौं, तहियामँ अहाँ कोन नजरिये देखलौं ?”

पतिक आक्षेप सुनि सुनित्रा डहकनी-

“निबनज जकाँ रैजेमे नाजो ल होगए ?”

पलीक गीवा बायोरौरा ले रूमि सकना । धडफड । कइ रौजना-

“हमव नाज अहाँक नाज ले, तथनि एना किइ रैजे डी ।”



जहिला रौन-माडमे माए-रौप अगल रँट्टाकेँ केतो ठाठ क२ अगल गाढक अट्टमे ब्रका बहै आ  
उनागत रँट्टाकेँ देखि कथला थोपड ी रँजना तँ कथला रौआ-रौआ कहि रौन-भवाम दगए, तहिला  
स्रमिवा रँजनी-

“गुडक मावि थोकडसेँ लोक रूनेए, हाथी जकाँ जे अथला नलौ डी, से केकवा केले ? ”

दरौत मल बाघोरौरौक आबो दरौ गेनमि । दरौगत मलमे एनमि हाथी जकाँ तँ ठीके खुआ-पीआ  
क२ रँषा देनमि दूदा ३ किअ ल रूमनमि जे एहला म्नि देखए पडत । प्रप्ततिकेँ अजरीर खोन छै, जँ  
गवमी मासमे ठँठ । पानिक माग रँट्टा जाग छै तँ जाडमे गलहोबक । तहिला पतमड मास होगतो  
सभ गाढमे एकेरौव थोडए पतमड । होग छै, कोला पानाक पनना पडि मडि जागए तँ कोला  
रौदक तीक्ष्ण गवमीसँ, तँ कोला रँवमातक बोग-रियासिँ । बोग रियासि अरिंते मल अगला म्नि  
रँट्टनमि । अगल जिनगी... गाढे-रिबिड जकाँ मल्लथोक पतमड होग छै, जे भेन ? लै, बोग-  
रियासिक फल डी । गाढे-रिबिडमे तँ म्योमक अतिबिकृत बोगो-रियासिसँ पतमड होगते अछि ।  
भबिसक मएह भेन ? रँजना-

“बोग-रियासि कारु केले अछि, लै तँ अगल प्पेठ जखनि कतो-रिनाग, टिडँउ-टुनदूनी पानि  
नगए तखनि हम तँ मल्लथ डी । दूगना पञ्जाति देखए एरै । ”

सामजस करौत स्रमिवा रँजनी-

“की बने-लौताडि पति-पनी भेनी आ रूठ-रूठ म्मस लै हेती । जेकवा पति माले मएह  
सोहासि । ”

पलौक प्रेम भवन रौत स्रमि बाघोरौरौ घबसँ रौहव स्रकज म्नि देखनमि । रँव ठँगि गेन डन ।  
माँमो नगिटा गेन डन । प्लः रौहवसँ घब आरि रँजना-

“रँव ठँगि गेन, चनु लौतका उरियाग कवए । ”

पतिक रौत स्रमि स्रमिवा रँजनी किड ल, मिहकि क२ मल कनमि मुड-दूडि या गेनमि । जेसा  
जरीरनक बर शक्ति सिबजित भ२ गेन होहि । सिबजिते ल जरीत शक्ति डी अमिबजितेक हवन-  
हावन-मावन भेन । fff

३ दिसम्बर २०१३

## मीसीक मज्जा

जेठ मास । मनमासक चलेत जुनक अंतिम समय कालिसँ कोठे-कचहरी रँग हएत जे अदहा जूनागमे खुजत । हागओ कोठे पठेनासँ बाँटी घुसक जाएत ।

रीस रँवथ पुवाण जिनगी पौढिना जिनगीक अंतिम केसक खेमना हएत । सेनो जँ फामष्ट ट्रेक कोठे ले खुजेत तँ दम-रीस रँवथ आबो चलेत । ओना केसक टिन्ता तँ सोभारिक छे, दूदा जहिला पौज्याम सिँठिहाव निकासक जोगाव रँगा लेत तहिला केसो नदनिहाव तँ रँगाओ लेत अछि, से छेलेहे । रँगा ३ लेत अछि जे अखनि निदना केठमे रीस-पट्टिस रँवथ नछोत अछि तखनि डुपबकामे तगसँ रेंसी नगरें कवत, तद्धमे तीन-तीनठा डुपव अछि । तँए गहो तँ कम खुशीक रात नहियेँ भेन जे सबकावी बेकडमे मृत्यु घोषित हएँ । तगमे जहन किअ नग आरँ देरँ ।

माँवनिग कोठे बहल चारि रँजे भोले मागकिनसँ मधुरँनी रिदा भेलोँ । ओना रिदाहे होग कान मन छह-पाँच कवथ नगन जे मागकिनसँ जाग आ ओतए सजा भ२ जाथ तखनि मागकिन तँ ठूठाओ जाएत । अणवा संग नगन रोटावीकेँ किअ जहन जाए देरँ, एकव कोष कसुव छे, खेव हूँ जे जँ सजे भ२ जाएत, तैयो तँ जमागत हेरें कवत, खेव घुमि क२ एरें कवरँ । हँ-निहम करैत मागकिनसँ रिदा भेलोँ । लोकका समय, कणी-कणी पुर्वाक मिहकी बहरें करै, किबिण फूँटेत-फूँटेत मधुरँनी पँहूँट गेलोँ । ओना बाँठीक प्ररिये घाव नग खेम भ२ गेन बही । बाँठी टोकपव पँहूँटते चाह-पाष केजोँ ।

तवि दिनक उममे तीन रँजेत-रँजेत रेंदया भ२ गेलोँ । एहेन रेंदया भ२ गेन बही जे निर्पँ ले क२ पारी जे जहन कयठकव होग छे आकि केठ । चारि रँजे जजमेठे भेन । केस खाबिज भेन । ओकीन दूसाकेँ भोज-भात करैत सुगमित भ२ गेन । अणहबिया पथ गाम जागमे दू घँठी नगत, एक तँ अणहार दोसव गर्मी-उम, तैपव मागकिन चनाएँ । दूदा कएजे की जाएत । जमातक रीच बही, अजातँव शोमण छिँहे ।

सुगमित पछाति रिदा भेलोँ । भगरतीपुव तक एक्क मोकमे आरि गेलोँ, दूदा पमीनासँ बुमि पछ जे देहक रस्र मोषी क२ भारी भ२ गेन अछि । चाह पीर रिदा भेलोँ आकि रिजलोका लोकले । धूँकड़ी-धूँकड़ी मेघ छिँखाए नगले । पछराक मिहकी चले, कणी पछाति मीसी महवथ नगले । तरेगण टोवा-बुकी खेनथ नगन । मेथ छहव नग आरि मागकिन चनरँसँ हिया हावि गेन । भिणसुवका देखन घावक कतरालिक रान् आ खेतसँ निट्टाँ रँगन बसतामे महिमिक खुबक धमाष । दिनाकेँ होशियाव एते होशियावी करिते छथि जे तवि कमाना पौष्टे मागकिन गुडकरैत पएले ठेपे छथि ।

वातिक नख रँजेत । दू घँठीक बसता गामक । देहक गंजी-रुवता निकालि, ठेहूसँ डुपव पोती खोमि पएले रिदा भेलोँ । पछराक महकीक संग मेघक सकास, कमानाघाव नग अरैत-अरैत सुधि-बुधि हवा गेन । ठेहूसँ निट्टाँ कमाना पाणि, रीच धावमे पैमि जिनगीकेँ हिसारँ नगेलोँ, अंतिम केसक दूकदयाक खुशी, साँप जकाँ छुछाडि कठैत धावक धावा, रँखाक रँदना साकस, नाँठे-रिहारिक जगह हराक महकी पएवक पथिककेँ दू कोस आबो जय पडत ।

एगावह रँजे पँहूँटते पनी हवमि दोगन आरि, जेना जहनसँ पड । क२ आएन होग तहिला दवरँज्जा-आँगनक रीच दूहाविपव मोथीक रिछाणि रिछरैत रँजनी-

“पहिले ठठ । निख । तखनि थारँ-पीर । अणवा हाथक वाति छी, सुतेएमे कणी देवी हएत ले ।”

अणव मसुतीमे मसुत बही । सठमे उतावा देलिगनि-

“अहाँ अणव ओवियानमे जाड, अखनि मीसीक मज्जा उठरँए दिख ।”fff

१ जनवरी २०१४







## मात-गात

कपनानकेँ देखिते बाधाकमा रोजन-

“कप भाग, गाममे ले छेलौं की, रहुत दिनक बाद नजबि पड़लौं हेल ?”

बाधाकमाक प्रश्नक उत्तर कपनानकेँ जेना ठोलेपव बहे, रोजन-

“गाममे छी। केतए जखर। हमरा जे तँ गामे सभ किछ छी, सुरक्ष-बर्कस नर कर हष्ट-कसर धरि।”

कपनान आ बाधाकमा एक उमेरिया, संगे दू गोठे कोलेज तक पढ़ल। केते दिनपव दूकेँ छेँ भेल से तँ निश्चित दिनक ठेका ले छल दूदा मोसममे परिवर्तन जकर आरि गेल छल। ए रात बाधाकमाकेँ बुझल जे कपनानक छेँ भाए मोतीनान पनबह-रीस रीस एम.ए. करि कर महापव कोनकातामे लोकवी करे। आगु भर कर परिवारक रात पढ़र अघटित बुझि बाधाकमा रोजन छल। उना श्रेष्ठमे बहे जे जखि अगला गामक आ अला गामक पठोन-निथोन छेँ भाए, केना पिता तुन्य जेठ भागक संग रेरहाव करे छथि। दूदा आगु भर कर एहेन प्रश्न अघटिते होग छे। जे भाए पिताक परिवार रिसरि जाग तैकरा जेन तँ उटिते भर सकेए दूदा जे से ले मागि छेए तैठाम तँ अघटित हेलै कवत। अघटित ए जे केकरो तैयावीक रीट केहेन रेरहाविक समरंष छे, परिवारक तीव किछ एहेना काज होग छे जे गोपनीय बखन जाग छे। ओहेन काज जे परिवारकेँ समाजसँ जोड ए ओ, आ जे परिवार जोडक काज छी, दूदामे अघतव होग छे। जँ समरंषसँ हष्ट कर किछ प्रश्न पोखसँ एहेन उटि जख, जगसँ रेरघात पौदा नग तेहला तँ भर सकेए। दूदा गपोक तँ कडि होग छे, जग कडिक रीट सभ रात जूडि सकेए, दूदा कडिक रीटक रातकेँ जँ पहिल बखन जाए तखनि तँ एहेन रेरघातक स्थिति रिसरि जाग।

बाधाकमाक श्रेष्ठक प्रश्न श्रेष्ठमे बहि गेल, दूदा रात तँ अखर गेल छल, कोला-ल-कोला गव राहव निकनरै कवत। कि ए ले निकनते, केकरो आंखि ले ल सीखन छे जे तैयावीक जिनगीमे आर्थिक रियमता एते दूरी रेशा देनक अछि जे एक भाँगक रिया-पुताकेँ उछ कोष्टक रियानय भेठे छे जगमे ल निश्चित पढ़ाग छे आ ल पढ़क दोसव रेरस्था पुसतकानय, राचनानय, डिरेष्ट गत्यादि छे, जगसँ ओकरा साधावशा सतवक रेष होग, यएह छी तैयावीक समरंष। पाशा रदलेत बाधाकमा रोजन-

“दूनु भाँगक परिवार आषणसँ छी किल ?”

बाधाकमाक गोष्ठी सतवव। कपनान उत्तर देनक-

“हँ, रर-ररि याँ छी, मोतीनान गाममे अछि, चनु कनकतिया रिस्रष्टे खएर आ चलो पीर।”

उना बाधाकमाकेँ केतेको काज सिपव सरावी कमल बहे दूदा नरनोकसँ छेँ कवर जकरवी बुझि सभ काजकेँ छेँ रोजन-

“उना एकठा काजे रौखाग छी दूदा चनु। पछाति बुझन जेते।”

दूनु गोठे संगे रिदा भेल।

दवरंजजाक ओसावक टोकीपव रिद्धाएन मोथीक रिद्धापव रिसन मोतीनान अगला तीनु रेषा-रेषी, ररिहिक सेहो दूनु आ भागक टाक रेषा-रेषीकेँ एकठा रिसा, रीचमे रिसन। कपनानक छेँका रेषीकेँ मोतीनान पढ़नक-



“रौंखा, की नाँउ छियौ ? ”

मोतीनानक प्रश्न सुनि दजरौक मन रौंखा गेलौ । मनमे उँठि गेलौ परिवारक सब । रौंख रौंखा कहै तँ माए नुन, दीदी धीगवा कहै तँ जेठ भाय घुसका । पिती ठूँन कहै आ पितियागल ठूँनठूँन । सरहक अगन-अगन नाँउ बयैक पाछु अगन-अगन कावशौ । पिता ए दुखाले कहैत जे हम रौंखा कहलौ तखनि ल रौंखामँ रौंउ सीखत । तहिना माएकेँ जोत जे नुन कहलौ तखल ल बानी सीखत, जे जूडा ए पकडा जेत । दूदा दीदीक आधाव जे रँउचेसँ रँसी खुएनहा-पीएनहा देह, डेठ रँथक पञ्जाति उँठि कइ ठाठ भेन । तहिना जेठ भाय नख महिलामे डेग लै रँठरैत देखि घुसका नाँउ बधि देनक । घुघु रँना डोवाडोरी लल आएन बहै, तँ ठूँन नाँउ बखल । पितियागला तहिना हँठा-हँठीक मानामे छेष्टकी ठूँनठूँना नगौन अलल बहनिन तँ ठूँन-ठूँन नाँउ बखल ।

पितीक प्रश्न सुनि । जहिना खल-खन काजक हिसारसँ कपेआक खन नगा लोक बथेए आ काज अरिंते निकालेए तहिना ठूँन राजन-

“ठूँन । ”

जेठ भायकेँ देखरैत मोतीनान राजन-

“अ के हएत ? ”

“रँडका डैया । ”

रँहिनक छेष्टकी रँथीकेँ देखरैत पञ्जनक-

“अ के हएत ? ”

“रँहिन । ”

“हम के हएँ ? ”

“कनकतिया काका । ”

मोतीनानक बग-बगमे गाम समाज समाएन दूदा जहिना कोला रौंखक मन अगन प्रेमी ज़ीर-जगत्तक रँसतुमि रँलैत आ लै बहल ओका प्रेमीकेँ भगोरौ करैत तहिना मोतीनानक जिनगीमे भेन डन । शिक्षक पिताक समय बहनि जे शिक्षा तँ शिक्षा डी चकम नखल नोएते हेते, अगल एकवा रँमि केना पएँ, एक ठगक शिक्षा पारि शिक्षक रँगलौ आ रँह रिथयक शिक्षक रँगलौ, दोसबकेँ रँमि लै पेलिँ । जखनि रँमि लै पेलौ तखनि दूसर अगुटि तँ शिक्षा शिक्षार्थीक रिचावसँ हूँ । दूदा मेरा निरुति भेना पञ्जाति महसुस केननि जे किछ कमी जकब भेन । मेहो तखनि भेननि जखनि दूनु भाँग कपनान-मोतीनानक जिनगी शुक भेन । जेना कपनान अगना सग परिवार आ समाजकेँ जोडा मन्त्रीमे चलि बहन अछि तेना मोतीनानकेँ लै तँ पारि बहन छै । पिताक रिचावक नात मोतीनान उँठौल बहए । नीक रिद्यार्थी बहल नीक-नीक रिचाव हाँगए सुकनसँ उँठए नगलै । डाकूँव रँगर, गँजनिगव रँगर, एम.बी.ए. कवर गत्यादि । दूदा सुतबरो केलै । एम.बी.ए. केनक । डिग्री लेना पञ्जाति जखनि उँनष्ट पाछु तकनक तँ रँमि पडलै जे गाम छुष्टि जाएत ! हमरा जोकब काज कहँ छै । गामक जे रात रँमए चहै छेलौ मे अरि केना हएत ! ! किँ लोक माह्रतुमि-माह्रतुमि अलले बँ नगौल अछि । दूदा दोसब उँपेयो तँ लै अछि । तखनि ? तखनि तँ यह ल जे जग तुमिक साहित्य सृजन चहै डी ओ अगलौ बहल कएन जा सकैए, दूदा लोकवीक किछ दिना पञ्जाति अ रात रँमनक जे जेते दिन गाममे बहि गाम देखलौ ओहल छि ल मनमे ओत । दूदा जग गाममे धाव लै रँहैत डन तग गाममे धाव अरि गामक तुगौन रँदनि देनक, जगसँ उँपजारीसँ नइ कइ जिनगीक



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

फ्रिया-कनागके तहस-बहस क२ देनक तेकरा जूँ रीस रैबथ पहुँका छि आगुमे देरै तँ की नरका तुबक लोक आबहव ले कहत । आब भूमि दर्शन तँ उतुक्का अणकुन छै । जूँ ज़रिरेते अणहवा ज़ाएँ तथनि देखलौं की आ देखेलौं कथी । अप्पणकेँ रैनि चट्टेत देखि मोतीनान जिणगीमे किछु संशोधन केनक । संशोधन ३ जे गाम दिनक डुष्टीमे गाम आएँ छोट्टा खुदवा-खुदवी डुष्टी रैणा मोसमे-मोसम आरैए नगन । अप्पण सारोक डेवा नगेमे जगसँ सुरियो बहे । पाँच दिनक डुष्टी दुर्गापुजामे सपविराव गाम आरैए नगन रौंकी असगले मोतीनान तीस दिन-टावि दिन जेन आरैए नगन । दूदा से एरैव ले भेन । रैगानक पिकनिक छोट्टा गामेमे मानक पहिन दिन सपविराव मणारैक रिटावसँ आरि गेन । पाँच तारीखकेँ चलि ज़ाएत । उणा मणमे दूगदू कोनकतेसँ उठि गेन बहे, दूदा गाम अरैत-अरैत आबो रैठि गेलै । रैठि ३ गेलै जे एक दिन लोक देशी-रिदेशी संसृति क ठेन पीठैए तँ दोसव दिन नगेड । रैजा सरागतमे आनियोँ बहन अछि, ३ केना हएत । याओक दरौगओ खेरै आ कदीयो खेरै तथनि तँ खनीफक तीड णमे किछु रैसी समए नगरै कवत । रिचित स्थितिमे मोतीनान रैछा सरैहक रीच अप्पण माथक रौम उतावि बहन डन । एकठी नमहव समैक गतिहाम बहन अछि केतोसँ दूडी आ केतोसँ नागवि जोडि ले हेते । कानखुडक अणकप समाजिक टाँटा रैलीत बहन अछि । जूँ से ले तँ ज़णकक गतिहामकेँ केना आधुनिक रैणा देन गेन अछि ।

बसतेपव कपानान आ बाधावमाकेँ अरैत देखि मोतीनान उठि क२ आगु रैठि रौजन-

“प्रणाम, भाव सहिरै ? ”

मोतीनानक प्रणामक उतव दैत बाधावमा रौजन-

“मोतीनान, तारे नाँ सुनि कनकतिया रिसफुठे खागले एलौं हेन । ”

रौहि पकडि मोतीनान बाधावमाकेँ रैसरेत भातीजकेँ कहनक-

“रौआ, ज़ारै दाह रैणतह तारे ज़नथे नारैह । ”

रैहवरेया भाए-भाराकेँ अरिरेते कपानान अप्पणा रैहवरेया भ२ गेन । दूपाटाप टोकीपव रैस देखि नगन । बाधावमा रौजन-

“केते दिन गाममे बहरैह ? ”

बाधावमाक प्रश्न सुनिते मोतीनान रौजन-

“तीस दिन भागए गेन पवसु चलि ज़ाएँ । फेलो अगिना महिला फगुआमे आएँ । ”

फगुआ सुनि बाधावमा ठमकि गेन । ठमकि ३ गेन जे एक दिन अण्जेजीया नररर्य, दोसव दिन अण्जेजीया अण नररर्य, केतो टैती तँ केतो रैशिआ, केतो सोणी तँ केतो दिरानीक । दूदा प्रश्न तँ उठरै कवत जे मात सद्द पावक मणरै डी, अप्पण देशी किए छोट्टा ज़ागए ? प्रश्न तँ सामाजिक अछि जे एकवा केना सामाजिक कएन ज़ाए । अप्पण सनातनी संसृति प्रेममय अछि । जेकव फन छिइ कप-कपमे अण्जेजीया दर्शनक कप तैतीस कबोड देरी-देरता, तेकव कोण नजबिह समारैह हएत । रिटावकेँ आगु रैठरैत बाधावमा रौजन-

“पठ १३-निखागक काज केहेन चले डह ? ”

मोतीनान-

“गाम आ महाणगवमे रैहूत अण्जेजीया भ२ गेन अछि । गाम जेते आगु घुसकन तगसँ पाडुओ कमा ले घुसकन । तेकव कावा भेन अछि लैतिकताक दास । सए-सैकड । कपेआक मोन मण्खक जिणगीक रैनि गेन अछि । भाए-भैयावीक सण्णमे चनिए रैनि गेन अछि जे जखल ज़मन



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

तखल तीस ! यह छी बागायतीक टाक भाँगक पारिवारिक समरंभ । गाम-गाम बागायतीसँ अकाम पुँज बहन अछि, दोसब दिस पारिवारिक समरंभ नयष्ट भऽ बहन अछि तैठाम समाज आ सामाजिक सलोकक लेहेन ह्यत, से तँ सोनहने अछि ।”

ओना बाधाबसाक गलेठक बसगनना मठरौ ल कएन डन दूदा मसमे एहेन सुआद जकब आरि गेन छेलै जे जे प्रेम मोतीनान उठौनक ओ केकब प्रेम भेन । हज्जाव हाथ मंगलिनारकेँ एक हाथ केते दऽ सकैए । दूदा नाजिमी रात अछि जे माहभूमिक मेरामे अपन कथी योगदान अछि । देमै-रिदमैक रात अलको भाया-भायी फेवमे बहि एतरो लै कऽ सकै छी जे ओग भायाक साहित्यकेँ मैथिलीमे आनि सकी । अपन पहिछान अपन बागिण कडिगब मैथिली भायी दर्ज कवा सकी । खेब जे होड, कोड काहु मगन, कोग काहु मगन । मोतीनानक गतीव प्रेमक उतव बाधाबसा लै दऽ राजन-

“छेनाक छी किल ?”

जलिना पागिक दुमादुमी खेनमे हबदा रँजा टोव रँलीन जाग छै तलिना मोतीनानक मसमे भेन । दूदा शेरदराण कलेजकेँ रेंध देल छेलै । रेंधल अ छेलै जे किछ प्रेमक रिटाव कवर, दूदा पालीपत्री रूमि बाधाबसा प्रेमकेँ ठाँवि देनक । अपन मज्जुरी देखैत मोतीनान राजन-

“भाय सहिरै, अपन रेंधा जे नहियो कहै तँ रूमरै केना । किछ पठ-लिखेक गच्छा मसमे अछि, दूदा जग धवतीगब रँस करै छी ओकब कप रंग अपन गाम जकाँ लै अछि, जेहेन जकबति छै तेहेन देखि लै परै छी, एहेन गमथीतमे हँसि गेन छी । की कवर से राँठे ल देखि परै छी ।”

मोतीनानक प्रेम जेला बाधाबसाकेँ घुसियाएन रूमि पडन । अपन गच्छा जे एक गामक परिवारकेँ महबक परिवार मंग केना सामाजिस रँलीन बाखन गेन अछि । केकरो कहिसँ पहिले अपन रिसवास अणषापब वख गच्छ छै, जँ से लै ह्यत तँ शेरदजानमे गुमलेरै कवत । राजन-

“परिवारक की सभ भाव अहाँ उँगब अछि आ की सभ भाय सहिरैकेँ देल छियनि ?”

बाधाबसाक रात मोतीनानकेँ नागन लै, एक रिटावधावाक धाव रँहत रूमि पडन । राजन-

“लाकबीक दबहने केते होग छै तखनि तँ गामक हिसारै रेंमी होगते छै, तगमे अदल-अदली कऽ नग छी । अणला आगु दूहेँ समरैक अछि आ परिवारकेँ समरैक अछि । कहियो किछ ल मली छथि, अपन ठंग चलेक छलहि, तगसँ परिवारक भावो ल रूमि पच्छ छलहि दूदा तैयो रँन-रँछाक पठर, रँव-रँमावी आ नता-कपड एक भाव उँतारिये देल छियनि ।”

बाधाबसा-

“एतरेँ किछ उँतारल छियनि, कहूना तँ ज्येठ भेना किल ?”

बाधाबसाक रात सुनि मोतीनान दूदक दैत राजन-

“भाय सहिरैकेँ घुमे-घनीछेले मोठेव मागकिन नगले कहे छियनि से मानि ए ल बहना अछि । अहाँ मंगतुविया छियनि कहियनि ।”

टोकीपब रँसन कपनान दूनु गोठेक रात सुनि राजन-

“अहाँ सरँहक रिटाव अछि जे मोठेव मागकिन कीनि नी । दूदा आरि हम ओग जोकब बहलौ जे ज्जागरवी कवर । जग गाममे बहे छी तग सभ तवहक जकबति तँ गाममे पुँति भऽ जागए तखनि अलले सरावी नऽ कऽ की कवर ।”



कपनामक रिटावकेँ बाधाकमा ठावेत राजन-

“गाडी-सरावी बहनासँ अगला सुरिवा हएत आ अगला रेंव-रेंगवतामे काज अउत । अउता सरावीक रात छोडू, बहे जोकव घब अछि, तखनि तँ कोना मनिता तैयावीक रीट बहियेँ हएत ।”

कपनाम-

“मनिता किए बहत । तैयावी लोग आकि दियादी आकि सामाजिक, सरहक रीट सीमा अछि अगन सीमाक रीट अगन जिनगी अछि तखनि किए कोना मनिता अउत । रेंजान गाडी-सरावी मडकपव चमिने छै दूदा कहाँ केतो रेंजमकी ठाली नगए । केतो जँ एक दोसबसँ ठकवागतो अछि तँ द्वागवक गनतीसँ ठकवागए ।”

टोकीपव सँ उठैत बाधाकमा राजन-

“रौं योती, रौं रेंव भे २ गेन । जाग छी । जखनि गाम अरै छह तखनि एको-आध घंटा लेन छै छै होगत बहिन २ ।”

योतीनाम-

“मामे तँ अगला बहे, दूदा जिनगी ले दुदिसिया रनि गेन अछि, किछ जे गपो-सगप कवरै, से की कवरै । तखनि तँ जोकक जिनगी केतेछी लोग छै । कहुना-ले-कहुना कष्टमे जाग छै ।”

बाधाकमा-

२. देसी-दुनियाँक रीट अगलाकेँ ठाठ

२०१४

...

## बिजने

पहिल जन्मवीकेँ बरि दिन बहल दोसब दिन सकुलो खूजत आ रौं । दिनक छुट्टीसँ पहिल भेन पवीडाक बिजने मिकनत । ओना शिक्षक अतिभारक आ बियाथीक रीट नर रथिक उपावक सम्य बहल खूमीक रातारका पसबले अछि । केना ले पसलो ! दुर्गापूजा अरैसँ पहिल जे खूमी मसमे उमकेत ओ तँ सगती पूजा धरि बहरे करेत । ठाँउ कवरै, फुन-पातसँ पूजा कवरै, काँट माष्टिक दियावीसँ माँम देरै, सतुति कवरै, दूदा अँथि (डिमा) पडना पडाति जे उँसुरक मोना शुक होगए तेकव पडाति ए ले खगन-भवन हाथक रोष होगए ।

गामेक हाग सकुनक नखम कसामे गोरैव गशेनि सेहो पठेत । ओकरो बिजने मिकनत । जहिला आष-आष बियाथीमे खूमी तहिला ओकरो । एक तँ पवीडा देना पडाति रौं । दिनक छुट्टीक उँडाही तैपव आगु रौंकेँ अरसरि किए ले बहते । ओना छुट्टीक उँडाही सत छुट्टीमे होग छै दूदा से रौं । दिनक छुट्टीमे बहियेँ बहे, दूदा किछ ओ तँ जकव बहए । मानमे केतेको छुट्टी बियाणयमे होगए, जगमे किछ सथागओ आ अन्थागओ । ओना रौरन-तिवपछी बरि अगन अँठराले हिमा नगये लेले अछि, दूदा तँ ए आष-आषक कोना सीमा-सबहद ले छै ? दुगहे । किछ पारनि-तिहावक नामे अछि, किछ योसमक नामे अछि तँ किछ समेक नामे । खेव जे होड, दूदा जहिला घंणकेँ रौंन कहन जाग छै तहिला छेँट दिनेकेँ पौघ दिन अँथि रौं । दिन कहि अँवाम करैक अरसरि देन जागए ।



केतरो धरुहड केनक गोरब गणेशि तैयो साद्र दस रजिये गेले । एक तँ गमकुलो जेरौसे किडु रिगस भागए गेन बहे दूदा विजलठक खुशीक हकाव रँठेरें ले केल बहए । तँए रिगानय जागसँ पहिल हकाव सेहो रँठेक डुगहे । रिदा होगसँ पहिल रौरा नग जा राजन-

“रौरा, आग विजलठ निकनत ।”

पोताक खुशीक हकाव पारि श्यामचरणक मसमे खुशी उपकननि दूदा रजना किडु ले । केषा खुशियामाक अमीबरद देखिष ? ओ रँवहरँडू पोडर डुधि जे दीखा पहिल आ शिखा पडुति देखिष । गोरबो गणेशिके रिगानयक हनक आशि तँए रौराक अमीबरदक प्रतिष्ठा डोडि रिदा भऽ गेन ।

माथक सुकज पडुति नठकि गेन, अथनि धरि गोरब गणेशि किए ले अएन । पठनी दिन पोडर डिध जे रेंसी समय नागत, विजलठक दिष डी । जे पास कवत तँसेत घुगत आ जे हेंन कवत ओ अणला कानत आ परिवारोके कलौत । सभन मस रौराक आलो समष्टी गेननि । जेरेंकान पोता कहि गेन विजलठ निकनत । टोकीपव सँ उठि बसतापव जा रिगानय दिष हिया कऽ तकननि । जेत दुब नजरि गेननि तैरीट केतो पोताके अरैत ले देखननि । घुमि कऽ दवरँडूजापव आरि रिटाव नगना । केषा हन पौन पोताक अगरानी डोडि अणल देसव काजमे नागर । गुमूके अगरानी ले रागरानी रेलौत । अणला आथि पोताके देखरँ आ अणला काले ओकव हजोके सुवरँ डोडि कऽ जाएरँ नीक ले । रेंसिते मसमे नीकक आशि नाए नगननि । जहिया गाम-घबक रीट नर-नर अरिष्काव सुनि लोकक मस नचरौ करैत आ गीतो गरैत जे आरँ की जनक जिक तीन रीतीया हवक काज हएत, रँडका-रँडका हवजोता सभ आरि बहन अडि । एके दिसेम सार्ठि रँथक जिनगीके तीस रँवथ रँषा देत । दू दिष तँ सौंसे जिनगीक भेन । गोरब गणेशिपव नजरि पडि ते मसमे जेना शुभे-शुभक सणषा उठए नगननि । रिसरि गेना चरि सानसँ हेंन होगत अएन गोरब गणेशिके । दूदा रिसरैक पाडु काजक हजो होग छै । कियो काजक हन गनि हन रूनेध आ कियो हजोके हन रूनेध । श्यामचरणक मसके गोरब गणेशिक काज अणला रिटावक रँठपव ठाठ भऽ आगु अरै ले दनि, जगसँ रौराक मसमे सौणक हविअवी रूमि पडनि । आनो पडुति सानक हविअवी रौरा ये तेना कऽ धुआएन जे लोक सौण-भानो रिसरि जूनाग-अगसत रूमए नगन, सेहो मसमे बहरें कवनि । दूदा नगले मस रिगरिलननि । रिगरिणागते टोकीपव सँ उठि बसतापव पहुँच सुकनक रँठ हिया कऽ तकननि । पोताके केतो ले देखि मस ठमकि गेननि । दूदा नगले उठननि जे किडु दुब आगु रँठि देखिध, जँ कही सगी-साथी सग विजलठक खुशीमे रौड । गेन हुअ । मसो गरही देनकनि । सएत भेन, भविमक केतो रौड । गेन अडि । जँ से ले बहिले तँ कोण रँषा-रँषी नाथो रेंव सणपत आ कऽ ले राजन हएत जे माए-रापक सेरा हमार धरमे ले कतरयो डी । एकठी सुठ रँजले लोक कोठ-कटहवीक खुनी केससँ रँटि जागए आ जैठाम हजोरो-नाथोक रीत छै । दूदा रेंसी कान मस अँठाम ले अँठकननि । आगु रँठि ते मस पडननि सएत जखनि गोरबधन गिबिबारी गोरबधन गहाड उठा गमदक धावके बोकि देनक तखनि हमार गोरब गणेशि ले किअ कवत । मसमे उठिते जेना सौणक कजवावीक छुटी छुटी-छुटी गेननि । डेगे-डेग किडु डेग जखनि आगु रँठि नजरि उठौननि तखनि रूमि पडननि जे पोता आरि बहन अडि । नजरि पडि ते रौरा हाँग-हाँग पाडु घुमि, अणनी घब दिष रिदा भेना । अणल सिहदुआविसे पोताक अगरानी कवणागक खुशी मसके भरि देनकनि । दूदा जहिया प्रतिष्ठाक घडि अमथिबसँ ले चलि उकडु चलि चनए नलैध । श्यामचरणक मसमे तहिया उठननि । चरि रँथसँ गोरब गणेशि हेंन करैत अएन अडि दूदा अणल मस कहि छै जेना जिनगीमे एकोरेंव ले हेंन केनौ हेंन । जँ से बहिले तँ कोठि या रँवद जकाँ पालो देखिते कान नाँकि दगत । सेहो तँ नहियेँ रूमि पडि । दूदा से भेन केषा अडि ३ तँ ओकलेसँ भाँज नगत । कियो बचणाकाव मरि कऽ ले मृत्यक चर्च करै डुधि, मृत्यपवध जिनगी देखि मृत्यक चवटा करै डुधि । हेंव कणगरिया अँगवपव हिसारँ



जोड़ए नगना । छैठका पढ़नाह ल छैठका प्रथमक उतव छैठके निधि देत ऋदा से तँ गोरब गणेशमे ले अछि । विखाएन-विखाएन पाग पोड़ के कारोरोबसे षुत । जँ कमियोँ-कमियोँ रिसवेत गेन हएत तेयो एक मानक पढ़ाग तीस मानमे रिसविए गेन हएत । जँ रिसियाएन होगते तँ चरि गुा रिसीखा जागत । तखनि तँ दोसरे मानमे रिसी परिते पास केले बहेत, सेहो तँ बहियोँ भेन अछि । मस घोड़मछी हूअ नगननि ।

गोरब गणेशि अरिते श्यामचबार्के गोड़ नागि राजन-

“रारो, बिजनेष्ट निकनन । ”

गोरब गणेशिक रात सुनि श्यामचबार्क मसमे उठननि, की निकनन । पास केनक आकि हेल केनक से कहीँ रूमि गेनि । बजबि उठा हिया क२ गोरब गणेशिक ऋहपव देननि । ऋहक कथि मनिन ले । ऋदा केना क२ पुढरौ जे रौखा पास केलेँ आकि हेल । पास-हेल तँ लोक जिनगीक फियामे करेए । जे रूचेसेँ प्रराहित हूअ नछे छै आ ठसरलिनी मतियो चनए नछे छै । आधिपव आधि चढ़न देखि गोरब गणेशि रूमि गेन जे रारोक मसमे किछ प्रम डगहि । हनसत राजन-

“अछुरेव नमेमे बहरौ । ”

पौताक रात सुनि श्यामचबार्क मसमे उठननि, चरि मानसँ हेल करेत आएन अछि ऋदा मसमे मिसिओ तबि पम ले छै । मियालीक कोला बेख ले देखि परे छी । असमाजसमे रारोकेँ पढ़न देखि गोरब गणेशि रूमि गेन जे तबिसक रारो रिसवि गेन । मएह मस पाड़ले कहि बहना अछि । किछ ठेकना क२ मस पाड़ि राजन-

“पहिले मान जे हेल केले बही से रिसवि गेनि जे किअ केले बही ? ”

पौताक प्रम सुनि श्यामचबार्क असमाजसमे पड़ि गेन जे केना हँ कहरौ आ केना ले कहरौ । हँ जँ कहरौ तखनि जँ कहीँ आगुक रात पुछि दिखए आ जँ ले कहरौ तँ रूमनो रात ले रूमन कहि मछी भ२ जाएरौ । दूपे बहना । परिवार की कोला कोष्ट-कचहरी छिं जे राता-राती हएत, परिवार तँ परिवार छिं । जलिा रारोकेँ रिस पुढरौ किछ कहेक अधिकार पौतापव होगत तलिा ले पौताकेँ रारोपव । अगले हूडले गोरब गणेशि राजन-

“पहिले मान जे शिक्षक पढ़ील बहनि, हूकव रँदनीओ भ२ गेननि आ रिययो रँदनि गेन । ”

पढ़ली आ पढ़निहार सुनि किछ पुछिके मस श्यामचबार्के भेननि, ऋदा अगले हूडले गोरब गणेशि हेल राजन-

“पहिले मान जे शिक्षक जे रियस पढ़ीननि ओ जेना तब पड़ि गेन । ”

गोरब गणेशिक रात सुनि श्यामचबार्क ओमवा गेन । डोवाक पौजिया जकाँ ओव-डोव ले रूमि पारि जेना रिचेसे ओमवी ननि गेननि । ओमवी नगिते एकठा ओव देखि तँ दोसव हवा जागहि आ रीहयरोत जखनि दोसव भेठनि तँ भेठनाह हवा जागहि । थीकमे नागन टिडटिडी जकाँ भ२ गेननि । एक तँ आधिक पढ़तमे थीक बहल सोमना-सोमली ले देखि परेत दोसव दसु हाथक आंगव ओमवी जोड़ गेए ले परेत । मसमे उठननि, गोरब गणेशि कियो आष छी जे कोला रात पुछेसे मकोच हएत । पुढनखिन-

“रौखा, ले रूमि गेजोँ जे केना पढ़लीओ आ पढ़निहारो रँदनि गेन । जँ पहिले मान रँदनिसे गेन तेयो दोसव-तेसव-चारिस मान तँ रँचन... ? ”

रारोक प्रम सुनि, साँपक रीथ माड़निहार मसतबिया जकाँ गोरब गणेशि धूमनाड राजन-





“जहिसा पहिन मान रौदन तहिसा दोसरो मान रौदन ।”

दोसब मान स्वनिते रिच्छेमे श्यामचवण छैकि देनथिन-

“एना ले रौजन जे जहिसा पहिन रौदन तहिसा दोसरो-तेसरो-चाबिसो मान रौदन । हूँठा-हूँठा कहऽ जे पहिन मान की रौदनह आ दोसब-तेसब-चाबिस की ?”

बौरौक प्रथम स्वनि, जहिसा कियो गण्ठबडनु देमए जागकान बस्ताक पठन-रूमन रौत स्वनि प्रथमक पञ्चडी पकडि धड-धड । कऽ उतब दिख नखीए तहिसा गोरब गणेशि रौजन-

“पहिलक मान पठनो जे केना कियो गाडपव चढि आम तोडैए आ केना माष्टिक पहियाक गाडि रौना माष्टि उखैए ।”

उना श्यामचवणके पौताक उतब स्वनि रूमि पडनसि, हूँदा किछ रौनी दिस स्वनि रूमि रौनी रिसवागए गेन बहसि । किछ अगला मणपव भाव दथि आ किछ थोधि-थोधि गोरबो गणेशिक हूँतसँ स्वनि चाहथि । गोरब गणेशि रूमि गेन जे बौरौके बस भेष्टि बहन छहि । मणमे उठले जे परिवारमे बुढ-रौच्छाक रीट समरुण रौगत तँ रीटना अलले सोमवाएन बहत । एक दिस ठीकामणक बौरौ तँ दोसब दिस गंगा पाव करैक नार पौता । हूँदकी दैत गोरब गणेशि रौजन-

“दनाणक खूँषीपव जे ननका कपडि मने बामाया रौहसि कऽ बखल छी उ पवणा गेन । पहिन रौथिक कोसमे बहए ।”

गोरब गणेशिक अजगुत जुरारै स्वनि श्यामचवणक मणमे भेनसि जे रूमि ले हूँसुकि गेलैए । हूँदा नगने जेव भेनसि जे केमहव हूँसकन से केना रूमरै । एहेन प्रथम पञ्चरौ केना कवरै । जँ कही आगु हूँसे हूँसुकि गेन हेते तथनि अगियाएन रौत रौजन । जँ कही अगुरानीक टानि पनक तँ अलले अणसोहात आगत । से ले तँ टुटिकारी दऽ अगल हूँतसँ रौजाएरै नीक छएत । पञ्चनथिन-

“रौआ, तँ मरै-मरै रौजि जाग छह, कनी असथिवसँ रौजन । आरै कि अणन उ आथि-कान बहन जे शिराफुमावक पाणिक अराज स्वनि तीव चनाएरै ।”

बौरौक प्रथम स्वनि गोरब गणेशिक मण मणिया खेतक खेसावी, सेबसो जकाँ गद-गदा गेन ।  
रौजन-

“बौरौ, बस्ता-पेवा एहेन सरान-जुरारैक जगह ले छी । कथला कता-रिनाग मियाण तोडत तँ कथला रौहपव खेनागत मिया-पुता । ओकवा मणहिउ तँ ले कवरै । जेकवा तीनिए रौतक घब-घवाडि छै ओकव मिया-पुता बस्ता-रौपव ले खेतते तँ खेतत केतए । से ले तँ चनु दवरैज्जापव, असथिवसँ कहरै ।”

पौताक रौत स्वनि श्यामचवण रौजना-

“जेतए रौनी रएह स्वन्दव देसि भेन । जे पौतगान कवए रएह बाजा भेन । एहो जगह कि अथना अछि, दुखाले-दवरैज्जाक ले हूँथरि छी । अणन घब-दुखीव छी, अकाममे टिड-टुणहणी उडरै कवत, कता-रिनाग, मान-जान चनरै-एरै-जेरै कवत तगसँ कि गण-सणमे रौवा पडत ।”

बौरौक रिटाव गोरब गणेशिके नीक नगले । मणमे एले गाए-गोकक मियाण ठेहलो पाणि दुहाण ।  
रौजन-

“बौरौ, बखनाहा पौथीमे कथी बाखन अछि से रिसवि गेलिअ ।”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सोताक रात सुनि कनी पाछु घुसकेत श्यामचवण रँजना-

“सोनहनी केना रिसवि जाएरै, दूदा किछु मन जकाँ तँ भगये गेल अछि ।”

मन सुनि मनमनागत गोरँव गणेशि रँजना नगन-

“टाक जूगक टर्चा अछि ।”

टाक जूग सुनि श्यामचवणक मन सकपकेननि । सकपकागते रँजना-

“रौआ, टाबि जूगक टर्चा ल गौथी-गुवाणमे अछि, जूग तँ केतेको आधन-गोन आ अरौत-जागत बहत । जूगोक कि ठेकान अछि, जखनि दूटा टिनबकेँ उँठै होग छै तखना कह छै जूगो पछाति उँठै भेलौ । आरँ तौनी कह जे एक जूगकेँ के कह जे केते भ२ जागए ।”

राँराक रिचाव गोरँव गणेशिकेँ जँचन । राँजन किछु ल दूदा डोरीमे राँहन कोना बसतु जकाँ दूदा डोरीमे नगन । राँरा रूमि गेना जे भकिमक आबो रात सुनए छहि । रँजना-

“जहिया टिहाबक रात कहिय२ तहिया राँव रँथिकेँ मेहो जूग कहन जाग छै ।”

राँराक रिचावकेँ उँडत देखि गोरँव गणेशि रँजना-

“राँरा, कोन जूग-जमानाक रात उँठा देखि । आरँ ल ओ जूग बहन आ ल जमाना । अखनक जे जूग अछि तलीस ल अगना सरँहक जिनगी चनत । अलले मगजमावी केले मला छिटा आएत ।”

जे रूमि गोरँव गणेशि रँजना हुअ दूदा श्यामचवणकेँ भेननि जे भकिमक जे कहिय२ ओ दूदिकेँ रँधनकेँ लेन । नीक हएत जे आबो किछु कहि रिचावक बसता रँदनरँ । रँजना-

“रौआ, जखनि एते राँजिये गेलौ तखनि कनी आबो बहन अछि, ओकवाते सँठागए जेरँ नीक हएत । टाबि जूग जे भेन सतसग, ब्रेता, द्रागव आ कनसग से कि कोना एकरँग भेन । जेकवा जेते फरँजे से तेते दयानि जेनक ।”

गोरँव गणेशि दयालेक माल ल रूमनक । रँजना-

“की दयानि जेनक ?”

सोताक जिजमा सुनि श्यामचवण रँजना-

“देखहक जँ टाक जूगमे समेक रँरावा भेन तँ एक वंगक ल होगत, से कहँ अछि । टाक टाबि वंग अछि । खेव जे होड दूदा एकठा आबो रात कहि दग छिख । सतसगक हविशचन्द्र रँड दानी छना । बाजा छना, दूदा दान देरौकान रिसवि गेना जे हम बाजा छी, बाजक भाव उँगवमे अछि, अगना फूडल जँ एकरँ गोरँकेँ सँठै द२ देखै तँ कबोडक-कबोड लोकले कथी बहते ।”

दिन भविक जूड एन मन गोरँव गणेशिक, श्पेठक रात उँफनि-उँफनि रँहवाए छहि, दूदा राँराक रिचामक पाछुए ल किछु रँजत । लोकले तँ लै जा सकैए । मनमे उँठले, जहिया कोना फुनक गाछ आकि कोना नती गिवहे-गिवह दूदा डो-फुलो आ रँतीओ दगए तहिया जखल रँजता आकि रिचुटेमे श्पेकि दूदा यावी देखनि । अलले अकछा क२ टुग भ२ जेता । रँजना-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“रारार, अहाँ टारि जूगक टर्टा करै छिअ, गाम्हर सहरि कहनि जे पाँचम जूग छी । एकठी केतए हेवा गेल ।”

हेवाएन सुनि श्यामचरण ठमकना । ठमकिते गोरब गणेशि बुनि गेल जे भविसक रोजेले किछ कह छथि । सुलक प्रतिम् जकाँ झूह नखे छन्हि । राजन-

“रारार, जहिला अदोमे आमक फड खाग छन तहिला अखला खाग छी । नीक तोज्या पदार्थ छिअहे । द्वाद प्रभ तँ एकठी उठरै कवत किल जे नमह गान्क फन छी, जँ अगल धुँई क२ खसक राँत सोचरै तँ छेठका-रँडरँडि या तनहि खसलोगव दबहे बहै द्वाद नमह, कोमन केना बहत । तथनि ओकरा केना उपयोग कएन जअत ।”

गोरब गणेशिक राँत श्यामचरणकेँ जँचनि । राजन-

“एकर उपए तँ गएह ल रहत जे जँ छेठ गाछ बहत तँ निदोसँ टाठ भ२ हाथसँ तोडि लेरै, द्वाद नमहवमे तँ नगणी-रँतीसँ तोडन जअत या गोला-ठेगसँ तोडन जअत । द्वाद तँ तर्क भेल । आजुक समेमे तनहि गमलोगे आम फडए, द्वाद नमह गान्क फन छी, एकरा तँ नकाबन नहियेँ ज्ञा सकैए । जन्दी-जन्दी अगल राँत कह२ । चारो पीरैक मन होगए ।”

टाहक बाँउ सुनिते जेना गोरब गणेशिक गणे रँदनि गेल । राजन-

“रारार, गग-सगग केतो पड एन जग छै, ओ तँ सद्दिकान उरि ते बहै आ उरि ते बहत । द्वाद ओकरा (राँतकेँ) जथनि रिचाव रँगा रिचावि क२ ले रिचवण कवरै तथनि धावक झूह केना रँगते । अथनि एतरे बहए दियो । विजयक दिन छी, अहाँ अँठका जेगो । दादी-माए सब अँगलामे छँठक तबकी दल तकेए । तल चारो रँगरा लेरै आ कशोलो-छेम सुना देरै ।”

गोरब गणेशिक रिचाव श्यामचरणकेँ जँचनि । मसमे उठनि जे भविसक हमाँ सब (पुबक पात्र) अतिफणा करै छी । से ले तँ दू गोठेक (गति-पगो) दिगो दु किए भ२ जगए । परिवारक जीतव जँ रीचाविक समकपाता बहत तँ मतभेद किए रहत । सब तँ रालो-रँटो आ परिवारोकेँ नीक टाहि छिअ ।

अँगल पँच दादीकेँ गोड नागि गोरब गणेशि गामा रँदलेत राजन-

“दादी, पास केनिअ । तेते ल रँडवीरना पंखा, रँती, छेठका रँडका कगुयुँठव, आवो कि कहां आरि गेल अछि जे घरे रँसन गज्जीनियव-डाकूठव रँनि जेरौ ।”

पोताक रिचाव सुनि दादी एते अह्लादित भ२ गेली जे नाथ समहबना पछातिओ झूहसँ थनिये पडनि-

“रौ गोरवा, सब दिन तँ गोरबे बहसे ।”

दादीक राँत गोरब गणेशि ले बुनि पौनक । अगलपव सुलक शिका भेलै । सुलक शिका जे गोरवाएन कहनक आकि गोरब गणेशि । सब तँ गोरब गणेशि कहै । भ२ सकै छै रँष दाँतक रँठ झूह किछ रँजगए गेल होग । केहेन-केहेन रीखवक तँ रीख रँष दाँते निकरिते ल छै, दादी तँ सहजे रँठ दादीए भेली । राजन किछ ल टाहक गिनास लल रारार नग पँचन । हाथमे टाहक गिनास पकडरैत राजन-

“रारार, अहाँ खुशी भेलो किल ?”

“रौआ, जँ तँ खुशी तँ हमाँ खुशी ।”fff



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१३ अक्षरवती २०१४

अपन मन ढूँढ

वेनरें सृष्टेशेनक प्रतीकानयक हवसोपव रैसन रिष्णुमोहनक मनसँ अनावास खनले-

“जहिना अपन मन ढूँढ न२ क२ आएन छेलौं तहिना अपन मन लेल जाग छी ।”

मनसँ खसिते रिचावक वसता रूँधि पकड़नक । वसता पकड़ि ते ढूँढसँ खनले-

“कोन ढूँढेँ आएन छेलौं आ कोन ढूँढेँ जाग छी । ते सृष्टेशेनक रिशामानय अतिमा प्रणाम !”

परोगण्डामे रैड १ नागनक गाड़ १ आ रीनावरें महानगवसँ जुड़क रैठक चर्ट सुनिते लोक, सुतन गाए जकाँ काण पठेगठौनक । एष.एच.३.१क दुवरीणक काज शुक होगते अन्नक संग फखला सौषक मेघ जकाँ मिसकए नगन । दुवरीणसँ देखिनिहार गंजीनिगव सतसँ गामक लोक सतकेँ छेँ छेँ भेलै । जहिना साँपक ढूँढ साँप चरैए तहिना लोक पढ़रै शुक केनक । गामक लोकौ तँ रूँधिक रैखावी छी, मकशुक छी आकि तीसक, धाणक छी आकि चाँडक से रूँनेक काजे कोण छे । सबकावी छी सबकाव रैणरै । कर्मिणक कारोबार हेरें कवते । जहिना सीठ ११मा ठान अछि तहिना कर्मिणला चटरें कवत । ढूँढा से रिष्णु चह-पाण खूँल खोड़ हएत । भाग ! मिथिला छिप्र, हमरा गाम अहाँ काज कवए एलौं आ फगो-छेम ले पछी, चहो-पाण ले कवारी तखनि हमरा सरहक सेथी की बहत । रैहवरेया गंजीनिगव मिथिलारें परिव्र भूमि रूँमरें कले । भाया ले रूँने छेँ तँ ले रूँमह ढूँढा परिव्र रूँमि पारण तँ कवरें कवत । सोम गतिये रैजरो कवते-

“रिदेशी पुजक सहयोगसँ रैनि बहन अछि, पागक कमी ले छे, गनाका धुँखा जाएत ।”

नकशा रैणना गछाति जखनि जमीनक प्रम उठन तँ हज्जावो रैथक ढूँढनहा जमीन सरहक ढूँढमे स्राती नकवक अमृत खनन । सए-सकड़ । कपेथक कछा जमीन हज्जाव-नाथमे कुदन । गाम-गाम चह-पाणक दोकान टोकक निर्माण केनक । सडकक रीट जे जमीन पडन ओकव हसतानतवा शुक भेन । भेन दुनु, किछ गोठेक जमीन नुठी गेन तँ किछ गोठे नुठरौ केनक । नुठनक अ जे तान-मेन रैसा ठेठवकेँ कोठा मकाणक दाम केनक । खानी जमीनक दामेक नाभ भेन से ले, गाम-गामक वसता-रैठक सम्पर्क रैणन । ढूँढा गाम-गामसँ पड एन लोक दुखारे पागक जेहेन मोन हेरौ चली से ले भेन । सगे जग गतिये हेरौ चली सेहो ले भ२ बहन अछि ।

पाँट कछा घवाड़ १क जमीनक अठ १ग कछा गण्डमोहन आ रिष्णुमोहनक सेहो पडन । ओना सडकक कातक जमीनक मोन तखल उचित होगत जखनि सडक रैवारैवि आ किछ डुपव उठा ओकवा कारोबारमे आनन जाए, ले तँ सिवकठ भ२ ओहेन रैनि जागए जगमे सडकक कुड़ १-कडकठसँ न२ क२ रैथक पाणि धरि रैसए नले । गण्डमोहनक जमीनक हान सएह हएत । गण्डमोहन आ रिष्णुमोहन सहोदर भाए । पितक नाँउ ग्राममोहन ।

ग्राममोहन गामक रैणने गामक जोख प्रोगमारी सकुनक शिक्षक छन । ओना जोख प्रोगमारी सकुनक शिक्षकक एक सीमाकन भागए गेन जे मैथिलिक पाम शिक्षक हेत । मैथिलिक सर्टिफिकेट तँ ग्राममोहनकेँ ले बहनि ढूँढा निटसँ डुपव श्रेणी धरि सकुनक पठरैक नुधि तँ बहरें कवनि । नुधिक दोसरो कावा बहनि । कावा अ बहनि जे ओना सकुनक शिक्षा ले छेँन बहनि ढूँढा भाषा अणना नग वधि पठ-निथेक एहेन नुधि रैना देल बहनि जे धुँढाव सत किनासमे पठरै छन । जगसँ रिद्यार्थीओ आ अतिभारकोमे माण-समाण बहरें कवनि, जेकव जीरत प्रमाण छन जे सिबिफ पठ ले रिद्यार्थी ले आला-आन प्रणाम कविते छेननि । सुबूध ल प्रणाम होगत से तँ अपन काजक ओकागत धरि बहरें कवनि । लोकवीक शुकमे सबकावी दवमहा ग्राममोहनकेँ ले बहनि हूँकेछी ले बहनि से रौत



লৈ আশা শিক্ষককৈ লৈ বহনি। হুদা তঁ পঠনিহাৰ ৰেংগাম বহু মে লৈ। খবৰী চাউব শিগিচবা আ একটা দুটা পাগ তঁ অঠৰীলে শিগিএ-শিগি দৈতে বহনি। ওলা কিছু বিদ্যার্থীকৈ শিগিচবা মাফ বহু। তেঠাম গ্ৰন্থামোহন সৰ্ব্ব কবথি জে জেহল দাশ তেহল লে পুশ। মাফক কাৰা আৰ্থিক সথিতি ছেলে। ওলা ওহল বিদ্যার্থীক সখ্যা কম বহু।

দস বীঘা খেতৰনা গ্ৰন্থামোহন সোনহনী পঠল-পাঠলক বীচক জিগণী ধাৰণ ক২ জেননি তগম খেতীক আমদনী মেহো কমি গেননি। ওলা খেত বীচাগ নগোল বহথি হুদা উপজা দুধক-ডাবনী জকা বহনি। কাবশো ছন, এক তঁ সমেগৰ খেতী লৈ ভ২ পৰে, দোসব খেতীক খোবাক তঁ পানি ছিধ মে লৈ বহনি, তৈসগ কোলা সান বীচ বেমে বিহনি বৌদী ভেল জবি জাগত তঁ কোলা সান বৌদী বঁখা-বীচা এল গনি জাগ। জবল-গনল খেতীক প্ৰদুখ বীচাৰী ভাগে গেন বহে। ওলা গ্ৰন্থামোহনক কিছু বীচৈদাব খেতীমে পুজী নগা উদ্যগ বঁবৰে চাই ছন হুদা খেতীক পুজী দু দিগিয়া হোগত। এক দিস খেতকৈ টোবস কবৰ, পানিক ওয়িগাশ কবৰ, জীৰ-জন্তুক উপদ্রক বঁচাৰ কবৰ, তঁ দোসব দিস হোগত নীক বীখা, খাদ, দৰাগ কীশি উপজা বঁচ এৰ। হুদা তগমে গ্ৰন্থামোহন পাছু হঠ জাথি। হঠেক কাৰা বহনি জে পানি জেন বৌবিগ-দমকন জে কাবখালাক সমাল জী, তগমে মলমালা দাম বহল খৰিক পুজীক জকবতি পড়ত, তহিগা খেতৌ টোবস আকি ছহবদেৱাণীস ঘেবৰ আকি কঁঠনা তাবম বঁবৰ মেহো তহিগা। আৰ ও সমথ বহন লৈ জে ঠনা-ভিষ্টম জোক খেত মেবিগত, গামক জোক ভাগি ক২ শিব-বঁজাব পকৰ্জা জেনক তখনি কেশা মেবিগত জাথত। ঠেকঠব সভ বঁচা যাঁ কাজ কৰে ছে হুদা ওকব তঁ খৰ্চে বৌদী ছে। ওলা গ্ৰন্থামোহনকৈ এতে জমীল ছেননি জে কিছু জমীল বঁচি জঁ পানিক প্ৰৰল কবএ চাহিতথি তঁ ক২ সকে ছনা হুদা বীপ-দাদক দেন জমীল কেশা বঁচি সকে ছনা। প্ৰতিঘটাক প্ৰম তঁ বহৰে কবনি। ভুমি এ ল ভুমা আ ভুমা দু দু জী। বীচৈদাব খণল পুজী খদু দুখালে লৈ বৌদীসৰে চাহিত জে উপজাক বঁচৰা বা উচিত লৈ ছে। খেতীমে উপজাক খদহাম বৌদী বীচৈদাবকৈ নগতে নগৰএ পড়এ, তেঠাম জঁ খদহাম বীচৈদাব ভেঠে তঁ ঘাঠা হেৰে কবত। আৰ কি কোলা সতহাগ জী জে জোক খণল পুজী গমা দোসবাক উপকাব কবত। আৰ তঁ ও জুগ আৰি গেন খছি জে জোক দালা-পুশ খণল দিয়া-পতা ধৰি কৰে। জঁ মে লৈ তঁ মহাবথীক বঁচৈ কিএ মহাবথী বঁচনা, দোসব কিএ লে বঁচি সকা, জখনি কি ও সভ দাৰী লৈ মহাদনী ছনা।

গ্ৰন্থামোহনক পহিন সন্তান গদ্রমোহন। গদ্রমোহনক জন্মক সমথ হুশকব মাতৌ-পিতা জীৰিতে বহথি। পবিৰাবমে গদ্রমোহনকৈ পৰিতে বীচী-দাদী ছদএ ফাৰ্জি খসিবৰাদ দেলে বহথি জে ফনমত বঁচি জিগণী জীৰিহ২।

সমথ বীচন হবাগত-ঠবাগত গ্ৰন্থামোহনকৈ স্কন ভেঠনি। শিগিচবাক আশী বহৰে কবনি তৈগব পৌতানীস কপেখা দবমহো ভেঠএ নগনি। মলক আশী পুবৰে দুখালে গদ্রমোহনকৈ গমাশদবীক সগ পঠ নিনি। খণল কোঠীক জে ধাশ-চাউব বহনি ও খোনি ক২ দ২ দেনথি। হুদা গদ্রমোহনকৈ ডিগী-ডিগীমা লৈ ভেঠ সকা। খছিতে বুমিএ গদ্রমোহনকৈ খণল বঁবৰবি কাজ লৈ দেখি গ্ৰন্থামোহন চিন্তিত বহৰে কবথি হুদা উপেয়ে কী। সবকাবমে জে খছি ওকব তঁ খণল নগুখা-ভগুখা সড়কপব বৌখাগ ছে, খণকা কথী দেখত। হুদা এতে উপএ তঁ গ্ৰন্থামোহন কগয়ে দেনথি জে খেত বীচাগ বহু দহক, খণল দবমালা ভেঠে খছি, পেশীলাক গপ-সপ্গ চনিয়ে বহন খছি জাৰে জীৰ তাৰে তোবা তকনীফ লৈ হুখ দেৱহ। জগম গদ্রমোহনকৈ খণল সিলে কাজ কিছু ল। হুদা শিক্ষকক বীচী বহল পবিৰাব তঁ প্ৰতিঘটিত ভাগে গেন ছেননি। কেশা লে হোগত, জঁ সবসৰতীক বীচ ভুমি সৰখা ভুমি লৈ বঁচি তঁ কেকব বঁচি। খণল দবৰজজাপব জোকক আৰাজালী আ খণলো এঠাম আএৰ-জাএৰ গদ্রমোহনক বহৰে কএল। পঠন-নিখন বহল গামক জোক গদ্রমোহনকৈ কাজক ভাব দিখ নগনি। খেতী-পখাবীক সমথ আ ওকবা কৰিক নুমি তঁ জোক পুছএ নগনি। সমাজমে স্মৃঠো কেশা বীচন জাএ তখনি তঁ মলিগা-তীৰ্থ বঁচিলে কিছু জকবতি পড়ৰে কবত। তৈসগ খেতী কৰিক তবীকা মেহো বুমএ



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पड़त, जूँ से ले रूमर तँ लोक अलले कहत जे मान्छेबक रैथी तन्छेब भ२ गेल । तगले जूँ सोनहरी ले तँ टोअरीओ सत् ले बहत तँ सोनहरी नुठो आँखिक सोमनामे केना देखत जाएत । ओना शोथीओ-पत्रा प्रमाणिक अछि द्वा तेतरैसँ काज चलेरना बहियेँ अछि । जेना राहगण्डनक कण लेखा रँदनल सोमनाक कण-लेखा रँदलि जागत तेना तँ शोथी-पत्राक तानी-भवनी ले रँदलेत, तँए किछु आरौ पठक जकवति अछि । ँद्रमोहनकेँ मसमे उठते रूमि रिचबले, रिचबिते बुगोन-गतिहास दिस रँदन । द्वा प्रम रूमि गेले दूक सान-मासक हिसारमे मनमास । तीस सानपब होए । जेकब कोला मोजले ले छे, जखनि पुजा-पाठ, पारनि-तिहाब हेरै ले कवत तखनि खेती-पखावी केना कएन जाएत । द्वा रिचाबले केकवासँ जाए । भूमि छेदन अथवा भेन । द्वा भूमि तँ देहो होए, मला होए । समाजक निवयोत समाज होए । तगमे समाज तेहेन टननि जकाँ भ२ गेल अछि जगसँ पवदा रँगर कर्ण अछि । घोब-मछी भेन मसमे ँद्रमोहनकेँ उठत जे अलले दुध-दही फुष्टाएँ आकि घोब-मछी, तगसँ नीक जे दुधे उठा क२ पीर जाग । सरहक मदी भ२ जेते । रिचाबमे मला मणि निर्णय क२ लेनके जे जेते रूमन अछि ओ रूमनाहा भेन रौंकी रिष रूमन भेन, दू रात लोककेँ कहलै । जे मस फुष्टे से मणि कवत । द्वा नगले मसमे दोसब पका नगनि । ओ ङ जे रूमरौ तँ एक बंग ले होए । कोला दोसबाक दूहक सुन होए तँ कोला कितारक पडन तँ कोला अपना हाथे कएन बहै तखनि तीसुमे केकवा की कहलै । हबि अर्गत हबि कथा अणत्ता कहि वाम-वाम क२ जिनगीकेँ वामरौ रँना सामाजिक लोक ँद्रमोहन रँनि गेल ।

लोकवीक अतिम दस रँथक रीट पिता-प्रयामोहनक जिनगीमे उठान एननि । पाँट सन्तानक रीट परिवारमे तीसु रैथीओ आ जेठ रैथी-ँद्रमोहनकेँ रिखाह-दुवागमन क२ निछेन भ२ गेल छना । गामसँ पोड्दे हष्ट दोसब गाममे हागसकुन रँगले रिषमोहन मैट्रिक पास क२ लेल छन । एका-एक पौतानीस कपेआक काजक मुनयो हजावमे रँदलि गेननि । रैथीक मसमाणा शिक्षा लेन छदए पोलि देनथि । एते जकब केननि प्रयामोहन जे ँद्रमोहनसँ सेहो पुछि लेनथि । सोनमतिआ ँद्रमोहनकेँ प्रमक उतर दगमे सिठे ले नगले । मस कहनके-

“अणकब दलि-टाँव अणकब गी हमा पबसमे की । जेठ भायक माण-मार्दि तँ अणले रँगरै पड़त । से तँ अणके मिले भेष्ट बहन अछि । एते हनबुक माष्ट तँ रिनाओ खुनि सकेए, मसख तँ सहजे मसख छी जे पातान खुनि जौमठि गाडि सीमाकन क२ नगए ।”

जलिा पिताक उतरासक प्रेषणा आ सहयोग तलिा भागक पारि रिषमोहन एम.बी.ए. केनक । एम.बी.ए. केना पढाति रैकक मेलजबक प्रेजुएँ कया रंग रिखाह भेन । आमजन जकाँ रँगनाएन जनक जिनगी ले होगत । चरित्रिक प्रमाणपत्रक कपो-लेखा रँदलि जाग छे, जेना रैक-कावथाक रीट चरित्र निर्माण लेन परिवारमे लोकवीक आगमन भाग जागत अछि । लोकवीक आगमनपब रिषमोहनक रिखाह प्रयामोहन कवा देनथि । रिखाहक किछु दिस पढाति रिषमोहनकेँ भोगानक रैकमे लोकवी भ२ गेल । नीक दवमाहा नीक सुनिधा । द्वा सुनिधो तँ सुनिधा छहै ।

जहियेसँ प्रयामोहन सेरा निरृत भेना तहिये हवाएन-भोथियाएन रिमारी सत आरि दारै नगन बहनि । जेते दवमाहा बहनि ओ रूँष्ट क२ अहना भ२ गेल बहनि । ँद्रमोहनक रैथे-रैथी पठ-निथे, रिखाह-दाण करै लोकब भेने जागत बहनि ।

असगले दवरैजजापब रैसन प्रयामोहन पलीकेँ सेव पाडनथि । पतिक अरौज सुनि बाधा नगमे आरि रँजनी-

“की कहलौ ?”

जेना हाबन-माबन-थाकन रँठेली कोला गाड नग रैस जिनगीक दू जेव पकडा ते बगड । ए नले तलिा प्रयामोहनक स्थिति छुनि । परिवारक जे माण-प्रतिवठा एक जोषी पानिक अछि ओ केना



ऊनठौ क२ ऊनठौ देरै । केलेस अतिथि दररंज्जापव ठंता, पतिगान कर्णस हएत । दूदा जूँ ले रौज्जरै ठँ पुवाएरै केतएसँ । अपले रिमावीसँ प्रसित छी जेतेत अन्न-पानि ले खाग छी तगसँ रैसी दर्राग खाग छी । अथनि धवि जे भाव रौंठी गण्द्रमोहनक काणहपव ले आरैए दिख देनिधँ ओ केना समहारि पौत । दूदा नगने मसमे उठैते प्रयामोहन रँजना-

“दु मान रिष्णुमोहनकेँ लोकरी भेना भ२ गेन, ले कहियो गाम आएन आ ले परिवारवक नीक-अधना पुढनक । दूदा... ? ”

पतिक थकथकएन पति देखि बाधा रँजनी-

“जाधवि सामर्थ्य छन ताधवि अगना जकाँ परिवारवक केनिधँ, दूदा आरै ले ओ सामर्थ्य बहन आ ले शिकति, तथनि तँ जे अछि तेकरे काणहपव ले दिख पडत । से जूँ ले देरै तथनि अणहवाएन माए-रौपक तीर्थछिन केना हएत । तगने तँ त्रैरुफुमावक पवीछा निख पडत किल ? ”

पलौक रिटाव प्रयामोहनकेँ जूँटनेसि । दूनु रौकतीक रीचक रात तँए ले गण्द्रमोहन किछ रौज्जाए चाहि छन आ ले पुतोहू । रिष्णुमोहनकेँ पत्रक माध्यासँ भैँठै कवए कहनथिन । एरौसँ रिष्णुमोहन नामकाव केनक ।

रौंठीक अमहयोग देखि प्रयामोहनकेँ अगन केनहासे दोख भैँठनेसि । कहूना घीटि-तीडि मान भविक अगाति-पछाति आठ रँथक रिछे दूनु रौकती मवि गेना ।

अथनि धवि दूनु तैयावी गण्द्रमोहन-रिष्णुमोहनक रीच दु अणग-अणग समाज रँनि गेन छन । गना गामक समाजसँ रौहवक समाजक डारि हूँठन दूदा दूवी एते रँनि गेन जे समकफुणव आरि गेन । मान्नुवक समरुणक संग रितागीय तेते हित-अपेछित रिष्णुमोहनकेँ रँनि गेन छै जे अणन मानक छुछीए हवा जाग छै ।

गना रिष्णुमोहनक रिखाहमे प्रयामोहन नगद-नावाया न२ क२ रौँकमे जमा ले केले बहथि, दूदा तँए रिष्णुमोहनक नामे रौंठी-जमागक नाठपव जे मान्नुवक परिवारवमे रँजठै रँनि गेन छन ओकर हकदाव तँ रँनियेँ गेन छन । तोपानमे जग दिन डेवामे रिष्णुमोहन पहुँचन, तीणु कोठवी तँ भविसे गेन बहे । केना ले भविसे, जग परिवारवक रिखाहक रँजठै पटिस नाथमे छनि बहन अछि तगमे जिनगीक उपयोगी रसत केना छोडन जएत । अथनि धवि रिष्णुमोहनकेँ तेना भ२ क२ कोना जिनगी ले समाएन छेलै । ले समाएरै भेन, जहिला किमान हूँअ आकि रेपावी आकि लोकरिहावा, आर्थिक सुत्वक हिसारसँ जिनगी रँना जीरण धाका करैए । अणुआएन-पडुआएन मान भविसँ न२ क२ जिनगी भविक किछ आरुण्यक रसतक पुति मान्नुवसँ भागए गेन बहे । जहिला त्रौण कममे पात्र अणन, मातुरिक होउ आकि बाज्जनी आकि तामनी, मेकअण केना पछाति मठैजक अधिकावी तँ भागए जागत अछि । रिष्णुमोहनकेँ मएह भेन । एक तँ गहन परिवारवक नडकी संग रिखाह भेले जहिला परिवारवसँ हवाएन रिष्णुमोहन तहिला अणुभरि पणै । गना लेखा अथनि धवि माने रिखाहसँ पहिले धवि, कोलेजक डारा बहनी दूदा परिवारवक फिया-कनाप देखले अणन जिनगीक उंगवक अणुभर तँ भागए गेन बहनि । गना कोना हवाएन रात पोडरे छी जे रिखाहसँ पहिले, रौंठी भनहि पिताक छत्रछायामे बहि ले रूमि पाँरैए दूदा रौंठी तँ सब जनिसे बहेत जे हमवा एँ घबसँ जेनाग अछि । आन घबकेँ अणन घब रँनाएरै अछि । तथनि तँ घब रँनरौँके केलेस कावीगव अछि निरुव करैए तैपव । जहिला सब शिकतिकेँ हाथमे बथि कवए छहि तहिला लेखा दूनु परिवारवमे केनसि । समेओ अणुकुन । मए अणुकुन ङ जे उंगवक परिवारवसँ आएन बहले उंगव चउरैमे ठनाण बहेत । ठनाण ङ जे जहिला सब आणु रँठरैकेँ उचित उदम रूँनेए तहिला लेखा किए ले रूमती । अथनि उंगव श्रेणीक सुखागत मरुसँ ले कवर तँ सुखागत की भेन ? भनहि अणमान ले कहरै दूदा सुखागतो तँ बहियेँ भेन । परिवारवक डोवकेँ लेखा एँ





तवहेँ पतिकेँ खीट धकिया लल जे रिशुमोहन दिस-वाति रौखाए नगन । एक तँ लैकक लोकवी समेपव आहिस पणूचर अछि, नहाग-खाग, बसता-रौठक समथ अपन । तेसंग काजक भाव एते जे एको छिण्ट देवी लेल काजक समादनमे कमी गुत जे अतिरिक्त समेमे पुररैए पडत । खेव जे होउ, रिशुमोहनक साथ तँ आहिसमे छेते ।

लोकवीक शुकक सानमे रिशुमोहन एक-आध रैव गाम एरौ कएन दूदा बसे-बसे एक नर समाजक पकड आ दोसव गाम-समाजसँ रिदोह हुं नगले । भाग्य गेले । रिदोहक अणुकुन परिस्थिति रैनि गेन बहे । अणुकुन ङ जे, सानमे मात्र पटिस दिसक डुष्टी भेटै, जेकवा डुष्टी ले मानन जाग छेलै । एक तँ गामक बसता, सरावीक अशुविधसँ तीन दिसक, दोसव गाडी-सरावीक बसता भविष्यो आ उकडु उ होगते छै । तगमे छेठ-छेठ रौछाक चनरँ आरौ भावी होग छै । दोसव जग नरँ समाजमे आगमन भेल छेलै ओगमे दू तवहक एहेन भूमि छेलै जे भवपुव उरैव छेलै । ओ भूमि छन आसुवक परिवारक समरूपीक संग समरूप रौठरँ आ दोसव छन लैकक संगीक संग । दूनुक रौट एहेन उत्सरी महोन रँगन बहेत छन जे पटिस दिसक डुष्टीक पते ले पाँरि पले छन । किछ मोडीकन सेहो चनि जाग छेलै । जग सतसँ गाम छुट गेलै । ओना अपन भाव हठरँ दूखले गण्डमोहन पत्रक माध्यमसँ जाणकारी देते छन दूदा जलिया काजक अणिछारनारकेँ वग-रिवगक रौनाहा फुडत तलिया रौनाहा रौना रिशुमोहन खेप जागत छन । ए तवहेँ पनवह रैवथ रीति गेलै । ओना पनवह रैथक रौट रिशुमोहनक डेवामे बसत-जात, गलेकुष्टीक रसत, रतन-रौसन गतुआदि तेते भ२ गेन छेलै जे अपन साते कोठवीक मकाष भवि जकाँ गेन छेलै । अपन मकाष, अपन गाडी भाग्य गेन छेलै । लोकक आँर-जाँर बहल, मकाषक डुगवमे पहिल समियाणा तेकव पञ्जाति डुगवो मकाष रौनाहरँ जकवी भेलै । कियो जगणपव रौस जिणगीक बस-बहस्य रूनेत तँ कियो तीन तनना-पँट तननापव, दूनुक उदस एक केना ।

रौटमे एकठी आरौ भेल । भेल ङ जे गामो आ अगलो-रँगनक मिडन सकुनक शिक्षक दस दिस घुमेक रिटाव मरु प्रदेशक केननि । भोगानसँ यात्राक आबसतक रिटाव केननि । गौखी रिशुमोहन तँए अशुविधा नहियेँ हेतनि । तेसंग गेले रिशेय जितनासा जे तीन दिसमरँव १५+४ गसरीक महूवाएन लौस घण्टाक हन-रुहन देखरँ सेहो छेननि ।

दसो गोठेक रौट भोगान सँठेन उतवि रिशुमोहनकेँ हेष केननि-

“हम सत घुमेक रिटावसँ आएन छी ।”

गौखीक रौट सुनि रिशुमोहन जरारँ देनकनि-

“अखनि हम भोगानसँ अस्मी किलोमीठव हठि मिनक एँठाम छी । लैकक डायलेक्टसँ न२ क२ सत छथि । तँए ले किछ क२ सकरँ ।”

ओना दसो शिक्षक मिडले सकुनक बहथि दूदा रिटाव दस वगक बहथि । किणको रिटावमे सँम-सँम लेली अपणामे एकमत सेहो भाग्य जागत, दूदा एकाव घण्टी घमर्थनमे चनिये जाग छेननि । रिशुमोहनक उतवक प्रतिफिया भेल ? पहिल शिक्षकक रिटाव-

“अस्मी किलो मीठवपव बहए आकि सए किलोमीठवपव, दूदा अँठेक जोगाव तँ क२ सकै छन, सेहो कलँ केनक ।”

दोसव गोठेक कहरँ-

“लोकविहावा अणका हाथक भ२ जाग्य तँए अपणा जूतिये चनरँ कठिन भ२ जाग छै । अपणा सत अपणा भरोसे ले आएन छी, रौडरँटा याँ रिशुमोहन गौखी छी अपन समाटाव कहलिँ ।”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अहिना दसो गोठेक रिटाव दस बंगक आएन । अतमे तँग भेन जे अलने रँक-रौतमे समए गमाएई उँटित ले । कियो अगना लेन करेए, सबकेँ अगन-अगन जिमगी छै, अगन-अगन काज छै ।

सहमति रँगिते नहा-धो कऽ सँशेसनसँ निकलि हेठनमे खेलाग था ठैमणु पकडि लौस कावखाना देखथ रिदा भऽ जाग गेला । तीण दिनसँर उँहिस सए टोवानी गसरीमे मिथागन आगसो सागलठे लौसक किमर भेन जगमे दु नाथ पटाम हजाव लोक मवन । जहिना ७ अगसत १९४३ गसरीकेँ जापानक नागामीकीमे आ हिवोमिमागव घटना भेन आ तीण पीठ ी तक बुला-लंगवाक जन्म होगत बहन तहिना ल भोपोलोमे भेन । साँटी-सतुफ, अन्नगुर्णा देरीक मदिब, मिथा उँठ (पहाड ी घाँठ) हाँडी खोह, जे तीण सए मीठव गहीव छै, तेड घाँठक टोसिठि जोगिणी मदिब, दुर्गरतीक संग्रहालय, सागक रँगिया जे बर्मा आ मोषलद्रा नदीक उँदुम सखन छी, खजूवाहो घुमेत-घुमेत दसो दिसक छुष्टी रीति गेननि । सकुलो खुजेक समए भेल सभ कियो गाम टलि एना ।

गाम एना पछाति रिषुमोहनक काज समाजक मँचपव आएन । जेते झूँह तेते रिटाव । झूँद भेन ३ जे जहिना बाज मिठाग जिनेरी आ झूँदलीक धेनी कटड ी घाँडक आकि तेनक जोहियामे पएव बथिते आँगन-अगलय छुरि प्रणाम कबिते शिकति पारि उँगव आरि अगन कप सजरेँ तलिना रिषुमोहनक रँरहावक प्रतिफिया भेन । एहेन ले भेन जे पुरी जकाँ जोहियाक मठौठे पकडि छनछना, खेलाग पुँति करेत । एक सँवसँ समाजक सँव सँव-सँवा उँठन । जे समाजक सँग जेहेन रँरहाव कवत ओकरो सँग समाज ओहल रँरहाव कवते । जघन्य अपवाद जँ समाजक रीट सिँदित ले हएत तँ कागजक रीट निखन काबुल-कायदा कथी कऽ सकैए । भेन ३ जे रिषुमोहन समाजसँ अघोषित रहियसत भऽ गेन ।

जहिना जेरुँथा रँथा भेल माडक अराव चले छै तहिना एनएच ३१क रँगल गामो-घबमे अराव टनन । जग मोभारक गसुद्रमोहन छथि ओ नुँठेरें कवता । झूँदा से ले भेन । पाँटो कष्टी घवाड ीमे अठ ीग कष्टी पाडल डेयावी केतो रँधा ले भेले । कावरीवी गमाणदाव भेठननि । एक तँ घवाड ी तेपव घब । निटो पजेरी उँगव चदवा घब, कोठा भारक सँग घवाड ी भारमे रिँकाएन । कवीरँ दु कबोडक सौदामे सरी कबोड गसुद्रमोहनकेँ हाथ नगननि ।

जमीनक सभ काज सम्पन्न भेना पछाति रिषुमोहनकेँ उँड्जती जाषकावी भेन । डेयावीक हिन्सा, तद्धमे मरौसी जमीन । तेसँग गसुद्रमोहनक सरी कबोड पाँट कबोड रँगि गेन छन । भुख तँ भुख छी, ले तँ रँके कि दिरानिया भऽ जाग । जगमे कपेखाक ठेवीए बहे छै । तीण दिसक छुष्टी नऽ रिषुमोहन ३ ठेकना गाम रिदा भेन जे पँहुँटिते डेयाकेँ कहरँनि, रँष्टि जेरँ । ले तँ समाजकेँ रँसा रँष्टि जेरँ । एक तँ ओहिना रँकेक दवमाला, तेपव कर्मिणक सँग उँपहाव पारि रिषुमोहनक टमकन मस । तेपव पाँट कबोड सृनि मसुरी आरो रँठ नके । जलिना पनी रिटावक तलिना समाजक लोक, उँपकाव जोडि अपकावक रिटाव कि देतनि । एतरेँ कि, रँकेक सहाएँ गामक सहाएँ ले ? ओही गामक रँष्टि ल भोपोलोमे रँकेक सहाएँ रँगन अछि, तोडुँमे ओहेन बाजक रँसी छी जगमे रँसाणी-शैतानी छुगहे ले ।

३ राँत रिषुमोहन रूमि ले शौनक जे सगड ी भेल गदहो मारि-मारौरनि कवा दगए तँ कि गदहाक रीखा उँपष्टि जाएत । जेते समाज तेते बंगक गदहा । जता उँठरँसँ ओठेमेष्टिक मशीन धरि दसठी गदहाकेँ मिना रँगा देन जाग छै आ पहाड ी स्फुरमे पाखव नादि घुमरँत बहे छै । तेतरेँ ले समाजक षारी पकड ीक थर्मासिठव रँगएँ सेहो सीखनहि छन । गाम कि अखला शहब-रँजाव भेन अछि जे फँठका-फँठकीमे (जूखा) कबोडक सौदा भऽ जाग । हजाव-रँजाव रँसीसँ रँसी भेन अछि तगमे जँ किछ आगु रँठि रेपाव रँठ एत तँ अलने मला-प्रतिस्था रँठि जाएत आ कावरीवी असाणीसँ टलि जाएत । मला गराली दगये देनक ।

रिषुमोहन गाम आएन । गामक सीमाणव पएव दगते रिषुमोहनकेँ अलतखाव जकाँ रूमि पडले । मसमे उँठले जग समए पडले पितक देन खर्चमे डेया-गसुद्रमोहन एकोरेव नकावि ले



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सकारि जेवनि । ओझमे तँ हुनकब हिस्सा छेनहिहै । मसमे उठते जेना कस्युठव हिसारि जोडते तहिना जोड । गेलै । हब मसमे भेलै जे अलले मस रौआगए । ओग दिन समिया परिवार जन, अथनि हिस्सेदार छियनि । दुनियाँमे अपन हिस्सा के जोडनक जे जोडरँ, पाँट कबोड स्वर्णौ, चाबिओ कबोड तँ सत हेलै कबत । रँड कबता आ मगपत खा क२ कहता तैयो तीन कबोडसँ गिटाँ बहियेँ हएत । मस-मस हिसारिक गरो अँरैत आ ठैमगुसँ बमतो तँग करैत ।

दबरँज्जापव रिश्यामोहनकेँ अरैते गण्डमोहनक बजबि पडन । ओना रिश्यामोहन अपन अदा अदए करैत एव डुरिँ गण्डमोहनकेँ प्रणाम केनक द्दना बजबि अँकड एन बहै । जहिना अँकड एन चाँडवक अँकड होशियाबि लसमीआ अदहन नगरैसँ पहिल निकालि तैत तहिना गण्डमोहन बजबिसँ निकालि जेनक । द्दना कि ओ रिमबि गेन जे अपन हिस्सा प्पेठ काँटि जग भाएकेँ पट्टनेक, रएह भाए केते प्पेठ काँटि परिवारकेँ देखनक । अपना पाडु रँहान अछि । ओ रँहान भेन अछि तगसँ हमाब ? तथनि तँ ओकरो घब-घवाडि छिँहै, परिवार अछि ।

थेना-पीना पछाति रिश्यामोहन गण्डमोहनकेँ पडनक-

“तैया, एन.एच.रँना पाग की भेन ? ”

पागक नाँ सुनिते गण्डमोहनक मस ठमकन । ठमकिते रँजन-

“देखिते डहक जे घवाडिओ घुसुकि गेन । खबना घवाडिक आगुसँ तेना कँटि गेन जे घवाडिक कपे रिगार्डि देनक । रँहन सडकक काजे एहेन होगए जे केकरो नाक कँटैए तँ केकरो रँनरँए । खेब जे होड, जे पाग भेँन तगमे देसब घवाडि कीनि घब रँनरँत खँटि भेन । ”

रिश्यामोहन-

“सत खँटि क२ देखिँ, हमाब हिस्सा ? ”

गण्डमोहन-

“तोहब हिस्सा तँ छेरै कबह । पाँट कष्टा घवाडिमे अठ ग कष्टा पडन, ओते तँ हमले भेन किल ? ”

“जेते पाग अहाँकेँ भेन ओते पागक टिज बहन । ”

“टिजक उदए-प्रनए अहिना होग छै, जँ मे लै बहन तँ अठ ग कष्टासँ कय खोडते भ२ गेन । ”

रिश्यामोहनक मसुरीमे धक्का नगन । द्दना उतरौ तँ हनब्रुक बहियेँ अछि जे धडफडमे किछु भ२ जाएत । रँजन-

“तैया, गहो तँ नीक बहियेँ भेन जे, नीक अहाँकेँ भेन अपना हमाब बहि गेन । ”

रूमरँत गण्डमोहन रँजन-

“देखहक सबकारी काज छिँ, सत काज पडुआएले छेँमे चले छै । तैगाम जँ सतक भ२ काज लै करितौँ आ रूँडि जागत तँ केकब रूँडते । ”

“हमारो तँ जाणकारी दगतौँ ? ”

“जहियासँ गाम जोडनह तहियासँ रूमिओ क२ की केनह । ओहेन भाबी तमकम भेन जे घबक देरौन बाँग-रौंग भ२ गेन, तैगब रँडि आरि तेना-मसाडनक जे सत पवाणी गिनि ओसाबक



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

टोकीपव रैस सवह रिटावि जेजो जे सत तुव सगे मवरै । कियो जरीत वहरै तखनि ल  
दुखक दुख हवत, जै सत सगे चलि जाएरै तखनि के केकवा जे काषत । ”

सोखरिक मारै, जमीन ले पाषि रिषुमोहनक ऋष जगत । रौजन-

“अदहा हमर डी हम नगये क२ वहरै । ”

डोष्ट भाएक रात सुनि ङसुद्रमोहन सकदमा भ२ गेन । रैकाव रँग भ२ गेलै । मसक रैथारै  
मसमे मसोवि मोरिया देनक । रिषु किडु रैजेत ऋडु १ गोति परिवारक भूत-भरिस पठए नगन ।  
पठए नगन ङ जे गाम डोडा जे रौहव रैसि गेन ओकरा की मानन जाए । ऋदा मालेसँ पहिल  
समरँषु तँ देखए पडत । कियो गामक रैटि रौहव कीनि घब रैना अगला बहै आ भड १ नगरै ।  
कियो गामक उँतपादित पुजी खडका उँतपादित पुजी ठाठ क२ नगए । कियो रैकमे सुदिपव नगा  
दगए । ऋदा रिषुमोहन तँ से ले केनक । मस ठमकले, ठमकिते ठमठमाएन । ठमाठते जेना  
कोला सौष-गाडु जगह रैदनरै सरीकारि नगए तहिना ङसुद्रमोहनक मसमे उँठन, परिवारसँ समाज चलेए  
समाजक गति परिवारमे निहित छै तैठाम रिषुमोहनक की छै, जै से ले छै तखनि तँ गाम-समाजसँ  
हवाएन-भुतियाएन बहन । हवाएन-भुतियाएनक की हरो चलि । एक तँ ओरुना रौहव रैथक हवाएनके  
कशेपुत रैना मरैया देन जागए, रिषुमोहना तँ सहए भेन । अण सनोदव भाए डी, जकव डी, ऋदा  
दुसुक जिनगीक समरँषु कहाँ अछि । ले खाग-पीरैक आ ले बहैक । ले रौन-रैटाक पठ १ग-निखागक  
आ ले रैव-रैसावीक सग परिवारक काजक । हमारो रैठी अछि, सिदहा द२ अस्तुवासँ जगम केशे कठी  
ऋडुन करेलौ । ओकरो रैठी छै नाखसँ डुपले खट केनक । अण रैठी पनवह रैथक उँमेवमे मैष्टिक  
गाम केनक ओकर दमे रैथमे कोलज पडूँच गेन । जेते ङसुद्रमोहन पाडु उँगष्ट परिवार दिस तकेत  
तेते ओमरौठमेमे पडन जागत । अन्तमे सवह रिटावि उँठले जे पहिल परिवार अणग हवत तखनि  
ले हिस्सा-रैखड १क प्रभ उँठत । जाधरि से ले भेन तधरि तँ परिवार चनन । रौजन-

“रौआ, आरैशमे ले आरैह । डोष्ट भाए छिअ, रूमा क२ कह छिअ । पहिल ङ क२ जे  
परिवारकेँ हूँ-हूँ मानन जाए आकि समनित । जै समनित मानरैह तखनि तँ परिवार चनन,  
जै अणग मानरैह तँ कहिससँ मानरैह से पहिल परिडा जेरैह तखनि ले ? ”

ङसुद्रमोहनक रिटावक कोला असवि रिषुमोहनकेँ ले भेन । जहिना कियो आगुमे रैसन बहै  
ऋदा मस मेनामे घुमेत बहै छै, जेरोसँ रैजना पछाति ले सुनि पलेए तहिना रिषुमोहनक मस  
करोडक केनकनेशिन करैत । दर्जना नरका गाडु १ कीनि बोडपव दोगा देरै । भोगानक समाजमे  
भनहि ले ऋदा भोगानक परिवहन समाजमे तँ अण उँपस्थिति दर्ज कवागए जेरै । रवह ले  
नतड-त-चतड-त भोगानक समाज रैगत । असविक टुकन मसुथकेँ डारिक टुकन रौनवक गति होग  
छै । पाडु हठरै कावता हवत । रौजन-

“भैया, जग रिटावसँ आएन डेलौ ओगमे अहाँ रौधा उँपस्थित करै डी, कियो अण जिनगीक  
मानिक होगए । ”

रिषुमोहनक रिटावकेँ सरीकारैत ङसुद्रमोहन रौजन-

“है, होगए । ”

रिषुमोहन-

“तखनि ? ”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“रैकतीक माहुरिक कष पविराव छी । रैकतिगत रिटाव माहुरिक कषमे रैदनि जाग छै,  
जगमे सरैहक जिनगी देखन जाग छै ।”

एक दिनोक रैष्टमे आगु-पाहुक दिशो रौध असागीसँ लोअ छदा रिपवीत दिशोमे अरुनर भ२  
जागत अछि । रैटाविक कषमे दुनु रिपवीत दिशोमे । तँए सहमति हएर कर्छन । रिष्णुमोहन रौजन-

“तैयो, सब दिन आदव करैत एजौ, अखला कह छी जे ओल्ले पविस्थिति ल रैनि जाए जे  
थाणा-पुनिस दवरैज्जापव आरैए ।”

रिष्णुमोहनक रौत सुनि अहुरमोहनक मन हसकीअएन । रौजन किछ ल । मनमे उठलै नककछी  
दुसँ नाकरैनाकेँ । आदव करैए आकि समाजमे नाक कषी देनक जे समाजक प्रबुद्ध रक्षा युमेले गेना  
आ टोव जकाँ अरु भ२ गेन । सह आदवक रौत करैए । छेष्ट भएकेँ पविरावक अंग रूमि अण  
रौन-रैटाक हिस्साकेँ जेकवा पाहु गमा देलौँ सह आदवक रौत करैए । हवएजो-तुतियाएन जँ  
अरुठीओ दवरैज्जापव आरि जाग छथि तँ एक लोष्टी पागिक आग्रह कविते छियनि आ पविरावक अंग  
भेन ओ । हदा हाथक आंगुरो तँ अण महत बथिते अछि । नीक हएत जे समाजकेँ मनि रैकतीकेँ  
समूह दिस रैठ । दिअ । रौजन-

“रौआ, थाणा-पुनिस अरैत-जागत बहत हदा पागक खेत-पखाव केतो ल जएत, जएह  
पागमे बहत ओकरे हिस्सामे बहते । बृह-रैरा जकाँ केतए जाएत । नीक हएत जे जल्लिा  
समाज हमार छी तल्लिा तौरा छिअ किल, समाज जे कहता से मनि जेर ।”

अहुरमोहनक रिटाव रिष्णुमोहनकेँ जँउन, जँटिते रौजन-

“तीन दिनक छुष्टीमे अएन छी, काहि समाजकेँ रैसा पाग-पागक हिस्सा रौष्टि जेर ।”

रिष्णुमोहनक रिटावकेँ अहुरमोहन टुपाटाप सुनि जेनक । समाज दिस हियासि रिष्णुमोहन मोछ  
नगन । केतेमे सौदा पठत । एहेन तँ लै हूअ जे घासीसँ रैहतोणी भावी भ२ जाए । कोला कि  
बाज-पाठक नगड । छी जे दखना-दखनी हएत । पुजीक रिवाद छी पट्टिस प्रतिभेत तक पुजी नगोन  
जा सकेए । केष्ट-कचरवीक भाँजमे जाएर रूचि रैकी हएत । अकसमे उँडत टिनहोषि जकाँ डुपलसँ  
नुमि जेत । सेहो नीक लै । पाग कि कोला शैव रैजाव छी जे घष्टनाक दाम-दिगव लोअ छै । पाग  
छी खुदवा-खुदवी कारौरावक । सहवि क२ रिष्णुमोहन पाग दिस रिदा भेन ।

हाग सकुनक रंगी सुर्यमोहन छथि । पुवाष रंगी । महाभावत केतरौ पुवाष हएत तैयो रंग  
पुवरेँ कवत । सुर्यमोहन रिग्यानय जेरौक तैयावीमे जूठन बहथि । नहागले डोन-लोष्टी लल कनपव  
पहुँउन छना । रिष्णुमोहनकेँ देखिते मन भगभना गेननि । की एहेन मन्त्रक हँह देखरै नीक हएत ?  
हदा हहोँ युमाएर तँ नीक नहियेँ । जँ कही अणल आदति जकाँ रूमि निअ जे हल्लौँ हँह टोवा  
जेनक । आँधि उँठा रैजना-

“रिष्णुमोहन !”

रिष्णुमोहन-

“हँ भाय, तौरसँ काज अछि ।”

काज सुनि सुर्यमोहन रैजना किछ ल हदा मल-मल रिटावए नगना जे कोष काज छै । ल एक  
पाग-समाजमे बँह छी, ल एक रैरमासँ जूउन छी आ ल एक पविरावक छी, तथनि कोष काज हेते ।  
तँए पुष्टि जेरै नीक हएत । हदा जग काजक तैयावीमे छी, रीटमे जँ दोसव काजक चर्ट उँठाएर तँ



अखने अपन काज धरिया कइ घटिया जइत । ले रूमल मसमे खुँ-खुँ रैनि गेल सभ काजकेँ  
खुँ-खुँपैत । अँपैने करैत रँजना-

“अधकअ गनएन छी, तारे दवरँजजापव रैसह । दू गोले थोरौ कवरँ आ रीचमे गणौ कइ  
जेरँ ।”

सूर्यमोहनक रात सुनि रिशुमोहनक मसमे ओले आशा जगत जेहेन लोणक मेरियत लोक  
दगए । मुठ-मुठ रँजेले आ करैले दिन-वाति तँ पड़ले बहए, खागकान किए कियो कवत । दूदा  
थाएँ तँ गडरँड हएत । तैसंग गहो भेल जे केकरो गहरो कान नगमे ठाठ बहरँ उँटित ले ।  
जखनि काजे आएन छी तखनि काजेक महत ल मास पड़त । जौ से ले काजक रँव जँ धरँड ।  
जाएँ तखनि तँ काजेमे रिगलस हएत ।

दवरँजजाक ओसावपव बखन कवमीपव रैस रिशुमोहन अपन सतबँजक गोष्ठी मस-मस पसारिबे  
हुन आकि सूर्यमोहन डोन-लोष्ठी बधि, टावपव धोती पसारि डेठौ येपव सँ रँजना-

“दू गोले छी, तँ दूष्ठी थारीमे पकल आँ ।”

सूर्यमोहनक रात गनौ सुनि कइ खनि देनखिन । सूर्यमोहन रूमि गेना जे समाद पहुँच गेल ।  
दूदा रिच्छेमे रिशुमोहन रँजना-

“हम ले थाएँ, अखनि थोरौक गड्ढा ले अछि ।”

रिशुमोहनक नकाव सुनि सूर्यमोहन दोहबरँते रँजना-

“एकेष्ठी थारी आसँ ।”

कहि रिशुमोहनकेँ पडनखिन-

“कोन काजे आएन छह से पहिल रँजह । जँ छोँ-छीन हएत तँ रिच्छेमे कइ जेरँ ।”

जहिना कियो बचनकाव अपन बचनक सरिसुतव भूमिका निखेत तँ कियो अपन बचित बचनकेँ  
भूमिकाक प्रयोजन ले रूमैत तलिना रिशुमोहन टोहदी रँहते रँजना-

“भाय, अपन सभ तँ एक हाग सकुन तक पडल छी, हमर दिन घटन तँ आष बाजमे कमाग  
छी तोहव रँहन तँ गामेमे मोजसँ बह छह ।”

रिशुमोहनक रातक अर्थ नीक जकाँ सूर्यमोहन ले रूमि सकना । निःप्रयोजन रूमि रँजना-

“अखनि हमरँ धरँड एन छी तँ समेक हिसारसँ रँजह ?”

रिशुमोहनक मस अँकि गेल । तैरीच सूर्यमोहनक मसमे उँठनि, कहिया केतए हाग सकुनसँ  
निकनलौ । तैरीच गंगा धावक केते पानि रँहि सद्दमे चलि गेल, ज कथी कहए छहिए । माथक छेँब  
देखि ले बहन अछि । गामेमे हमरो घब-पबिबाव अछि एकरो छे, दूदा जखनि भोपान घुम गेलौ,  
ओगठाम तँ ओकलेष्ठी घब छेलै, तैरामक रँरहाव रिसवि गेल । तैरीच अदहसँ रँसि भोजन सेहो कइ  
जेननि । पबिडाक रावनिग घष्ठी जकाँ रँजना-

“मरँ दइ जे कहरौक छह से कहइ, ले तँ रिगानसँ थाएँ निछेन बहरँ तखनि कहिइ ।”

कहि लोष्ठी उँठा पानि पीरँ अधकव करैत रिशुमोहन नजविपव नजवि देननि । नजवि पड तै  
रिशुमोहन रँजना-

“भाय, तैरावीक पनटेती करैरौक अछि ।”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पणटैती सुनि सुर्गमोहनक मल ठमकननि । रात बुनेसँ पहिल रँजना-

“हम कि कोला गामक पंच डी । हाग सकुनक शिक्षक डी । किअ लोक हमर रात सुनत ।  
गामक मगड । दल पडा डुरै दुखारे मरगच छै, ओकर कष्टीक पंच छै ।”

रिष्यमोहनकेँ बुनेमे देवी ले नगले जे मंगी भ२ क२ ठारि बहन अछि । मल ममोडत  
राजना-

“भाय, तीनिसेँ दिक छुप्ये अथन डी, तगमे दोसब दिक रीतिये बहन अछि, तँए चाहे डी जे  
जनदराजिये काज निपठा मयेपब घुमि जाग ।”

रिष्यमोहनक रिचाकेँ ठेलेत सुर्गमोहन कहनथिन-

“परिरावक रीचक रात डी । एना धडफडले थोड हेतह । थैब हम मंगी छिअ तँए एते  
गठे छिअ जे सँमुगहक ममए देरैह । द्वादा अमगले ले, गाममे जे बुनबुक लोक छथि हुनको  
सभकेँ मंगोबि निह२ ।”

सुर्गमोहनक रिचाकेँ अण मयेसँ रिष्यमोहन मिनरैए नगन । गाममे जेते बुनबुक लोक छथि,  
मरैहक मंगोब तँ अमल बहिये अछि । द्वादा जँ अणले रिचाले चनरै तँ सुर्गमोहना कही छिठकि जाएत  
तथनि तँ आरो पहपेष्ट हएत जगसँ राबबक कबहव उंखाडरै भ२ जएत । उंखाडनहो उँमिया जाएत  
आ रिष्य उंखाडनहो पागिक तबक माँपमे मीबरेधु भेन बहत । तैरीच सुर्गमोहन कपड । पनीब  
मागकिन निकानि ओमबक निदुँ भ२ रँजना-

“जहना तँ बुनेत हेरैह जे मंगी भ२ क२ नीक जकाँ कान-रात ले देनक तहिला तँ अपला  
काणपब रात नथने अछि । जेकब काजक भाव उँठोले छिअ, जँ उँटित मयेपब ओकरा ले  
पुडरै, से केहेन हएत । तैयो एते कहे छिअ, सँमुका ममए देलिय२ ।”

कहि मागकिनपब चटा सुर्गमोहन रिद्यानय रिदा भेना । सुर्गमोहनक रैरहाव रिष्यमोहनकेँ जेते  
नीक नगक चाही तेते नीक ले नगन । द्वादा उँपेयो तँ दोसब बहिये छै । अपना काज रैबमे लोक  
गदहोपब चटले तैयाव होगते अछि । हएब मममे उँठले जथनि एते दिक पुवाण मंगीक एहेन  
रैरहाव भेन जे मंग ले बहन तथनि अणकब केहेन हएत । नीको भ२ सकैए, अथलो भ२ सकैए ।  
ओह ! दुनु भाँगक रीच कोला कि मगड । ममपँ अछि जे अणले मद्द उँपडरै, आपनी बुनारैत  
डी । एको गोठेसँ काज चल सकैए ।

मागकिनपब चटा ते सुर्गमोहन धडफड । गेना । खुशीसँ मल चटा गेन बहनि । दिक धडकन  
सेहो तेज भ२ गेन बहनि । एहेन लोककेँ एहल रैरहाव उँटित डी । गामक पुजी उँठा-उँठा लोक  
शेहब-रँजाव गटा बहन अछि । गाम जेते-क-तेते पडन बहि गेन अछि । आरै कोण गाम एहेन  
अछि जेकब राहवी आमदनी कबोडक ले छै । एक तँ दैरी थकोप दोसब मलखक थकोपसँ उँजडा  
बहन अछि । तबोथा जाँत जकाँ माँपब कीनमे गाडन अछि, द्वादा सभ हितैयीक मोहब गामेक गारि  
बहन अछि ।

गाम दिस रिष्यमोहनकेँ रँडत देखि अण्द्रमोहन सेहो चिनहोबि जकाँ थैह नगरैए नगन ।  
पहिल ममदिया कहनकनि जे ओ सुर्गमोहन ममपँब सहिरै एँठाम गप-मगप कले छथि । ओना ममदियाक  
रातपब अण्द्रमोहनकेँ मोनहनी रिमराम भेन, द्वादा अण आरो मजगुती दुखारे ओने बसते पाब सेहो  
क२ जेनक, दुकेसँ सुर्गमोहनाक मजबि अण्द्रमोहनापब पडन आ अण्द्रमोहनाक सुर्गमोहनपब, द्वादा  
रिष्यमोहन उँतबन मजबि ले शोमक । सुर्गमोहनक मोमनहसँ हँठते अण्द्रमोहनक अँराज काणमे  
मोरागनिक घँठी जकाँ थँठनए नगन । थँठनए अ नगन जे भोगानसँ घुमना पड्याति तबि ठाकी  
रिष्यमोहनक उँपवाग सुर्गमोहन सुना चुकन बहनि । जँ दुनु भाँग दु छेलो तथनि अणकब उँपवाग हम









## स्मृति

तीस माससँ किछु रैसोए दिगपव हरिषाथ भाय भेठेना । ओना उमेवमे भविसक चाबि-पाँट मास छोटै हेता दूदा तेहेन नछन-कवम छन्हि जे छोटैक कोन रात जे जेठोअस सभ भाय कहे छन्हि, तहिना हमसँ कहे छियनि । ले भेठै होगक कावण ३ ले छन्हि जे परिवारक ओमबीमे ओमवा गेन छथि आकि रैमबियाहे भ२ गेन छथि । आष तेयावी जकाँ सेहो बहियेँ छन्हि जे रँपौती हिन्सा-रँखा जेन कणहामे मोवा नठका सबकाबी दूआविउ धेल बहता । तेन ३ छन्हि जे परिवारक दारु४ कम तेन नर-नर काजो आ रिचावो तेना क२ पकड़ि जेनकनि जे पछिनछ सभ किछु तबिखा नगननि अछि, जगसँ घुमरौ-हरीडर कम भ२ गेननि । कम तेन भेठै-घाँट करै सोभारिके अछि । दोसव ३हो जे जहिना नर-रिचाव रिचाव जेन समए मँसोए तहिना नर काजो मँसिते अछि । दोहवी माँग तेन कर्षण रँदनरै कवत । सए तेननि । तेठैते मसमे उँठन जे आष जकाँ तँ ओहो तेयावीक रीट छथि, तँ बासा-कठोना हेरै कवतनि । दूदा दूहक स्वधी से ले कहे छन्हि । आशोक ओसाएन ओसक रूँष जकाँ ठप-ठप करै छन्हि । ओना एहना तँ होगते अछि जे अणन मसक रँखा-कथा अणका नग रँजले की । तँ अलले दूहोँ नठकाएरँ नीक बहियेँ होगए । दूदा से हरिषाथ भायकेँ ले बहनि । जेना बसे-बसे रँसियाएले जागत बहनि । एहेन मथितमे अणवरव किछु रँजरँ उँटित ले रूँमि प्छनियनि-

“हवी भाय, रँहूत दिगपव भेठेनोँ अछि । की माया-जानमे रँसो ओमवा गेन छी ।”

जहिना हनब्रुक फुनमे फनब्रुक फड फड ए तहिना ओहो निर्रिकार उँतव देननि-

“घब आँगनमे तेते नरका-नरका अतिथि-अतियागत सभ आरँए नगना अछि जे तगसँ छुपीए ले होगए जे केतोँ ठहनरौ-रूँनरौ कवरँ । तँ रँसो दिगपव देखनह ।”

हरिषाथ भागक टिक्रावीट रात नीक जकाँ ले रूँमि पेलोँ । दूदा दोहवा क२ प्छरौ केना करितियनि । अथनि तँ भेठैक उँपवके सौठ ीपव छी, चाहे ओ भूमिका होग आकि फुनन-छेम । कोना गँबीव रात तँ बाजसी ठाँठ-राँठमे चलेए, आगु-पाछु सब-सिपानी बहे छै । दूदा ३हो तँ मसकेँ हेबरे कवत जे अथनि फुनेले-छेम ले रूँमि पेलोँ तथनि अगिना केना रूँमि पाएरँ । कवहव सौवधीक गाछ होग आकि मथानक गाछ हिन पात पकड़ल केना ओकव गाछ पकड़ि सके छी । जँ गाछे ले पकड़ एत तँ पाषिक मिच्छाँ कीटक जडि केना पकड़ एत, जँ जडि ए ले पकड़ एत तथनि रँच्छी उँखाडि केना सके छी । जँ रँच्छीए ले उँखाडत तँ अलले ओग दिस ताकिए क२ की नात ? पोथरि-डारँवमे तँ पछन छै ।

3 कोट-कचहरी

4 भार

5 जिनगीमे पहलका

6 अलंकारी



तीन-टावि मासक रीच हरिनाथ भाय भेठना, एते दिसमे मानक मौसमो रँदनि जागए । ऋदा गण-सगपमे तेहेन घुट्टी रँनि गेन जे खसकेँ के कहए जे पएवक कनग्रिया अँग्रवक सिब तक छिठका देत । मल मोर्डा कहलियनि-

“भाय, रौबह मासक मानमे तीणठाँ मौसम रँदनि जागए ऋदा एते दिसक पढातिओ खहाँक ऋहक चूहचूली लेँ चिहकन अछि ।”

जेना निर्रिकार हरिनाथ भाय बहथि तहिना रँजना-

“ऋहक चूहचूली किएँ रँदत, अण जे दगितर रूँने छी तग पाछु नगन छी । जहाँ धरि सँभर भँ सकते, हेते । तगजे अखले चिन्तासँ प्रीत भँ चितामे चलि जाग सेहो केहेन हएत । जँ कोला काज अछि तँ से केना हएत, ओकव चिन्तन-मनन करीत चिन्तक रँनि परिवारमे ठाँठ हएँ, तखल ल चिन्ताकृत परिवार रँगत । से रँना केलेन खोचए हएत ।”

ओना हरिनाथ भागक रिटाव सुनि केते राँत मसमे उँठन ऋदा हेब भेन जे भैयावीक सगँरुण रूँनेक अछि, अखले दोसब-तेसब राँतमे रौखाएँ नीक ले । पढलियनि-

“सपरिवार नीके छी किल ?”

परिवारक नाँ सुनिते जेना हरिनाथ भाय टोकना । हनसत रँजना-

“तले परिवारक फमिन पढनह, सुन्दबनान सेहो आँएन अछि, गामेगव चनह कनकतिया रँसफठे खूँरह, चाहो पीरिहँ आँ गणो-सगप हेते ।”

हरिनाथ भागक राँत सुनि मसमे उँठन तले कहरो केननि आँ रँहूँत दिससँ सुन्दबनानसँ भँठे लेँ भेन, दुनु भँ जाँएत । ऋदा नमह नचनियाँक फमिन तखल ल नमह होग छै जखनि रँसतता रँसी देखरँए । तहिना हमाँ रँजना-

“भाय, एकठाँ काजे दडिगरावि ठेन जाँग छी ऋदा सुन्दबनान रँहवरेया भेन, पवदेशक किछु समाचाव सुनँ रँसी महत बथेए । अण काज तँ अणना हाथक छी, जखल समेक गव नागत तखल समावि जेरँ ।”

हरिनाथक घब दिस डेगो रँठत बहए आँ गणो-सगप डेगे-डेग रँदए नगन । कहलियनि-

“जखनि सुन्दबनान महाणगवक राजधानीमे बहए तखनि तँ राँत-रँछा सभकेँ ओते पढरँत हएँ ?”

अगिना राँत कहले पढअएले बहए आँकि रिट्टेमे हरिनाथ भाय ठँपकि गेना-

“सगुतबिया जकाँ तैवा रूँने छी, तखनि किएँ एना अनाछी जकाँ रँजे छह ।”

हरिनाथ भागक राँत सुनि हेब मल ओमवा गेन । केहेन सुन्नव राँत कहलियनि तखनि किएँ तममा गेना । तममाक कोला अखले ल नागन । हेब मोचलो जे दवरँजजापव पँटैसँ पहिले खँपठाँएँ नीक ले । खँपठनी गाँ जकाँ दुँसँ पहिले नखावसँ डाराँ होच । जेरँ तखनि दुँरँ कथामे । ऋदाक दैत जलिना शुभ-शुभ कियो केतो पँटैए तहिना रँजना-

“भाय, रँसफठ तँ कनकतिया नीक हएत ऋदा चाहमे पौडवरँना दुव माली कँ देरँ । तँसक शिकागत बहए ।”

जेना हरिनाथ भायकेँ ठोपेगव रँबी पकेत होषहि तहिना जराँ देननि-



“घबरेगारकेँ जूड़त मकशा बोठी तँ खीब केतएसँ आषत ।”

गब भेष्टन । कहलियनि-

“कहलौ तँ रेंस द्वाद गहो केहेन हएत जे ले पट्टे सएह खुआएर ।”

जहिया रँजलौ तहिया ओहो लोअक लेननि । रँजना-

“खुएरँ रिमफूठ, चाह तँ पीरैक रमतु जी । खेना पढाति ले पीखन जाग छै पीना पढाति  
खाएन पोडए जाग छै ।”

गगक बस गारि रँजलौ-

“तेखाग-पीनाग दूनु रंगी जी । एकठाम रँनि-ठनि भवि दिस केतए लौआगए तेकब खोज-खरवि  
बहो आकि ले बहो द्वाद रँले-ठले रेंव तँ दूनु एकठाम होगते अछि ।”

घब नग एले मसमे भेन जे बस्ताक गगकेँ रिबाम देरँ नीक हएत । दू गोठे रीचक, तहमे  
नगोपीआ रंगीक रीचक रात जी, जँ कही परिवारक देसबागत सुनि लेत तँ अलले अर्थक अर्थ भँ  
जाएत । रँजलौ-

“सपरिवार सुन्दरवान एना अछि आकि असगरे ?”

हबियाथ-

“एरेंव तँ सपरिवार आएन अछि द्वाद रेंसी कान असगरे अरेंए ।”

असगब सुनि प्रछि देलियनि-

“एना किए दू-बंगा गग कह जी ।”

दू-बंगा सुनि मसमे कछे भेननि । द्वाद सोने द्दहें ले रोजि रँजना-

“लोकबीउ कि एक बंगक होगए जे एक चानि सत चनत । बघुरीबकेँ देखे जी एजेसीक  
लोकबी छै, किमहोसँ किमहो महिनामे चावि-पाँट खेग चलि अरेंए । द्वाद सत कि बघुरीले  
जी सेहो रात ले । एहलो तँ होगते अछि जे सानक गाम दिसक छुड़ी एकेरेंव गाममे  
रितरेंए, तँ कियो ठूकड़ी काँटि-काँटि पाण-सात रेंव सानमे चलि आरेंए । द्वाद सुन्दरवानकेँ  
अणन ठाठी छै । दस दिसक दुर्गा पुजाक छुड़ीमे सततुव अरेंए आ अणदिसा असगरे अरेंए ।  
द्वाद एरेंव तग सतसँ अनग भँ सपरिवार आएन अछि ।”

पेठमे जहिया तुखन रिनाग रिनागत कपमे हँदत तहिया पेठमे दू लेया ीक बागा-कठोना  
सुलेले सेहो हँदत बहए । द्वाद कँठसँ उँगव हूँ ले दिख चाहिए । अलले अणका चाव पवहक हँहव  
गनर । गनरें हँहव आ जँ कोला रँतिया सडा जेते तँ नाँउ नगोत जे हँनरें उँगरी रँतोल  
बहए । हँव मस हूँ जे जँ कही दूनु भाँगक रिदछेमे समरँषक श्रम बधि दिँ तँ से रेंसी नीक  
हएत । द्वाद हँव हूँ जे सरँहक कीदिस कपेआ कवए । जँ कही पाग-कोड ीक चट भेन आ  
रिराद हँसत तँ अलले दोधी हँर जे हँनरें आरि क२ दूनु भाँगमे गारि कवा देनक । गारि कवत  
अणना चानि आ दोधी रँलोत हमवा जे हँनरें गले हँडा देनक । कोला गले ले अँ जे अणन  
रातक जडा पकडर । जारें जडा ले पकड एत तारें सत केना ओत, जारें सत ले ओत तारें  
चेतनकेँ चेतन केना कहरें, तारें तक तँ ओ राने-रौन बहत । राने-रौनक आणनदे की ?  
अणीक ! मस तेना मकडजानमे ओमवा गेन जे हबियाथ भाँगक बस्ताक रातो अदहे-डिदहे सुनि  
पेलौ । दवरँजजाणव पँटते जहिया होड एन मकुख आणिपव चटा घी रँन गहोत तहिया भेन ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

द्वरबज्जा ओसावक चविजगियाँ अखरू टोकीपव सुन्दरवान सञ्जो मिया-पुतारै माले दूनु भाँगक रैठा-रैठीके गोन-मोन रैसा अगला रैसन बहए । कमान टोव जकाँ गोनका माना रैलोल डन । सभसँ छोट भतीजीके पंडित बहए-

“रूट्टी, तौहव नाँउ की छियौ ? ”

आँधि उठा टावि रैथक वाणी मल-मल गव नगरै नगन । माए कहए वाणी, पिता कह छथि मडनाही, रूट्टका भैया नडुमी, काका अगल कह छथि त्रिरेणी आ टाटी जदुनियाँ सबसँ रती । लोकक नाँउ तँ एकठा लोग छै तैठाम हमवा ठेवी अछि । तखनि की कहरैनि, यएह ल कहरैनि त्रिरेणी । राजन-

“त्रिरेणी । ”

सुन्दरवानके रूट्टा सरहक रीट गग-सगुग करैत देखि डेट्टा येगव कनी डेग छोट क२ जेलौ । दूदा मयोजो नीक बहए जे सुन्दरवानक पीठ दिससँ अरैत बनी ।

त्रिरेणी सुनि सुन्दरवान जेठकी रैहिनके देखरैत पंडनक-

“अ के भेनखुन ? ”

“दीदी । ”

“हम ? ”

“कनकतिया काका । ”

सुन्दरवानके रूट्टा सरहक रीट देखि मल घीराह भ२ गोन । आगिपव चरन घीउक सुगंधसँ द्वरबज्जा सुगंधित गारि ठाठ भ२ गेलौ । दूदा से हीवाताय उंग क२ देननि । सुन्दरवानके ठाँहि देनथिन-

“रौआ, पुवाण मंगी बज्जापव भेठना, रूट्टा सभके छोटह पहिल जनथे-टाहक ओमिाण कवह । ”

धडफड । क२ सुन्दरवान उठि रूँहि पकडा कवमीपव रैसरैत भतीजीके कहनक-

“रौआ, पहिल जनथे लल अरैह, तारै चलो रैगते । ”

कहि दूनु भाँग टोकीपव रैसना । सेविया क२ सभ रैसना ल बनी आकि तीन-टाव बगक रियुठ आ दूठी नानमोहन मजन छै हाथमे आरि गोन । तेज काजक कग देखि मलमे भेन जेना पहिलसँ छै मजन लोग । तीनु गोठेक हाथमे छै आरि गोन दूदा हाथ तीनुक बाँधन । ओ दूनु भाँग बाँधल जे पहिल, ओ दूहमे जेता तखनि ल हम सभ जेर । जेना भोजो काजमे पहिल रूठ-रूठ मस कोव उठरै छथि तेकव पडातिए ल सभ उठरैए । भनहि मिया-पुता पहिल किए ल थोलाग शुक क२ नगए । अगल अगुआएर नीक रूमि एकठा रियुठ तोडा दूहमे जेलौ । ओहो दूनु भाँग थए नगना । रैरहाव देखि भ्रमित मल सहनि गोन । अगलके छिगरेत सुन्दरवानके पंडनिए-

“रौआ, केते दिसपव गाम एनह हेल ? ”

सुन्दरवान कहनक-

“डेट्ट मासपव । ”

डेट्ट मास सुनि मल आलो भवनि गोन । डेट्ट मासपव कनकतासँ आएन, तखनि कमाएन कथी हएत । ओ कमाग तँ गाड़ एक भाड ।-तुड़ीमे चलि गोन हेटे । दूदा पंडुरौ केना कवरै जे भाड-तुड़ीमे सभ पाग चलि जागत हेटह तखनि परिवार केना चेतह । दूदा रिटावके मोड़-त रैजेलौ-



“डेठ मामगव कि ए एनह, कोलो रियेशे काज की ? ”

रिशेय काज सुनि सुन्दवनान पुढनक-

“रिशेय केकवा कहरै आ साधावा केकवा कहरै ? ”

सुन्दवनानक प्रश्न जेना मसकेँ दारिँ देनक, दारिँ ३ देनक जे रिशेय आ साधावा तँ रैकता-रैकती होगए। ओना समाजिक सेनो होगत, दूदा जहिया समाज अगण टालि रँदलि फटाकिक राँठ पकडा जेनक अछि तहिया ले रैकतीक साधावा आ रिशेय काजोक टालि रँदलि गेन अछि। ओना रैकता-रैकती जिणगीक दशा-दिशासुवाव सेनो रँदलेत छै छै। कोलो गने ले फुडए जे सुन्दवनानकेँ सबुगव/ जराँ द२ सकरै। मस ठामकन। दूदा नगने भेन जे जखनि पी.जी. नलाममे रियस धावा पकडा चनरै ले करैए, तखनि गाम घबक तँ दनाण दनाले भेन। जँ खेती-गिवहत्तीक फार्सफामे भगवतीक गीत रीटमे ले गाएरै तँ की गाएरै। ले खेतीकेँ अगण उंगजाक ठेकान छै आ ले गिवहत्तेँ गिवहत्तीक। तखनि हमले कि ए बहत। पाशा रँदलेत रँजलौ-

“रौआ, गाममे नीक नलौ छह ? ”

प्रश्न तँ ए हिसारसँ बखलौ जे जहिया रँजकआ लोक मिलेमा कनाकावक सात पुस्त तक जलैए दूदा अगण रँशिक तीनिउ पुस्त ले जानि परैए, दूदा से भेन ले। जेना ठेकनाएते बह तहिया सुन्दवनान कहनक-

“डैया, जहिया अहाँ भाय सहिरक संगी छियनि तहिया हमरो भेलौ। तँ अहाँ नग कोलो राँठ रँवैले बधि सके छी। गाममे कि ए ले नीक नागन। रन बाख सिह आ सिह बाख रन। ”

खोलि क२ सुन्दवनान किछ ले रँजने दूदा तेहेन गडु गव प्रश्न बधि देनक, जे किछ फुडरै ले कएन। मसमे उठन जे जखनि धावा-धुवक कोलो ठेकान ले अछि जे जग कोसी-कमानाक गीत लोक मानि-गिवदंगव गरैए भनहँ टोकन-मानिक जगहे कि ए ले रँदलि गेन होग। दूदा जगसँ खुशी होगत हुँहो कोसी-कमाना गामक-गामकेँ उजाडरौ करैए आ मष्टिकेँ सेनो उजवरैए। तैठाम मसख तँ मसखे भेन। जे मसखाहो रँलैए आ मवखाले। पाशा रँदलि रँजलौ-

“भागओ सहिरक पिया-पुताकेँ ओतए न२ जा नीक फुन कोलेजमे पठरै छहूँ किल ? ”

ले रँलैया! सुन्दवनान दूपे बहन हवी भाय रँसकि उठना-

“अहिया रँवै छहक। हम कि अगणा रँठकेँ कावखानाक नुबि सीखा कावखानारँनाक रँठा रँना देरै। जग दिस अगणा पुजा-पगहा एत तग दिस अगणा मशीनपव नुबि सिखत। ”

हवी भायक राँठ सुनि किछ राँठ मसमे उठन। मसमे जहो उठन जे अलने अलका दररँजगव दूहदुक होग छी तगसँ नीक जे हवीए भायकेँ पुछि रँजा रँना अगण नागवि समेष्ट लेरै नीक एत। रँजलौ-

“केना अगण रँठा अगकव भ२ जहएत ? ”

हवी भाय रँजना-

“केना भ२ जहएत, से तँ ले रँवै छहक। ”

अगणा दिस प्रश्न अरैत देखि खेव पाशा रँदलौ-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“रौश्या सुन्दरवान, तौहव रात ले रूमि गेलौ जे केशा रण सिंह बथेथे आ सिंह केशा रण ?”

गंभीर होगत सुन्दरवान राजन-

“तेया, किए हम पवदेशे गेलौ, अही कशी रूमा दिख । खुनमे नीक रिद्यार्थीक गिनतीमे हमरूँ छेलौ । एम.बी.ए. केलौ । अहाँक गाममे हमर कौन काज बहन । जूँ पठ्ठा-निथि काज रँदलि करितौ तँ अही रँजितौ जे पठ्ठा फावसी रेटे तेन, देखु भाय कबमक खेन । तखनि ?” सुन्दरवानक प्रश्न जेना मसलै आबो भविष्या देनक । रूमा जग दवरँझापर रौस जनथे केलौ, चाह पीलौ तैठामसँ रूमा ही गौति जाग ओ नीक ले । रूमा रूमा ही उठारौ अमान तँ नहियेँ अछि । मसमे एकठ्ठा गव उठन । गव ज उठन जे जग प्रमपव हवी भाय रँमकना तही प्रमकेँ किए ले सुन्दरवानकेँ दोहवा कइ पछि दिथ । रँजितौ-

“रौश्या हवीभागकेँ कौन रातक कराय भइ गेन छहि जे एना कइ अथेन छथि ?”

सुन्दरवान हसल । हसल ज जे अपन पछिना रात दोहवरैत राजन-

“मसमे उठन बहए जे अखनि तैयारीमे, परिवारमे जारै तक काजक सय्यक ले रँगत तारै तक एक दर्रागत बहत दोसव उठैत बहत । यहए सोचि तैयारकेँ कहनिथि जे भतीज-भतीजकेँ कनकते जय दियो, ओते नीक खुन-कौनजमे पठ्ठा एरै । रूमा... ?”

‘रूमाक’ पछाति सुन्दरवान ककि गेल । ओना जिनगीक घटित घटना बहे, भायक मोममामे पक्ष बाखरै नीक ले रूमनक, रूमा हवीभागकेँ जेना पौडनो रात ओहिना तजगले छेलनि । तहूँमे रँजेक फ्रम तँ अगिया गेल बहनि । रूमा मसख तँ भगवानसँ रूमियाव होगते अछि । आगि भनहि पागि ले भइ सकथे आ ले पागि आगि भइ सकथे रूमा मसख तँ भइ सकैथे । आगि पागिक रँसन मसख, कथला नहान जकाँ भइ जागथे तँ कथला कौनशिक पाखव जकाँ । हवीओ भायकेँ मसख भेलनि । भेलनि ज जे अपन भायक रिचावपर पागि फेडत ठैठका प्रम रँगरैत रँजना-

“तौलेसँ पछि छि जे जे रँटा रँसेसँ माथ-रौग नगसँ हठि जागथे ओ सकतागत-सकतागत पाकन रँस जकाँ ले सकता जायत ओ माथ-रौगक देन कौन किविया-कबम मस पाछा अपन किविया कबमसँ जोडि कवत ।”

हवीभागक प्रमक उठव उकडू छेलनि । उकडू काजकेँ सुकडू रँगएरै विया-पुताक खेन पोडू छी । तहूँमे केलें उकडूकेँ केलें सुकडू रँगेल जाय । एहए तँ ले ले जे जग रँसिक ठैलसँ ठैग उठारैथे जायथे आ रएह हूँठि जाय तखनि तँ आबो उकडू हएत । तगसँ नीक जे दूनु भाँगक रीचक रात छी किए ले ओही गले उठ्ठा दिथ । रँजितौ-

“हवी भाय, रातकेँ कशी पछा छी कइ कहियो । ले रूमि गेलौ जे अहाँ की कहे छिथ ।”

जेहए वियागसँ हमर रात हवी भाय सुनल बहथि तेहए अपन जगह ठैकनरैत रँजना-

“हमही दू भाँग छी । दूनु भाँगक रीच केलें मेल-गिलास अछि जे सभ देखेथे, रूमा गिलास बहजो पछाति हठन केते छी । जूँ कनकतामे सुन्दरवान रँसाव पछा आकि गाममे हमही पडि, तैयारीक सेरा कथी हएत ?”

हवीभागक अकठ्ठा रात सुनि किछु हुडरै ले कएन, थिसा सुनिनिहार जूँ हूँहकारी ले देत तँ थिसकव अपनारकेँ की रूमत । रूमा हूँहकारीओ तँ हूँहकारी छी । केलें हूँहकारी पडत गेलो तँ अदना रात नहियेँ अछि । ओना सुन्दरवान डेठ मामपव अथेन छन, रूमा रूमजो रातकेँ अणठरैत हएव पागि रँदनि रँजितौ-

“रौश्या, गामक आराजाली केलें बखल छह ?”





मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अपन भाव हठैत देखि हवी भास ओसावक देरानमे ँगठि गेना । ँगठैत देखि मम हलुक भेन । जग नजबिअ हवी भासके देखे डिगनि तग नजबि जोगव सुन्दरान पोड अडि । आँधि उठा सुन्दरानक आँधिये गाडजौ । गाडि ते सुन्दरान राजन-

“तेया, लोकवीक शुकशतीमे दम रँवथ मोनहनी गाम डुष्टि गेन । डुष्टैक कावण लोकवी बहए । जहिना सत जिगगीमे आगु रँदथ चहिए तहिना चहजौ । जगसँ डुष्टीके मजगुतीसँ पकडजौ । ल कहियो अण्ट-रिण्ट डुष्टी नी आ ल कोला नागवराही कवी । दूदा रँटाक पठ १ग-निखाग आ पणौक रँव-रिसावी खुदबो-खुदवी एते भग्ये जाए जे मानक रीस दिसक डुष्टी हवा जाए । डुष्टीओ ल हूअ जे गाम अरितौ । दम रँवथ पढाति मममे भेन जे आँ रँटा कनी छेगव भेन आ पणौओ कनी निपोथ भेनी जगसँ दनु काज अमान भेन । अमान कि भेन जे अपन काजे ल बहन । दूदा हेरि दोसव रँहगवा ठाठ भ२ गेन ? ”

रँहगवा सुनि रँजजौ-

“की रँहगवा ? ”

दूद रँजकरीत सुन्दरान राजन-

“तेते ल हित-अपेडित भ२ गेन अडि जे लीत-हकाव पुरीमे डुष्टी हेवा नगन । हनेरैले कएन जे केतेठामसँ ँगवागो आँए नगन जे अहाँ ले एजौ । ”

राजि सुन्दरान दूपा भ२ गेन । पडनिअ-

“दूपा किअ भेनह ? ”

जेना सुन्दरानक आँधिये दूपाकी एले । राजन-

“सत जोडि दुर्गापुजाये सगविराव गाम आँए नगजौ । दूदा जे मममे डन से अदूसँ ले भेन । ”

जिब्रसा जगन पडनिअ-

“की मममे डेनह ? ”

सुन्दरान-

“मममे आँएन जे कम-सँ-कम मासे-मास गाम आँरी । दूदा तदुमे रीधा आँए नगन । कहियो पणौ लैहक नष्टमे लीत पडिअ जेती तँ कहियो रँटा-सँहक पठ १ग रीधित हूअ । ”

“तथनि ? ”

“तथनि यएन केजौ शनि-वरिक ँपयोग केजौ, पविरावके जोडि गाम आँए नगजौ । ”

गाम अरैक नष्ट देखि कहनिअ-

“हवी भासके गाम-गमागत करैले एकठा गाडि कीनि दहू ? एक तँ उमेवगवो भेना आ अपन नामो-निशान बहतह ? ”

रँजेकान तँ राजि गेजौ दूदा हवी भासके नीक ले नगननि । रँमकि गेना-

“रँड रँमिाव भ२ गेनह, छँठनी जकाँ हमरा छँकछँकिया कपागवव चठन अडि जे अलने रोडमे हाथ-पएव तोडि । काहि कष्टर । नष्ट-रँजावक जे काज अडि ओ जथनि गाममे भेष्ट जागए तथनि अलने किअ रँीआएन घुमँ । ”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सिबट्टु, सुर्जकेँ लोगत देथि उँठैक गव अँठैरै नगलौ। रहुँत रैसी कना-कनी दुषुक भाँगक रीट भनहि लेँ भेन लोग, दूदा रिटावक दुबी तँ अँडि। तद्धमे दवरञ्जापव रैस चह-पाणि पीलौ, माराजस करैत फवसोपव सँ उँठैत रँजलौ-

“समथ तेहेन भ२ गेन अँडि जे कँठना रँस जकाँ केतरो टिक्रण कवरै तैयो उँरुड-खारुड बहिये जाएत। कोला कि गीबलेँषा खोटाह बँहए सोबोक रिट्टोमे तहिना बँहए।”

राजत तँ ङ सोटि बनी जे दूनु भाँगकेँ नीक नगतनि दूदा से भेन ले। सुन्दवनान टुप बहन, राँत माननक आकि लेँ से तँ ओ जाणए। दूदा टुप देथि अँपना भेन जे मणि लेनक। दूदा हवी भाय तड ंणि रँजना-

“अलरे समेकेँ दोथ नगा लोक अँपन गती छिपरैए। समेए केकरो ल किड केनके हेन आ ल करैत। केतो भाग कहि समेक दोथ नगरैए तँ केतो दिसक दोथ। केतो सोमगक तँ केतो मानक।”

हवी भागक राँत सुनि मस टकड ा गेन। टकड ा ङ गेन जे, जे राँत सभ रँजेए से सुठ केना भ२ जाएत। सभ कि सुठैक कारोराव करैए। रँजलौ-

“हवी भाय, अहाँ जाण लेँ जोडर। सोफठ जकाँ तेहेन राँत नारि देनिअँ जे रीषा नाठी नगोल ठाँड ल हएत। अँधडनेलेपव सँ नीरँ जाएत। कहने तँ रीडानसँ नमहव लोगए दूदा अँपन भरे ठाँड ा लोगक जोकए लेँ लोग छै। कणी फरुडि डा क२ कहियो जे समेक दोथ किए ल लोगए।

हवी भाय रूमि गेना। कणी ककि रँजना-

“देखक, कोला काज करैसँ पहिल लोक ओकव रिटाव करैए। रिटाव केना पडाति एक सीगापव अँरिरे रूमरँ माले। रूमरँकेँ रूमएरँ नुषि भेन, कना भेन।”

हवी भागक रिटाव जेना मसमे गडन। कँठ जकाँ लेँ गडन जे रिसरिसतए, छेनाक पाणि जकाँ कपड ामे रीहन मोठैवीक पाणिक टोप जकाँ गडन। कहनिमनि-

“हवी भाय, कणी पछिना राँत, समेक दोथ जे कहनिअँ तेकवा टिक्रण क२ दियो।”

टिक्रण सुनि हवी भागक ठोव जेना मधुननि। दूदा दैत रँजना-

“जेकवा समथ रूमै डुक ओ निवरिकाव अँडि। हाथ-पएव लेँ बहितो ओ अँपना गतिये चरिते अँडि, चरिते बहत। दूदा रिरैकी मल्लख रिरैकलीन रँसि अँपन काजकेँ दोसवपव नारि दगए। यैव, आरँ नहागोक रैव भेन जागए, तद्धँ जेरँह। तँए कहि दग छिअँ।”

हवी भागक नडन-कवमसँ रूमि गडन जे अँपन अँतिम राँत कहए चहि छथि। दूँहकावी भवलो-

“समैएपव ल नहाएरँ, खाएरँ, सुतरँ नीक लोगए।”

सुनि जेना हवी भागक मस फुना गेननि। जेठ मसक बोदमे जखनि कियो छाती भरि पाणिये सैसि पतानसँ अँकाम धरि क रीट अँपनाकेँ पारैए तहिना हवी भाय अँपन राँत रँजना-

8बडका बिछान

9दम



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“जखनि सुन्दरनाम आगु पढक रिटाव केनक, तखनि सुन्दरनाम आ शितोक एक रिटाव बहनि ।  
रुदा ले ए दुखाले रज्जुले जे शिता आगु किछु रज्जुले आ जे कही सुन्दरनामक मसमे होगते  
जे भेये राधा छथि, तखनि किए रीचमे राधक रनि कर्नक लेते । तँए किछु ले रज्जुले, रुदा  
ओतेम परिवार छमन ।

छमन सुनि जितनामा रठन । पृष्ठनियमि-

“उपए ? ”

रज्जुना-

“जे छमन से तँ छमि गेल, रुदा आरौ सुगति आरौ जे आगु दिन दसदागत चेत ।”fff

३० जनवरी २०१४

खेव पुढरैनि

वाकेशे आ दूकेशे गामेक हाग सुकनक रखा दमामे पढत । एक तँ एक उमेविया तैगव दूनुक  
मात्रिक एके गाम तँ समरैण्ण आरो रैसी गाठ । गाठ समरैण्ण तँ रएह ल भेन जे मगड 1-मिना  
संगे एक बहै । तेतरे कि ए तदुस रैसी होगए । तीत-मीठ दूनु संगे बहै । तँ कि सगारैणी क  
डनना तबकारी जे ममनना सभके एकवैठ क दग छै, से भ २ जाग छै ? लै ! से लै होग छै ।  
होग छै अ जे समए आ जगह पारि रएह तीत होगए आ समए-जगह पारि रएह मीठ होगए ।

दस घंठी पठ गक रीट नखम घंठीक पठ गक शुभ भेन । शिक्षक आरि जमीनक सरैक रियस  
पढरैण नगना । जलिनखन रियस तँ आन शिक्षक जका धुव-माड तँ लै राजि परैथि दूदा म  
पाडा-पाडा रैजल रिद्यार्थी सभके अकछागत बुमि पडननि । म मोड जे रैजना-

“जोक जमीन जेवके लै तँ केकरो उवके ।”

नगरह पाँति तँ रिद्यार्थी एकाग्र भेन । दूदा अपन रियसक नागवि पकडा पुनः शिक्षक सरैक  
रियस पकडा जेननि ।

छुट्टीक घंठी रैजन । सब रिदा भेन । रिद्यानयक आँगनक नुाड पतवागते वाकेशे-दूकेशे एकठा  
भेन । नुाडक हनरो कमन । गप-सप कलेक योसम पारि वाकेशे रैजन-

“जोक जमीन जेवके, लै तँ केकरो उवके ।”

रैजेक कावा वाकेशेक मममे बहै जे मामरैव सहैरैक पढाँन ओहिना म अछि । उरैत दूकेशे  
रैजन-

“छुट्टे पाँति रैजल हेतौ, कह तँ ओकव माल की भेन ?”

दूकेशेक टागैजेके वाकेशे केना लै मरीकावेत । रैजन-

“घबराती आ खेत-पखाव तागतिक छिँ जे हही-सुही लै समहावि पौत ।”

गपक एमक नागवि पकडा दूकेशे रैजन-

“जहिना सुनेरैगवना जेन सुनेरैगवनी घबराती होग छै तहिना लंगवा जेन लंगवीओ होग छै,  
तथनि केना बुमलै ।”

दूनुक रीट प्रमपव वगड लै होगत, नीक-रैजाएक सीमाव हवदा-हवदी कहि माणि जेत ।  
वाकेशे मालेत रैजन-

“तू की बुमह छीनी, राज ।”

वाकेशेक रात सुनि दूकेशेक मममे खुशी उगकन । खुशीओ केना लै उगकेत, केतौ रिण पुढरौ  
टाकीक-टाकी रात छिडा आगत बहै आ केतौ सुनिनिहाव सरय जित्रासु होगए । रैजन-

“खेत-पखावक संग जेकर जेव भेन अछि ओकरे ल ओ भेन आकि दोसवाक ?”

ओना अथनि धवि वाकेशे-दूकेशे अपना मतभेदके अपन रिरेके हविडा जेत दुन दूदा से लै  
भेन । बक्का-ठेकी शुभ भेन, बग-रिबगक शेरदराण चख नगन । रिद्यानयसँ घब नग दूनु पडूट गेन  
दूदा हविडाएन लै । अतमे दूनु सहमत भेन जे काहि ओही मामरैव सहैरैके खेव पुढरैनि । fff

३ जगवरी २०१४

## माघक घुब

मरक मिराबा पारमि अणहविया चतुवदमीक दिन, मतेहिया शीतनहरी अणष कड़कड़ एन मस्त जूआनी पारि पड़िया हरक मंग रीहूँसत गतिये अणषनागत रीह बहन डन । उणा दूनु मीनि दिन-राति रीहत दूदा भोवहवरोमे आरि आबो मिकवान कप पकड़ा लेत । मिकवानक पाछु तेज हर राहर ले मीसमाक अणष सकन-सकप अछि । दिनमे कनी-मनी तँ सुकजक अमरि पारि कमरो कवेत दूदा वातिक चाबिम पहर अरैत-अरैत हुँहो अमरि हारि-थाकि, जहिया धावक क्लिष्टमिक मरियाएन पारि कतराहि पकड़ि चलेत तहिया कतराहि पकड़ा लेल अछि । पाँट थाष मानरना बघरा कक्काक मिवमिवाएन मष मीवको तवमे मिवमि क२ तवमि बहन डनह । कनावथपव अम्रुआएन रैसन नजबि लाव मिवजि बहन डनह । मिवजि बहन डनह अणष जिनगीक रैथा-कथा । तेहेन रीथाह मष भ२ गेन अछि जे जहिया मारिक पंथाएन मिरावकेँ कदि-कदि रैग दूहमँ पकड़ा सुगरुगागओ ल दैत तहिया अणहव गजेत रीछि-रीछि रिडोण केले जा बहन अछि ।

देह पवहक मीवक उतारि बघरा काका जिनगीक मष भूमि लेन मष रैगरेण नगना । जँ नरु मवर तैयो दुथेक मिराबा जँ जूरित बहर तैयो मषह । आथिब पाँटो थाषक मीमिहाबो तँ डीहे । ओकवा दूहमे कोला रौने छै जे अणष रैथाक कथा कहत । उणा कहियो कान खेरी-पीरी लेन आकि अणरुया जीर-जगु देखि आकि दूह-गाड़ कान दूह खोले दूदा मषथ जकाँ तँ ले कहि मकेए । नहियो कहत तैयो तँ एते रूमरें करे डी जे अथमि जे दुवकान मष अछि तगमे की मभ मिकतिमानी अछि । जाधरि हथिाव ले पकड़ 1ग छै ताधरि मिकतिमानी मिकतिमानी होगते अछि । सुकान पारि भनह रएह मिकतिमानी मिकतिमानी कि ए ले रमि जाए दूदा ककान तँ ककान छिँ जेकवा दूहमे अराज भनह होँ, दूदा जेकवा रौन ले छै ओ अणष रैथाक कथा कहिये केकवा मकेए । देह नगा मारर छोड़ा उषेये दोसर की छै । दूदा जाणमँ जाए आकि मोग-मोगमँ पकड़ 1ए, अणष जिनगीक मंग हमारो जिनगी तँ तोडरें कवत । छुँछैत जिनगी देखि मष थकथकेनमि । थकथकएन मष रूंदरूंदेनमि । जिनगी छुँछै क२ हवि ओहिया थमि पड़त जहिया दम रैवथ पहिल डन । जे दम रैथक रीट ज्ञाण-कर्मक मंग कठिन श्रेम केना पछाति भेठेन, ओ डीणा बहन अछि, डीणा जएत । दूदा रैटागओ तँ नहियो मके डी । छुँछैत मषकेँ हूँवेत मियाव कहनकमि-

“की मषह मोटि एते मषेओ आ श्रेयो गमेरौ जे डलमे डलक भ२ जाए ? जथमि जिनगीए छुँछै क२ थमि पड़त तथमि कोष जिनगी न२ क२ ठाढ़ बहर !”

अणायाम उतसाह जगनमि । जहिया सुतन लोककेँ मँस भनहि चलेत बले दूदा बहे तँ मियथासे अछि । तँए कि ओकवा मबरो तँ नहियो माषन जएत । अहूणा तँ लोकक नीण छुँछैरो करेए, तोडरो जाग छै आ तोड एजो जाग छै । उठन उतसाह धकनकमि । देह पवहक मीवक उछाणपव उण्ठी दूनु काणकेँ तौनीक दूवेठा रौनहि चदरि उठनमि । दूनु डेला आ दूनु पएरो रैसन-रैसन मारु क२ मोम केनमि । मोम होगते हनब्रकपव पछुँछैते उतसाह सकसकेनमि । मियाव जगनमि, जगिते मियाव मष फुडफुडनमि । रौवहो मासक रौवहो कप अछि जे अकप-सकप दूनु अछि । ओहिक रीट ले जिनगीओ अछि । ओही जिनगीक जनक ले मषथ डी । तथमि नगले हारि मारि लेरँ पीठ देखाएरँ भेन । ले पीठ देखाएरँ तँ जिनगीक हारि भेन । केना नगले सेहो मारि लेरँ । जँ नगले मारि लेरँ तँ केकवा लेन मारि लेरँ, बहरें के कवत जे तेकवा लेन मारि लेरँ । उठ क२ बघरा काका उछाणपव ठाढ़ भेना ।

केरौड थोनि बघरा काका रौहव तकनमि तँ अणहव छोड़ा किछु ले देखथि । घब अणहव, रौहव अणहव तथमि केना डेग आगु रैठत । दोवरतीक मरीच दरनमि तँ पसवव अणहवमे डहिया गजेत



किछ दुब धरि भेलनि । देखिते बिसराम जगनि जे टावेरतीक गजोतक रेले आगु रैठन जा सकैए । जहिया रौंठ-रौंठेली आकि बाह-बाली गाम घब छोट्टा कोला गामक बस्ता रौंठ पकडा आकि कोला धाव-गाडी-रिवडी राध-रौंठम हष्ट अणष पेठे चलि गगामे मिलेए तहिया एक-दोसब गामक सीमान ठपि बाली-रौंठेली अणष गतब दिस रैठ-ए ओहिया बघरा काला माथ-काणमे दूबेठा रौंठलि, चदबि उठ्टि दहिया हाथमे टावेरती लाल ओसावस निट्टा होगत नजबि थिबोननि । जहिया अहूआ-सुथलीस न२ क२ माग-पात, भात-बाठी होगत, खीब-पुवी धरि भोज्य होगत तहिया तँ घुबोक अछि । रेशीख जेठक घुब खोड जे रिव रीखक माडी-माडुबक भगरेले हएत । ओ तँ घामो-पातस नगोन जा सकैए । नगोन किए जा सकैए ओस रैमी जकबते की छै । जहिया तपाएन समय बहै छै तहिया अगियाएन हरो चले छै, तेहनामे रए ल नीक भेल जे जँ आगि हरामे उडरौ कएन तँ उडि ते-उडि ते हरेमे मिमागओ जाएत । तथनि ? तथनि तँ रैवमातो बहियेँ जे खठ 1-पात आ जवला-काठी रैवमातक तीजान तीजन बहल धूकड-धूकड धूआँ होगत बहत आ ल कथला घुबक आगि नहमत आ बहियेँ मिमाएत । ओना माडी-माडुबक रेशी रैठ गेन बहै छै आ सौणक भाग-पाटी पारि रीखाले भ२ गेन बहै छै । ओका भगरेले तँ कडू अएले धूआँ उग्याकतो होग छै आ अणकुलो छै । फेबि बघरा ककाल मण पाडुसँ समवेत नगमे पहुँचनि । पहुँचते देखनि जे ३ तँ माघ छी । तह्यमे अणडवेबक छी । जहिया वाति कडू अएन अछि तहिया शीतक कण रैदनि पन्ना पकडा लल अछि । एहेन पन्ना पकडा लल अछि जे तीतवसँ रौंठ धरि जनारण मिमि गेन अछि । रैवमातक जवला तँ अणसुथु बहै । हनबुक-हनबुक भनहि मागण किए ल तीज गेन होग दूदा एहला तँ बहते अछि जे उगसँ भनहि तीजन हूअए दूदा तीतवसँ सुखन बहरेँ करैए । तीतव-रौंठक जोड रीचनारैँ धकिएरेँ करै छै । दूदा माघक तँ ओहेन होगए जे हरेमे बोवा तीतव-रौंठ एकरैष्ठ क२ दगए । तीतव-रौंठ तँ ओका एकरैष्ठ करैए जे साँगन घबसँ रौंठ बहैए, जे घबमे साँगन बहैए ओ किए मिमत । मणक उतसाह कनभनि । गठुनाक गोवहा-टिपडि तँ सुखन हरेँ कबत तह्यमे ओ कि कोला गाडक देवा छी जे पन्नाक डले तले-तब मिमि जाएत । रैवद-गाएक गोवबक गोगठा-गोवहा छी जे ओस-पन्नाक के कहए जे पाणिक सीसीओ-सकासकेँ खोडे गुदालेए । ओका अणष बस छै । मण पडनि रेशीख-जेठमे गोवहा-गाए गठा कएन घब । रौंसक मचाण रौंठा सँति-सँति बखल बली, तीण मास रैवमातमे मठन तेसब मास जाबक गुजबि बहन अछि । तेसबोक अदहा रीति गेन, हो-ल-हो कही हुँहो ल सँति गेन हूअ । तीण मास रैवमात बहते अदहसँ कमे खबटा भेल हएत, दूदा जाबक तँ तीण मासमे रैमी होगते अछि । मण ठामकनि । दूदा नगले मण कमाना गेनि । अगिले मपता तँ रममातक आगमन भ२ बहन अछि । जँ नगिटागओ गेन हएत तैयो पाँच-दस दिस रैमी खोडे भेल । तह्यमे जे शीतनहरी नथल अछि ओका कि सीमा-बागबि छै । आगु रैठ गठुना दिस रिदा भेना । डेग उठते मणमे उठनि, उठते मण कहकनि-

“पणैक जेगोन घब छी, पुछि जेर नीक हएत । ओ खोडे कहती जे हमर छी हम लै डरए देरँ । जथनि ओली गाए-रैट्टाक जरीक ओमिाण क२ बहन छी, तथनि किए लोकती तह्यमे कि ओ लै रूँमे छथि जे ओली नक्ष्मीक देनहसँ घब भवि सुथ करै छी ।”

मणमे अरिते बघरा काला पणैकेँ पुडरँ खगता लै रूमि गठुना पहुँचना । घबक दूहथपिब धणउमनिगाँ ठीण बाखन । टावेरतीक गजोतमे तेना ठीण चमकन जे बघरा ककाल आथि टोणहिआ गेनि । पएबक ठैस ठीणमे नगि गेनि । तेते जेबक अराज भेल जे सुगिया काकीक नीष दूष्टि गेनि । नीष दूष्टि ते ओजाणसँ उठि सुगिया काकी गठुना दिस रैठली । केला ल रैठ तथि, रेशीख-जेठमे भनहि कमान-चदबि रैसका रैनि जाए, गोवहा-गोगठा राध-रौंठमे छिट्टि याएन बहए दूदा माघक तँ पिबथानि रए ल छी । ओसावसँ निट्टा उतबिते टावेरतीक गजोत गठुनामे देखनि । रूमि



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गेनी जे कियो जावनि नगले आएन अछि । तबिसक जाड रबदास ले भेलै तँ ए घुब कवत । दूदा  
चूपाप आगु रँठरँ उँटित ले रूमि रँजनी-

“गठुनामे के छी ? ”

पलौक अराज सुनि वघरा काका ओलिया महमि गेना जहिसा कियो पति पलौक पौती-सखाबीमे  
हाथ दैत महमैत अछि ।

उना सुगिया काकीक रौनमे टोबक धरनि ले छेननि दूदा मममे जकब बहनि जे एते बाति क२  
घबमे कि ए उँत । दूदा नगले मम गराही देनकनि जे एक तँ एते बाति दोसब एहेन दूबकान तद्धमे  
गठुना घब, अन्न-पानिक असरारक घब ले, रिसु रूमले-पवखल केकरो टोब कहरँ उँटित ले । तँ ए  
सोमे रँजनी जे के छी । एहला तँ भ२ सकैए जे केकरो जाड ले रबदास भेन होग, आगिक  
दुखले जावनि नगले आएन हूअ । दूदा नगले मममे आरि गेननि जे अलका घबमे रिसा पुँडले कियो  
कि ए उँत । रँड जाड भेलै तँ मागि लेत । हेरि मममे उँटि गेननि जे एहला तँ भ२ सकैए जे  
कियो दुनियाँकेँ मुँठ रूमि लीक-अधनाक रिटारे ले करैत हूअ ।

पलौक अराज सुनि वघरा काका रँजनी-

“हम छी । ”

वघरा काका तेते दारि क२ रँजनी जे लीक जकाँ सुगिया काकी सुनरौ ले केननि । तँ ए कि ओ  
सोमहली ले सुननि, सेहो रौत ले । शरद आ शरदक भार ले रूमनि दूदा अराज तँ कासमे  
पडा ये गेननि । जहिसा गंजीब शोमत्रीय संगीतक भार कियो रूमैत रा ले रूमैत दूदा अराजक  
कम्पन्न तँ कम्पित काग ए दग छै । जँ मे ले तँ ओह धरनिपव जंगनसँ योव आरि आकि रौनसँ  
हनि आरि षाट ए कि ए नछैए ।

मम-मम सुगिया काकी रिटावरौ कवधि आ गठुना दिस रँठरो जाधि । शिवशिवा क२ वघरा काकाकेँ  
रँजेक कावा बहनि, पलौक मगड उँ प्रवृति । नानहि-नानहिपी काजक रौत लेन सुगिया काकी ए कपे  
बका-ठैकी कवध नछै छुधि जगसँ लोकमाल-लोकमाल होग छुधि । उना जहिसा निआममे आशिक  
जगम, अलबामे गजोतक जगम होगत तहिसा बका-ठैकीसँ छेँ-छेँ गनती मरुँ क२ मरुँ रँनि  
जिगगीकेँ टिकुण रँना दैत दूदा मे वघरा काकाकेँ ले बहनि । मम-जानक जवाएन मम तेना क२  
ममकेँ जवरैत बहनि जे म्फ-म्फ छुकेत बहनि ।

दोहवा क२ सुगिया काकी रँजनी-

“गठुना घब छी, माँ-कीड । बहै तखनि एती बाति क२ कि ए एलौ । के छी ? ”

सुगिया काकीक रौनक मिठास वघरा कक्काक आत्माकेँ लौँडा देनकनि । देखन देह टिनहन  
चेहवाक चूचूनाएन सरब, रँजनी-

“अपले छी । ”

“एती बाति क२ एहेन जगहपव कि ए एलौ, एक तँ जाडसँ ठिँवब रौन-माड, रिनक कीड ी-  
फतिगी आरि क२ बाति रिश्राय करैत हएत तैपव ओकवा देहपव हाथ कि पएव पडत तँ ओ  
पौड एहाँक दुख रूमत आकि नपकि क२ अपन रीथसँ रिखा दैत । ”

“हँ, मे तँ अपला रूमै छी, तहीले ले हाथमे गजोत बखल छी । हाथ-पएवमे गजोत बहलै  
ले लोक पएले-पएले दुनियाँकेँ ठहनि नगए आ हाथसँ कवरौ करैए । ”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रैजेत-रैजेत बघरा काका राजि तै गेना दूदा नगले मसमे उँठि गेननि जे खलेले काज रिजमारे डी । जै गपे कवक हएत तै माले-घबक घुब पज्जामि रैस गप-सगुप कवरै । मालो-जानक आत्मा रूमते जे जहिया जाड हमरा होएत तहिया तै पौमिनिहारोके होएत डै । एहेन पौमिनिहारक प्रेमसँ जैरि । रैजना-

“रैड दूबकान भ२ गेन अछि, थोडो गोबना-टिपडी न२ लिख आ मानक घबमे घुब क२ दियो । ”

गतिक रात सुनि सुगिया काकी किछु ले रैजनी । मस मनि गेननि जे किछु छथि तै छथि दूदा गृहसुमारी तै एह छथि । लिके डुगव ले खेत-पखासँ न२ क२ मान-जान आ मसुख धरि बकुडाक भाव कर्नापर छन्हि । नग आरि रैजनी-

“उमरे रेव तेहेन अ शीतनहरी नाथि देनक जे जेहो जवना-काठीक गुबिया क२ बखल छेलो सेहो निघटि गेन, तेपव तेहेन नथान नाथि देनक जे कोना ठेकान अछि जे केते दिन नथले बहत ? ”

सुगिया काकीक जणव रात सुनि बघरा काका गुम भ२ गेना, दूदा नगले मसमे हुँडननि-

“कौकूका टिप्टा आग किअ करै डी, कालिजे कालि डै । कोना ठेकान अछि जे एहल मस कौकूको हएत । ”

दुष्टी गोबना आ चाबि-पाँट्टी टिपडी उँठा, मष्टिया तेनक डिरिया आ सनाग आनि आगु-आगु सुगिया काकी आ पाडु-पाडु बघरा काका आरि मानक घबमे घुब केननि । सुखन गोगठा, तगमे अडन मष्टिया तेन सनागक नपकी पकडि ते नपकि लेनक । घुब धरि गेन । fff

०३ फरवरी २०१४





५७

उना समैया काका तौरेसँ ठोह फाँडा-फाँडा कले डना दूदा ह्य रूमलौ नख रजेमे । सेहो उना ले रूमलौ, बरि बहल गामक अगला ठेनरैया आ आला-आला ठेनरैया सबकेँ, जेबक-जेब काकाकेँ देखे जागत-अरैत देखि जखनि प्छुनि तखनि भाँज नगन । पहिल भेन जे माघक तेसब मकड़ डी लोक हवड़ी सेना जागत ह्यत दूदा नगले घुमि किए बहन अछि । भाँज नगिते मसमे उँठन जे काम-धाम तँ जिनगी भवि चनिते बहत दूदा जँ कही रिच्छेमे कक्काक प्राण छुँटि जेतनि तखनि तँ तैँठे ल हेता । मात्र चेतनशुष्या देहसँ तैँठे ह्यत । उना देहोक महत तँ अछिये, जँ से ले अछि तँ जिनगी भवि एकरे पाछु किए नगन बहे डी ।

ठेहियरैत-रैहियरैत रिदा भेलौ । बसतामे जेते लोकसँ प्छुनि तेते बगक रात सुनिध । पहिल गोठेसँ प्छुनि तँ राजन-

“अगल कबमे ल कियो हँसत मरैए तँ कियो रँपहारि काँटि मरैए ।”

एक तँ उल्ला बग-रिबगक मसक रिदाबमे उमवाएन बही तैगव कर्मक हन हँसत भेन आकि काषर, भाँजे ल रूमलौ । मस भेन जे ह्येव प्छुनि दूदा ह्येव भेन जे जँ कही कहि दिखे जे समैक हन पाँरि कयो हँसए तँ कियो कलेए । तखनि तँ एकहवी घुबडी दोहवा जएत । जखल दोहवाएत तखल आबो मरुत ह्यत तगसँ नीक जे दोसब-तेसबकेँ प्छुने ल करिध । जखनि तैँठे कबए जागए बहन डी तखनि पँहुँटना पडाति जे प्छुनेक आकि रूमैक ह्यत से दूखाँत्रैए भ२ जएत । जखिा डिडा याएन-रैतियाएन पाँरि आकि गलहाएन-मसहाएन राह दूखाँत्र होगते अगल गति पकड़ि नगए तखिा ल भरैत भर दूखाँत्र होगते भरमागबमे समा समाँरि जेत अछि ।

नजबि पडा ते देखनिगि जे समैया काका घोला पमारि क२ कामियोँ बहना अछि आ घुल-घुला क२ अगल जिनगीक गीतो गारि बहना अछि । एक तँ उल्ला उमवाएन मस तैगव आबो उमवी नगि गेन । चनछेलौ देखि दूनु हाथ जोडा प्रणाम करैत प्छुनिगि-

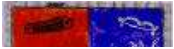
“काका, मस केहेन नहैए ?”

ले रँजैया । जित्तमा कबए जित्तान् रँनि गेन छेलौ दूदा उ तँ जेना रिहाडा मे उँरिया गेन होथि तखिा रँजना-

“जेते धन-धडन डन सभ सँटि गेन, दूदा मसक ताग ले मेँठाएन, जे घड डी जे पहव डी, डी । तल तैँठे-घाँटि भ२ गेन ।”

समैया काका जेना कानछक पुजागव रँसन होथि तखिा रँजए नगना । तजंग प्रयात जकाँ सुलैत बहलौ, सुलैत बहलौ । । fff

०१ फरवरी २०१४



बनया-पोचना

देरघबसँ अरैत बनी, जमीनीहक झुमरिब खाशामे एक गोठे भेठना । भेठना कि मिमठीक जे  
कबसी रँगन छन उगपव पहिलसँ अमगले रैसन बनी, हुनो आरि कइ रैसना । कशीकान तँ हुनो चूपे  
बहना आ हमाछु चूपे बहलौं झुदा जखनि चूलेठी निकानि तमाकन चूलेक स्वर-साव केलौं आकि रँजना-

“एक जूम रँठ । देरै ।”

पहिन दिसक भेठ, केषा कइ पुढितिसि जे भेठे जूम खाग जी आकि नमहव । अगले अमगल  
कवए नगलौं जे झूहक एकेठे दाँत ले भूँठन देखे छियनि तगसँ भविसक भेठे जूम खागत हेता ।  
सएह करैक मल भेन, झुदा खुना पढाति जँ अजमे भेन तखनि खुनहा फले की हएत ! तँए अहगबसँ  
तँ ले झुदा ममोनका घाशी नगा देनिध । तबहतखीपव गुँठा चए नगन । घिया-पुताक खेन जहानि  
एतएसँ चनिहें बूँठि या, गोकड़ि समेगहें बूँठि या... । रँहिपव गुँगरी चनए नगन ।

घँठा भवि गाड़ी पढुअएन । भविपोथ दुनु गोठेक रीच गपो-सगुप भेन आ दुरैव चाहो-पान  
चनन । गाड़ीक एके कोठनीमे रैस कइ भवि बस्ता गप-सगुप करैत एलौं । दबतंगा अरैक बहए ।  
हालाघाठमे जखनि उ उँतवए नगना तँ कहनि-

“हएव कहिया भेठ-घँठ हएरँ आकि ले हएरँ ।”

हमाछु ठेकावा देनिगनि-

“एँ देहक कोला ठेकाव अछि, अखल डिर्बसँ खमि पडरँ, प्राण तियागि देरँ ।”

हठ करि कइ अगला संग उँतारि लेनि । दु दिन गहुनाग चनन । दु दिन पढाति जखनि गाम  
एलौं तँ रँठी पुढनक-

“दु दिन केतए हवाएन छेलौं ?”

जेना-जेना भेन, सब रात सुना देनिध । सुनि कइ राजन-

“एना जे अखा-दोखा-तेखा दोस्ती हुअ नगन तँ दुनियेँ अछन भइ जएत ।”

जहिया गरैया, खिसकव शुक कम सबमे करैए तहिया रँठे झूह दारि कइ राजन छन ।  
दोखा-तेखा तँ नीक जकाँ सुनलौं झुदा अखा कहनक आकि सखा से नीक जकाँ सुनलें ले केलौं ।  
मममे उँठन दोखा राज तँ पानि उँ रँगलैए आ हरो झुदा तेखा तँ पाथरैठी रँगलैए । उँ चाहे कोगना  
कहरैए आकि पाथर झुदा दुनुक (राज-मिमठी) प्रेम केते प्रगाठ होए जे जूग-जूगान्तव के कए जे  
जन्म-जन्मान्तव धवि उँहिया ठाठ बहए जहिया शुकमे ठाठ होए ।

उना रँसी थकाव ले बहए हायेघाठसँ अएन बनी, झुदा पाछु पडडि जोडा रँजलौं-

“रौआ, थकसँ देह भविआएन अछि, पहिल नहा-खा कइ किछु समय अवाव कवरँ तखनि मल  
खनहन हएत । पढाति सरिस्तव रात कवरँह ।”

थकाव सुनि रँठी अण जवारदेही बुमि गमे बहि गेन । fff

१० फेब्रुवरी २०१४

## पेठगवाह

कोरुका भोजक अजमेर सौमे गामेक लोकके छेठे नगन द्वाद सभसँ रैमी नगननि फुसुमी काकीके । रैमी छेठे नलीक काका भेन जे भोजक अगुआ लतेजी काका छेनथि । घबरेया तँ अगन मागसक सबाव लेन खटक जे मल रैलील छन ओ पाग-दुकती लेनक । किए ओकव मल कहते जे दुखावपव सँ पंच अकटी-दोकटी रैजेत गेला । मल तँ यएह ल कहते जे समाज जेतके खट मगननि से तँ दगए देनियनि तथनि काजक भाव समाजक दुपव गेन । जँ कियो ले रूमत रैककेन अगुगत तँ अगुआरै, अगन दूह दुगव कवता । देखे छी जे केतो राविका ० समाज टावो क२ अगना एंठाम साहि दगए तँ केतो देखे छी भनमीए अगन कवावि टुका तीमल-तवकारीमे लालक गडरुड १ क२ दगए । केतो देखे छी रैजावसँ सडन-पाकन समाज कीनि दुगव करैए । तगसँ घबरेयाके की ? जानए जे आ जानए जता । सातु मल युन किए पिसएत ? रैकजेवी जँ कियो पीमिनिहावि रीना उलोम-फठकले घुषाएन अल्ल पीसत तँ दोख केकव हेते । रैककेनके कोला जराँ होग छे, जेकवा जे फुड छे से रैजरो करैए आ कवरौ करैए । कियो जँ अजमेक दोख घबरेयाक माथपव देत से थोछ मागत, अगना मल ल गराही दगते हेते । काकीक मल ठमकननि, ठमकननि कि मागि गेननि जे भोजेत निर्दोख अछि । जहिना कोला न्यायानयक न्यायाधीनि दुव-पाणि रैड । अगन पदक मग अगन गविम रैठ । आतम पवामेमे जोडा लौत अछि तहिना फुसुमी काकी भोजेतके धिषमा-धीन भेना पछातिओ पणिपत रैना कमन युन जकाँ युना देननि । द्वाद मल अमथिव ले बहननि, आगु रैठा गेननि ।

फुसुमी काकीक बजवि समाज दिस गेननि । समाजक एहेन दुवगति भेन जे अलपोखाँ पंच सभ जे यए-फए रैजन से तँ रैजरे कएन द्वाद ३ जे रैजन जे एहेन बही तँ पुजापव रैसरे ल कवी । गामक बखनक की ! कोला कि जग गामक पंच बहए तही गामक लोकै रैजत आकि सँम-भोवक तरेगन जकाँ एकठा नटा या ठँहि देत आकि गामसँ आन गाम धविक नटा या हूँ-हूँ कवए नगत । आला-आन गामक लोक रैजत । लोको तँ लोक छी किल, मल न माग हम तोहव मेहमा । जहिना रैजे छी तहिना नीन समाज अगन समाजक हविच्छ कग सोममे देखरि से नीक ? आकि रैजे छी काग जकाँ आ करै छी कोखा जकाँ से नीक । दुनुकेँ नागडा जोडा काग-तुसुडी मानरै, अगन-अगन मल मानरै भेन । समाजे गाम भेन आ गामे ल समाज, द्वाद गाम तँ रैक स्रकप निवरिकाव नीवरै अछि ओकव कोन दोख । मसुथे ल समाज रैना सुनसँ शून्य धवि फुड-त-हुनागत अछि । द्वाद समाजो टुकड १-टुकड १मे तेना कष्ट-थोष्टि गेन अछि जे नीक-अवनाक रिटाव जष्टनसँ जष्टनतव रैनि गेन अछि । फुसुमी काकीक मल ठमकि गेननि । द्वाद सुदर्शन छफ जकाँ मल तेना नटेत बहन जे कोला दिशा नीक जकाँ रूमिए ल परै छेनी । तथल लताजी काका अँगन पहुँचना । जेना साँठ-पावा अगन कवावि अस्वतेत तहिना फुसुमी काकी रैघुआगत रैजनी-

“केते दिस मशाली केतो जे एहेन काजमे १ ले पडू, आरि ल ओ बाजा भोज छथि आ ल हुकव दरवाव छहि ।”

10 भोजमे परसैबला

11 भोज काज



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जहिसा छुँठन घबसे अकामक रूँस सोने नलौत तहिसा कसुमी काकीक रौन लताजी कक्काक छुँदैकेँ रेंदि देनकनि । छुँठपछागत मस अराक भ२ गेननि । बजबि काकीक अँथिमे बाछ नगननि । रँजना किछ ल । दोहवरेत कसुमी काकी रँजनी-

“जथनि अहाँ देख लल छी जे अली समाजमे केते भोज-काज भेन अछि जगमे केतेकोकेँ जमो भेननि आ अजमो । दूदा जमि-अजमेक भागी के ? ”

जमि अजमे सुनि लताजी काका गोरँव नूँघोन दूदवी जकाँ दूँह खोनननि । रँजना-

“अगला ले अथनि धरि रूँसि गेलौँ अछि जे हिसारमे गनती केतए भेन, जे एषा भेन ! ”

हिसार सुनि कसुमी काकी रँजनी-

“कागत पवहक हिसार काजमे ले काज करै छै, केतो रावीक समाल अगला घब माहि दगए तँ केतो भनमि अगल कगबि असुनि लोषगरे-अलोष रँषा दगए, तँ केतो खेनिहारे कोला रसुतक नागबि पकडि चपेत-चपेत टाषि दगए । ”

गलौक रिटाव सुनि लताजी कक्काक मस मासि गेननि जे भकिसक मएह भेन हएत । रँजना-

“गौके कह छी । ”

“गौके की कहब । अहाँ अगल पछेगलाह छी, तेकरे हन भेन । ” । fff

१४ फेब्रुवरी २०१४



बडका माता

“अनमोहात भइ गेल ! एहेन कहियो ल देखल छेलिअ !”

-उडागणपव पडन, अणन फहवर जौडा अठानी बरथक मंगली दादी बजली ।

जहिया राँठ छलेत रँठेली हारि-मारि थकाण पीड मँ पीड एन रँजेत तहिया मंगली दादी सेहो बजली । दोसबागत नगमे लै तँए कियो लै सुनि सौनक । जहिया अकाममे घेघक ठूकड़ी उँडा - उँडा सुर्जक प्रताकेँ सँपेत तहिया सोगाएन सोग दादीक रौनतीकेँ सँपि देनकनि । जगसँ रौनती तँ रँल भेननि द्दा रिटाव तीतले-तीतव सुबफुनियाँ मारि रिचइ नगननि । जूग रँदनि गेल बृणदारणक गोपी एक मेकेण्डक मतवह सोगा भागकेँ जूग मारि प्रयसँ अणन लै हूअ छहित, द्दा से खोड अछि । अणले कियो रँजेअ जे कनहग अथनि ठेवरें भेन अछि, समखागउ पडुअएले छै आ उँकदो रँहूत रँकी छै । केता हजाव रँवथ आरो बहत । मणमे रिचविते बहनि आकि दूरँया नग पँहूत गेली । पँहूटिते रिटाव उँचननि, अँ रीच तँ मणथक केता पीठ ी गुजवि जएत । मणथक जिनगीए केहेँ होग छै ! तद्दमे चारि ठूकड़ी अछि । जँ मण बरथक मारन तँ गटीस-गटीस बरथक ठूकड़ी भेन, लै जँ अमनी मारन तँ रीस बरथक भेन आ जँ सबकारी मारन तँ मारि बरथक पणवह रँवथ भेन । तग हिसारसँ कनहगक किए ल रँसी उँकदा पडुअएले छै । तेरीच पोता मलाज आरि अँगनामे बोजन-

“दडिनरबिया छैनमे रँडकी माता एनथिण, तँए उँग छैन दिस लै जएरँ ।”

अँगनामे दोसबागत लै, उडागणपव पडन मंगली दादी जेवसँ पोताकेँ सोव पाडा पडुनथिण-

“रौआ की भेन दडिनरारि छैनमे ?”

दादीक प्रम मलाजक मणकेँ जेना धका मारनक । धका मारनक अँ जे दादी पडुननि । नगमे आरि मलाज बोजन-

“दादी, दडिनरारि छैनमे रँडकी माता एनथिण, लोक मभ रँजेअ जे उँग छैन लै जगहेँ ।”

एक तँ नूणएन पाकन ठुव अँसत दादीक म्वाण शक्ति, तेपव रँडकी माता सुनि अँसत अर्थ लै बूमि सकली । बूमरौ केना करितथि माएसँ दादी लै रँनि गेल छेली । पोताक राँतकेँ सुनि मणमे बथि लेली जे रँष्टी उँत आकि प्तोहू तँ पछि लेरँ । रौनरोध क्वाँल गेल जे रँडकी माता केकवा कह छै । देरीउ होगए आ दावरीउ होगए । जीरणदाणीउ होगए आ लेनिहाक्रीउ होगए । भेन अँ जे बोदियाएन सोण भइ गेल । खानी सोल लै, बोदियाएन अखाठ ी लै रँविसन । हागण-टेतक म्वाँअएन लौद रँठ-रँठ अँ म्वाँकपा रँनि पृथीकेँ गवसि लेनक । अँ म्वाँकपा रँनरौ केना लै करेत ? पारिष्कारिक छुटिये लै समागत भइ गेल । अणन सहयोगीक भवणुव सहयोग भेँरै केले । बमता राँठक रँसन मारि गर्दा-धुवा रँनि धुविया पकडा अकामक बसकेँ टुँ म लेनक, गाड-रिबिड अणन हरितमा तियाणि पीड मँ पीड ी धवतीपव मरुडि गेल । पोथवि-गलाव, धाव-धुव मारिष्कारिक थारि रँनि गेल । सुकजक प्रथव प्रताकेँ धवती-अकाम रीचक सेना लै बोकि हारि मारि कतराहि धइ लेनक, एहेन म्वाँथिये कानदफक पुजा केहेण हएत ? गामे-गाम वंग-रिबंगक तगएन तग रोग-रियाणिक मंग छेँठकी मातासँ सेमली, सेमली रँडकी माता 2 पसरि गेल ! एक तँ उँहिया म्वाँक गकअएन गवसि तेपव देहक तपित तापसँ तपीआ जिनगीक कठिन पवीडामे गामक-गाम लोक हँसि गेल ।

12 खसरासँ लऽ कऽ बडकी गोटी धरि



शुकसे जूथनि दडिगरारि ठैलमे टेचकक आगमल भेल आकि एके-दुगए काल-झूह सौंसे गाम समाटाव पहुँच गेल । यैयाक आगमल होगते ओमहा-धार्मिक रंग मालि-मिबदंग उठि कइ ठाठ भेल । रंग-रंगक प्रहार ठैलपव हुअ नगन । ओ सभ तीस सानसँ गहरव खमा अलठौल अछि । तेकरे हन भेष्ट बहन छै । तेतरो लै आला गामोक आ आन ठैलोक आएर-जाएर घष्टैत-घष्टैत घष्टैया गेल । एकैसो घबक ठैलके जेना गामो आ आला गाम झरे-मलेले छोर्छि देनक ।

छोठकी माता13 अगल रूप रँठरैत गेल । जहिया शीबबमे रँठन तहिया योसयो रँठैत रंग-रंग चने नगन । एकैसो परिवार योगसँ आनसत भइ गेल । आनो दडिगरारिये ठैलठौ लै गामक आला ठैल आ आला-आला गाममे बियाधि पमरि गेल ।

उछागलपव पडन रंगनी दादीक मल फडफडनेनि । यैयाका14 आगमल तँ टैत-रैशोथ आकि आमीन-कातिकमे होग छेलै, जूथनि वीत-रैरहाव रँदले छै । अथनि तँ सौल छी तथनि किए भेल ? अथनि तँ रौध-रौध हविआएन बहत, पोथनि-माँथनि नइ कइ चव-टाँटड जनजनाएन बहत, से किए ल अछि ? मामक ठैकान तँ दादीके मल पडननि दूदा योसमक ठैकाल ल बहननि । ठैकालो केना बहितनि, घबहष्टैया घबहष्टैक समैक नडन-कवम ठैकना नकए मल बथेथ, किमान किमानी आ रैंगारी रैंगारिक, से तँ आरै दादीमे लै बहननि । तँ मल लै रूमि पेलकनि । दूदा सुवाएन मल सगल नगननि । सगलागते थापडि क मकेक नारी जकाँ चकि धवतीपव खननि । खमिसे चकलनी-

“कहाँ दल माते-आठैठी मखानक हणिका जकाँ देरसुनवाके तेहेन निकलि गेल अछि जे तला-भगन-रेनन भइ गेल अछि । रौपो-माए डले नगमे लै जाग छै । जेरौ केना कबते । जूथनि एक घबक मातठौ सुनीगण मात सीठीमे तेना रँठौ जागए जे मलखक शिकले-सुवति रँदनि जाग छै, तहिया ल रँवो-रँवारीक अछि । साधावा गेष्टमड रँवना जँ वद-दमरँना ठैल जाएत तँ जामिये कइ ल ठोठिया रीथके गहुलक रँलोत... ।”

एकैसो घबक ठैलमे ल एकठौ परिवार नागा बहन आ ल एकठौ मलख । जहिया दूनिगाँक सभ पकथके शारीक रंग कइ देन जाग छै, तहिया । ठैलक सभ टेचक बियाधिसँ रंग भइ गेल । के केकवा देखत । सरँहक मल कइ, जल बहत तथल ल जहान । जँ जारै से लै बहत तँ जहान की । सभ दिन सभ कान दूनिगाँक उदए-पवने तँ होगते छै, तँ कि सभने एक होग छै । दूक छैष्ट-फष्टमे जे जेहेन रीछिनिहाव बहन ओ ओहेन कइ रीछि नगए । अनासम स्मृति जगननि । जगिसे मल पडननि अगला देहमे भेल दानीस रँवथ पहिगका टेचक । ममिनी यैया मल पडि ते देह ओहिया मिहबि गेलनि जेना रँथीक रूँ पडि ते अकाममे उडैत टिडकेँ होगत । एक तँ उमेवक जर्जव अंग तेपव दानीस रँथीक स्मृति तेना कइ रंगनी दादीकेँ गवनि लेनकनि जे गवाँसक टेष्टसँ जहिया अंग भइ जागत तहिया भइ गेली । रँथीएन तल-मल तेना अकडि दरँनकनि जे झूह भवभलेननि-

“हे भगरान ! अलने कोन नवकमे बथल छी, कहिया धवि बाथर ।”

दूदा नगने मल रँदनि गेलनि । रँदनि जे गेलनि जे जारै आँधि तके छी तारै अहिया ल होगतो बहत आ देखरौ-भोगरौ करैत बहरै । तगसँ शीक जे नइ चनु जिलगीक उगगाव जैठाम जे सभ लै देखरै ।

13 खसरा

14 चेचक



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

उसबक दड्डिनरवि भागमे मंगली दादीक उडागण, तहरीच रैठी बुनियाव आंगण पहुँचन । मागक सब रात तँ बुनियाव ले सुनि सकन दूदा अतिम रात, 'न२ चनु... ।' सुननक । सुनिते बुनियावक मसमे उठन, माए की राजि बहन अछि । सरँ दनि न२ चनु केतए न२ चनु ? मस दूडा याएन । दूडा यागते भेन जे तबिसक रोग-पीड सँ रोगाएन-पीड एन मस तडपि बहन छै । खेब भेलौ जे खलरे मसकेँ गुनारै छी । मागउ कियो आन थोडए छी जे पड्डिमे सँकोट हएत । राजन-

“माए, की भेलौ, एषा किए रैजै छै ? ”

बुनियावक रौन सुनि मंगली दादीक दूरा जगननि दूरंगव होगत रैजनी-

“सुले छी जे गाममे मैयाक आगमन भेन अछि ? ”

मागक रात सुनि बुनियाव ताबतम कबए नगन जे माए नग सुठ केना राजरँ ? तदुमे जखनि कहियो ले रैजलौ, दूदा प्रभक जराँरो केना देर । जलिया दड्डिनरवि रैठक बस्ता छोडा देलौ, तलिया तँ उतवराणिउ रैठक । खेब तखनि केना हँ कि ले कहलौ । जलिया टिड रौनसँ रौन मिनरैत तलिया बुनियाव मागक रौनसँ रौन मिनरैत राजन-

“हँ, माए ठीके भेन अछि । ”

रैठीक रौन सुनि मंगली दादीकेँ सुखस पडननि । दोहबरैत रैजनी-

“आला-गाममे भेन अछि आकि अगल गामठा मे ? ”

दादीक मस रैठेत देखि मसमे भेन जे अखनि धरि सुननेहे राजि रैजलौ, आन गामक जँ राजरँ आ अठ । दिखए जे अगला हठम-परिवार तँ उग गाममे अगळे, कनी जिनसा क२ आरन तखनि तँ भावी पहपष्टि हएत । बस्ता पेशा केतए हँसि जाएरँ तेकव ठीक अछि । राजन-

“माए, कनी नीक जकाँ उँजियरै छी तखनि नीक जकाँ कहलौ । सुले छी जे कहांस उमहा-धागम भाँउ खेनाएन तँ कहनके, गामक सीमान राहि देलिय२, तखनि तँ जाणक रँदना जाण दिख पडतह । ”

मंगली दादी पुडनथिन-

“रैद की कहनके ? ”

उमहा-रैदक नाँउ सुनि बुनियावक मस माणि गेन जे रिया सुठ रैजल काज ले चनत । दूदा जलिया रौनरोध तलिया थाकन-ठेहियाएन बुठ-बुठ षुसकेँ रौंसरँ रँड भावी नहियेँ अछि । राजन-

“अलरे कोष खेडमे पड छै । वाम-वाम कब सब नीक भ२ जेते । ”

वाम-वाम सुनि मंगली दादी ताबतम कबए नगनी जे वाम-वाम की कहनक । मरैकान वाम-वामकेँ सत् लोक मालेए । अथना काज केना पडाति वाम-वाम कहि दूतकानि दग छै । शुभ काजक रैव जँ वाम-वाम सत् छी राजरँ तँ कपव खेड रैनि कवा जेरँ, तखनि बुनियाव की राजन । मागउ वगडि रैजनी-

“रौआ, उमहा-गुणी ले देखनक-सुननक लेन ? ”

मागक वगडगड रात सुनि बुनियाव वगड गगत राजन-

“लति-लति कहि कातेसँ छुअरँ छोडा सतदिया रोग कहि जारै-मरैजे छोडा देनक । ”fff



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१४ फरवरी २०१४





बि दे ह विदेह

सुधीवाक रिखाहक गण-सगुण उठन । तीस दिन पहिले तक री.ए.क विजयस्थ निकलन छेलै ।  
वाङ्मयीतिशोमत्रे आनस पाबि सुधीवाक मन मागि गेल छेल जे वाङ्-काङ् रूमे-चनरैक नुबिक प्रमाणपत्र  
हानिनिर्मिती दऽ देलक ।

सुधीवाक पिता प्राध्यापक सहित संगी-रीट रैस चाहो-पास करैत बहथि आ ठहाका-पव-ठहाका सेहो  
दैत बहथिन । ठहाकाक काका भेल जे अगल ठावठेक तीतले रैथीक रिखाहक गव नगि गेलनि ।  
रैथी वाङ्मयीतिशोमत्रेक प्राध्यापक छथिन । मान भवि पहिले लोकबी भेलनि । रैव-कन्या जँ एक विद्यक  
ज्ञानकाव हूअ तँ ओ जिनगीक जेल सोनाक सुगंधे भेल । संगी सतकेँ रैजलैक काका प्राध्यापक सहित  
सरेहक रीट सुधीवाक रिखाहक चर्च उठा, रैथीक रिटाव ज्ञान चहलनि ।

गद-गदाएन मल प्राध्यापक सहित सुधीवा दिस देखैत संगीक रीट रैजना-

“रैथीक रिखाह पम्निगव घबसे हएत ।”

संगी सत जेना रैसक एकठा टोंगरामे अलकौ गोठे पकड़ि सह दगए तलिया मल-मल सत  
देलकनि । दूदा सुधीवा वाङ्मयीतिशोमत्रेक छात्रा डी, अगला नगसँ नऽ कऽ दुनियाँ धरि वाङ्-काङ्क  
प्रफिया जलैए । रैजना-

“रैथी, केहेन परिवारमे पठरैए छै डी ?”

पिता दूसे बहना । दोसब जे संगी बहथिन ओ रैजना-

“रैथी, सहाकृत परिवार, खानदानी परिवार, तहमे मातो भाँक भैयाबीमे सतसँ छोट भाएक  
संग ।”

सुधीवा-

“जहिया मात तन अकाम उंगव अछि तहिया मात तन पतानो । भैयाबीक मातम तनकेँ उंगव-  
निदुँ तजरीज केनि ?”fff

१६ फरवरी २०१४

## रैकठांग

उडागण जोडा ते दू पवानी नान भायके रैकठांग शुक भ२ गेनमि । रैवहमसिया रैकठांग उँ श्रुत-अश्रुतक मदी ले । मदी उँ उतए होगए जेतए मिथिगत किरिया-कनाप चलेत । उना देसरो कावा छेनमि, से छेनमि पति-पनीक रीट जिनगीक समरंण । उँ कहियो एहलो भागए जाग छुनहि जे स्वतनीउ वातिमे आ कहियो अकनरेवामे तेहेन परोडक दूडी जकाँ सवेड निकले छुनहि जे अउ सीउ-पउ सीउ आ दिखदोरान गामसँ हाजिन कहि अपन दूह रैवजि नग छुथि । उना से उलिया ले कियो रैवजनमि, किछु दिन पहिले जेतथी भायसँ मिसतवि वातिमे तेहेन रैवजवण रैवजनमि जे सौसे गामक लोक जमा भ२ गेनमि । दूदा गौआकेँ चारसुनी दी जे जेतथीए भायकेँ दोथी रैना दूह रैव करेजे कहि, जोडा देनकमि । रात कोला कि किछु बहे, एतरे बहे जे किछु एहलो काज होगए जेकव रैवजित अकनरेवामे कएन जाए । उँ छुष्टी साँठ जकाँ दू पवानी नान भायकेँ गौआँ रूमि, एक घब डागला रैवजे छै कहि रिषु शीक पकउन उडागणपव कव घुमि-घुमि कछुमछु कबितो, काणमे मउ पउरितो अउ सीया-पउ सीया ले नगमे पहुँटेक सहम करेत आ ले स्वतने-सुतन कियो माली करैरना । तेकव कावा ए ले बहे जे नान भायसँ आन कम तागतिरना छुथि आकि दउगव-पेटगव कम छुथि । दूदा कावा जलिया धाक मउ केतो धाल मउ भ२ जागए आ केतो मउ ह रैमि मउ रैलेए । माले ए जे एक धाक खेतीक रीट जँ दोसव धाक आरि गेन उँ उ धाला भेन आ मउ । भेन । धाक भेन जे जँ एकवगाह दोसवमे चलि गेलो, दूदा हुँटे-पकेक, नमती-मोठीग आ गुदाक वंग जँ एक होड, उँ कि ए धाक भेन । दूदा तुनसीफुन आकि कणकजीव धाक खेतमे जँ उनाक धाक मिसउ । जाए तथमि की कहरे ? एकठी धाक दोसवसँ दम रैड नमहरो आ दम रैड मोठे होगए । आगकान उँ पावथी उकवा पकडा घबणीकेँ दमठी मोहव सुनरेक अधिकारी उँ रैमियेँ जेत किले । रैवराको टाहि । जेतगम एक-एक दावा पकडक रात अछि तेठाम जँ पँटदूथी कदाकमे गो-दूथी बुरकए चाररे उँ की जोडरो उँटित ? खैव जे होड... ।

रैवहमसिया रैकठांग उँ दू पवानी ओहेन अड्यमत जे घाँटे भवि एके आमन एके ठाँगे धेल बहे छुथि । उना नान भाय आ नान भोजीक रिटावक दूरी नमहव छुनहि दूदा रिया दूरी पाव केले सीमोपव नहियेँ पहुँचन जा सकैए । तदुमे मसुख सामाजिक प्राणी छी, जँ दूरी मसुखकेँ एकठाम बहेक सुत्र ले रैवत बहत उँ सदिकान भैसा-भैसी होगते बहत । विराह सुत्र उँ दू पवानी नान भायकेँ रैवहि देले छुनहि ।

दू पवानी नान भायक आमूका रैकठांग छेनमि नान भायक उ रिटाव जेकवा उ सिहान्तसँ जोडन छुनहि । तेरीट भोजीक स्वाति जगनमि आ रोडपी केव उरियाणमे नमि गेली दूदा नान भाय उडागणपव पउन बहना । जेना अमसी मल पानि रिटावपव पडा गेन होनहि तलिया । जलिया रैट्टाक शुकक शिक्षा जिनगीक संग अधिक दूर तक संग पुँडे तलिया नान भायक रिटाव मेहो संगे चलि बहन छुनहि । सिहान्तक रीट हँसन बहमि नान भायक रिटाव । चाह पीरिसँ पहिले नान भायक मल तुकछि गेनमि । तुकछेक कावा छेनमि जे अथमि धरि जे जिनगी बहनमि उ ए बहनमि जे जँ घब-रौहव एकवगाह काज हुँए उँ पहिले रौहवक क२ नी, पछाति घबक । तलिया दोसव रिटाव बहमि जे जँ अपला काज बहए ओहल काजक भाव जँ दोसवागतक होग उँ पहिले दोसवागतक कवरँ नीक । दूदा... तग रिटावमे हँसन । मलमे वंग-वंगक रात गाडीक पहिया जकाँ चलेत बहमि । पमिगत जलिया रीज कणमे एक दिन पाँकमे गउन बहे उँ दोसव दिन कमन सदुनी आथि मेहो रैलोले बहे तलिया नान भायक रिटाव उँपव-मिटाँ होगत बहमि । रैट्टेमे एक शुक ले अलेक शुक माए-रापसँ



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

न२ क२ साहित्य धरि क प्रकक उंगदमे काशमे पडत बहन जे सत् रोजी, केकरो अघटित ले कवि, सत्-धरि पावण कवी ! म्दा देखि की बहन छी । म् रमडि गेनमि, बुदबुदना-

“कियो अण कर्ता-धर्ता छी, सिहातक मंग कोना समयोता ले ।”

शिरणिग जकाँ रिटावक रीट खुष्टा गाडी देनमि ।

उडाणपव पडन नान भाय जिगगीक पवीडाक रीट हँसन छना । चाहमे कनी टीनी रँठरैत नान भोजी गद-गद जे दुनियाँक के एहेन प्रकथ अछि जे अण मरेच्छामँ जिगगी रँषा जेत ? तैठाम तँ अजमोन प्रकथ छथि । नगले पाडु घुसुकिये जेत । धुखगत चाहक कप दलिया हाथमँ उठरैत नान भोजी रँजनी-

“किए, महिस मोड जकाँ उडाण पकडल छी, उठरै चाह पीर आकि पडले बहरै ।”

नान भोजीक रात नान भायकेँ जँचनमि । फुडफुड । क२ उठि जेरूक पाग सेवियरै नगना । चाह नान भोजीक हाथमे । पाग सेवियरैत देखि भोजी रँषनी-

“भोले लोक बाम-नाम करैए, अहाँ पाग सेवियरै छी ।”

नान भोजीक मलारुति तैया नीक जकाँ परेखल । परेखल ३ छथि जे अणकव काजक किड होड, अण फवथी रँषनी जाए । तैपव दुबरनाक काजक समेपव सेहो नजबि बहनमि । दुबरना रँषी रिखाक सर्वजाम कीण भोले रँजाव जाएत । नान भायक हाथमे पाग ले बहनमि, तँए युमरैत कहल बहनमि-

“नख-दस रँजे वाति तक पाग उत, काजक घबमे अलले ले रँसह, रँजाव जागमँ पहिल तोवा पाग पहुँचा देरैह ।”

छथ रँजेक समए देल बहनमि । अथिदना रिमरामु दुबरना, तँए पागक चिच्छता मममँ छठी लले बहए । जलिया भक्तक भगराणपव मँ छष्टि भगराण रँषि जागए, तलिया ।

चाह पीर नान भाय सोमे दुबरना उगठाम रिदा भेना । रिदा होगते नान भोजी रँषि देनमि-

“केतए जाग छी ?”

“दुबरनाकेँ पाग दगले ।”

“भोले-भोव अछुकेँ किड फुडल ले जे अलले रिदा भेलौ ?”

“की अलले ?”

“जेकवा खगता बह छै, उ अलले दोगन अरैए ।”

“हमरुँ खगता बुमलिँ तँए ल दोगन जाग छी ।”

पतिक सकताएन रिटाव सुनि नान भोजी ठामकि गेली । रँजनी किड ले । म्दा नजबिक नानी कतियाए नगनमि । जलिया रीघक आगु पडल दुनुकेँ 15 जरब नगि जाग छै तलिया नानो भाय आ नान भोजीकेँ हूँ नगनमि । म्दा दुनुक जरबक दु कावण छेनमि । केकरो बद्-रँसातमँ एना पडति नहनेमँ अरैत तँ केकरो नहनेमँ पडति बद्-रँसातमे गेना पडति अरैत । नान भाय अण रिटावक



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पाठु अणष माणक संग परिवारक सन्नाणक बक्छाक रातमे दुमि कनिगाएन जागत बहथि तँ तान भौज्जी अणष माण-सन्नाणमे । fff

२४ फब्रवरी २०१४

विदेह नूतन अंक भाषापाक बचनावेखन-

गहिनीकोय-मैथिली- / मैथिलीकोय-गहिनी- प्राजेक्टकेँ आगु रँढाँ, अणष स्वमार आ योगदान ङ-मेन द्वारा [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाँडु ।

**१.भावत आ लपावक मैथिली भाषा-रैलानिक लोकनि द्वारा रँनाओन माणक गौरी आ २.मैथिलीमे भाषा सन्नादन पाठक्रम**

**१.लपाव आ भावतक मैथिली भाषा-रैलानिक लोकनि द्वारा रँनाओन माणक गौरी**

**१.१. लपावक मैथिली भाषा रैलानिक लोकनि द्वारा रँनाओन माणक उँचाका आ लेखन गौरी**

(भाषाशास्त्री डा. बामारताव यादवरक पाकाकेँ पूर्ण कपसँ सन्ध नः निर्धारित)

**मैथिलीमे उँचाका तथा लेखन**

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षरावः पञ्चमाक्षरवास्तुजात ७, ए३, ण, न एरी म अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अक्षराव निरुद्धक अस्तुमे जाहि रञ्जाक अक्षर बहैत अछि ओही रञ्जाक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अक्ष (क रञ्जाक बहरीक कावणे अस्तुमे ङ आएन अछि । )

पञ्च (च रञ्जाक बहरीक कावणे अस्तुमे ए३ आएन अछि । )

खञ्च (छ रञ्जाक बहरीक कावणे अस्तुमे ण आएन अछि । )

सञ्चि (त रञ्जाक बहरीक कावणे अस्तुमे न् आएन अछि । )

खञ्च (प रञ्जाक बहरीक कावणे अस्तुमे म् आएन अछि । )

उँपरहाँउ रात मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक रँदनामे अरिकाशि जगहपब अक्षरावक प्रयोग देखन जागड । जेना- अक, पच, खड, सधि, खड आदि । राकवणदि पञ्चित गोरिन्द माक कहरी दुमि जे करञ्च, चरञ्च आ छरञ्चसँ पूर्ण अक्षराव निखन जाए तथा तरञ्च आ परञ्चसँ पूर्ण पञ्चमाक्षर निखन जाए । जेना- अक, टचन, अँडा, अस्तु तथा कञ्चण । इदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रातकेँ नहि मालैत छथि । ओ लोकनि अस्तु आ कञ्चणक जगहपब सेहो अत आ कण निथेत देखन जागत छथि ।

नरीण पञ्चति किडु स्वरिधाज्जक अरुष्ट छैक । क्कि एक तँ एहिमे समल आ स्थानक रँचत होगत छैक । इदा कतोक रँव हस्तलेखन रा इदनामे अक्षरावक छोट सल रँन्दु स्पष्ट नहि भेनासँ अर्थक अर्थ होगत



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सेहो देखन जागत अछि । अक्षुस्त्रावक प्रयोगमे उँटाका-दोषक समुवारणा सेहो ततरँ देखन जागत अछि । एतदर्थ कसँ न२ क२ परस्रा धरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करबँ उँटित अछि । यसँ न२ क२ त्रु धरिक अक्षवक सञ्ज अक्षुस्त्रावक प्रयोग करबँमे कतहु कोणा बिराद नहि देखन जागड ।

२.ठ अा ठ : ठक उँटाका “व ह”जकाँ होगत अछि । अतः जत२ “व ह”क उँटाका हो ओत२ मात्र ठ लिखन जाए । आष ठाम खाली ठ लिखन जएरौक चाली । जेणा-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेउँआ, ठस्र, ठेवी, ठाकनि, ठाँठ आदि ।

ठ = गढाँग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, बूँठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उँपुर्हाउ शिष्ट, सतकेँ देखनासँ ङ सपुठ होगत अछि जे साधाकातया शिष्टक शुकमे ठ आ मधा तथा अक्षुमे ठ अरौत अछि । गएह नियम ड आ डक सम्दर्भ सेहो नागु होगत अछि ।

३.र अा रँ : मैथिलीमे “र”क उँटाका रँ कएन जागत अछि, झुदा ओकवा रँ कएमे नहि लिखन जएरौक चाली । जेणा- उँटाका : रँणुणाथ, रँद्या, नरँ, देरँता, रँष्टु, रँशि, रँदना आदि । एहि सतक स्रानपव फ्रमिः रँणुणाथ, रँद्या, नर, देरता, रँष्टु, रँशि, रँदना लिखरौक चाली । सामान्यतया र उँटाकाक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेणा- ओकीन, ओजह आदि ।

४.ज अा ज : कतहु-कतहु “ज”क उँटाका “ज”जकाँ करैत देखन जागत अछि, झुदा ओकवा ज नहि लिखरौक चाली । उँटाकामे यत्र, जदि, जझुणा, जुग, जारँत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जाएरँना शिष्ट, सतकेँ फ्रमिः यत्र, यदि, यझुणा, यग, यारत, योगी, यदु, यम लिखरौक चाली ।

३.१ अा य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत अछि ।

प्राटीन रतनी- कएन, जाए, हेअत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिष्टक शुकमे ए मात्र अरौत अछि । जेणा एहि, एणा, एकव, एहन आदि । एहि शिष्ट, सतक स्रानपव यहि, यणा, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि करबँक चाली । यद्यपि मैथिलीभायी थाक सहित किडु जातिमे शिष्टक आवस्रामे “ए”केँ य कहि उँटाका कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सम्दर्भमे प्राटीन पछतिक अक्षुस्त्रावण करबँ उँपुर्हाउ मणि एहि पुस्तकमे ओकले प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोणा सहजता आ दूकहताक रौत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसाधारणक उँटाका-शैली यक अपेक्षा एसँ रँसी निकट डेक । थाम क२ कएन, हएरँ आदि कतिपय शिष्टकेँ केन, हेरँ आदि कएमे कतहु-कतहु लिखन जाएरँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रँसी समीटीन प्रमाणीत करैत अछि ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

७. हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पत्रपरामे कोला रौतपर रैन दैत कान शिष्टक पाछाँ हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अणनहु, ओकवहु, तकौनहि, टोष्टहि, आणहु आदि । ऋदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकाव एरि हूक स्थानपर ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अणना, तकौने, टोष्टे, आला आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अदिकशितः यक उँचाव थ होगत अछि । जेना- यडल्ल (खडल्ल), योडशी (थोडशी), यष्टकोष (थष्टकोष), वृषेण (वृथेण), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।

+ ध्रुमि-जोप : निम्नलिखित अरन्धामे शिष्टसँ ध्रुमि-जोप भ२ जागत अछि:

(क) फियान्नयी प्रत्य अगमे य रा ए वृथु भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिले अक उँचाव दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव आगाँ जोप-सूचक छिन रा रिकारी ( / २) नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उँठए (उँठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क जेन, उँठ पडतौक ।

पठ२ गेनाह, क२ जेन, उँठ२ पडतौक ।

(ख) पुरिकानिक प्रत आय (आए) प्रत्यमे य (ए) वृथु भ२ जागछ, ऋदा जोप-सूचक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाए (ए) देरै, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरै, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य एक उँचाव फियापद, रँका, ओ विशेषा तीनुमे वृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसवि मानिनि छनि गेनि ।

अपूर्ण कप : दोसव मानिन छनि गेन ।

(घ) रतमान प्रदशुक अश्रिम त वृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रँजेत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठै अछि, रँजे अछि, गरै अछि ।

(ङ) फियापदक अरसाण एक, उँक, एँक तथा हीकमे वृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: छियोक, छियेक, छनीक, छोक, छैक, अरिठैक, होगक ।

अपूर्ण कप : छियो, छिये, छनी, छो, छै, अरिठै, होग ।

(च) फियापदीय प्रत्य ऋ, हू तथा हकावक जोप भ२ जागछ । जेना-

पूर्ण कप : छहि, कहवहि, कहवहुँ, गेनाह, नहि ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अपूर्ण कप : छुनि, कहनि, कहलौं, गेनऽ, बग, बघिऽ, ले ।

९. धुनि आनासुवा : कोला-कोला सुव-धुनि अणवा जगहसँ छष्टि कऽ दोसब ठाम छनि जागत अछि । खास कऽ दानु ग आ उँक सङ्क्रमे ङ रात नागु होगत अछि । मैथिलीकवा भऽ गेन शिद्धक मवा रा अस्तमे जँ दानु ग रा उँ आरँए तँ ओकव धुनि आनासुवित भऽ एक अक्षव आगाँ आरि जागत अछि । जेना- गेनि (गेण), पाणि (पाण), दाणि (दाण), माष्टि (माष्ट), काडु (काडुड), मासु (माडुस) आदि । दूदा तसेम शिद्ध, सतमे ङ निखम नागु बहि होगत अछि । जेना- बघिकेँ बगम आ सुवाँशुकेँ सुवाँडुस बहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हनु ( )क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनु ( )क आरंभकता बहि होगत अछि । कावण जे शिद्धक अस्तमे अ उँटावण बहि होगत अछि । दूदा संस्कृत भाषासँ जहिनक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिद्ध, सतमे हनु प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया संपूर्ण शिद्धकेँ मैथिली भाषा सङ्ग्रही निखम अणुमाव हनुविरिणीष बाखन गेन अछि । दूदा ब्राकवण सङ्ग्रही प्रयोजक जेन अवारंभक आणव कतहू-कतहू हनु देन गेन अछि । प्रसूत पौथीमे मैथिली जेखनक प्राटिण आ नरीन दनु शैलीक सवन आ समीटिण पक्ष सतकेँ समेटि कऽ रर्षि-रिगाम कएन गेन अछि । सुष आ समयमे रँटतक सङ्गहि हनु-जेखण तथा तकणीकी दृष्टिसँ सेनो सवन होरँरना हिसारसँ रर्षि-रिगाम गिनाउन गेन अछि । रतमान समयमे मैथिली माह्रभायी पर्यंतकेँ आण भाषाक मध्यमसँ मैथिलीक जेण जेरँ पडि बहन परिश्रेष्कमे जेखणमे सहजता तथा एककणतापव धाण देन गेन अछि । तखण मैथिली भाषाक गुन विशेषता सत कृष्टि बहि होगक, तादु दिस जेखक-मसुन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बाजारताव यादरक कहँ छुनि जे सवनताक अणुसङ्गणमे एहन अरंभ किम्व हू आरँ देरँक छली जे भाषाक विशेषता छँसिमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बाजारताव यादरक धाकाकेँ पूर्ण कपसँ सङ्ग नऽ निर्धारित)

## १.२. मैथिली अकादमी, ष्टेण द्वाव निर्धारित मैथिली जेख-गेव

१. जे शिद्ध, मैथिली-साहित्यक प्राटिण काससँ आग धरि जाहि रतनीमे प्राटित अछि, से सामान्यतः ताहि रतनीमे निखन जाग- उँदाहवणार्थ-

ग्राह

एखण

ठास

जकव, तकव

तनिकव

अछि

अग्राह

अखण, अखनि, एखण, अखनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकव, तेकव



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

तिरकव । (रैकपिक कर्षे ग्राह)

अँड, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्ष रैकपिकतया अर्षणाउन जाय: भ२ गेन, भ३ गेन रा भॣ गेन । जा बहन अँडि, जाय बहन अँडि, जाँड बहन अँडि । कव गेनाह, रा कवय गेनाह रा कवय गेनाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'ष' लिखन जाय सकैत अँडि यथा कहनहि रा कहनहि ।

४. 'अँ' तथा 'अँ' ततय लिखन जाय जत सप्रुत: 'अँ' तथा 'अँ' सदृशी उँचावा गँड हो । यथा- देथेत, डलोक, रौँथा, डोक गवादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिँड, अहि कर्षे प्रयाँड होयत: डेँह, सँह, गँह, गँह, डेँह तथा डेँह ।

६. सँड गकावाँत शिँडमे 'ग' के ब्रुँ कवरँ सामान्यत: अँग्राँड थिक । यथा- ग्राँड देथि अँरँह, मारिनि गेनि (मस्यया मात्रमे) ।

७. स्रुतँव ड्रुँ 'अँ' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उँडुवण अँदिमे 'ँ' यथारत वाखन जाय, किँतु अँधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कर्षे 'अँ' रा 'य' लिखन जाय । यथा:- कयन रा कयन, अँयनाह रा अँयनाह, जाय रा जाँड गवादि ।

८. उँचावणमे दुँ स्रुवक रीँट डे 'य' ध्वनि स्रुत: अँरि जागत अँडि तकवा लेखमे स्थान रैकपिक कर्षे देन जाय । यथा- धीँथा, अँडेँथा, रिँथाह, रा धीँया, अँडेँया, रिँयाह ।

९. सामान्यक स्रुतँव स्रुवक स्थान यथार्मँडर 'अँ' लिखन जाय रा सामान्यक स्रुव । यथा:- मैँथा, कनिँथा, किवतनिँथा रा मैँथाँ, कनिँथाँ, किवतनिँथाँ ।

१०. कावकक रिँडकिँडक निम्नलिखित कर्ष ग्राँड:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । मेँ मेँ अँडुवणार सरँथा लज्जा थिक । 'क' क रैकपिक कर्ष 'केँव' वाखन जा सकैत अँडि ।

११. पुरँकालिक फ्रियागदक रौँड 'कय' रा 'कय' अँरय रैकपिक कर्षे नगाउन जा सकैत अँडि । यथा:- देथि कय रा देथि कय ।

१२. माँग, भाँग अँदिक स्थानमे माँ, भाँ गवादि लिखन जाय ।

१३. अँरुँ 'न' ओ अँरुँ 'म' क रँदना अँडुवणार नहि लिखन जाय, किँतु डुँगाक स्रुविकार्थ अँरुँ 'ँ', 'अँ', तथा 'न' क रँदना अँडुवणारो लिखन जा सकैत अँडि । यथा:- अँरुँ, रा अँक, अँरुँन रा अँरुँन, कँरुँ रा कँरुँ ।

१४. हनँत ड्रुँ निँडयत: नगाउन जाय, किँतु रिँडड्रुँक सँग अँकावाँत प्रयोग कयन जाय । यथा:- श्रीँगान्, किँतु श्रीँगानक ।

१५. सत एकन कावक ड्रुँ शिँडमे सँठी क लिखन जाय, हँठी क नहि, सँगड रिँडड्रुँक हेँतु हँवाक लिखन जाय, यथा यव गवक ।

१६. अँडुवणारकेँ चँडरिँडुँ द्रावा रयँड कयन जाय । पवँतु ड्रुँडुँक स्रुविकार्थ हिँ सगान जँरँन मत्राँगव





मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अनुस्रावक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक रँदना कयल जा सकैत अछि । यथा- हि केव रँदना हि ।

११. पूर्ण विवाम पामीसँ ( । ) मुचित कयल जाय ।

१२. समस्त पद सँ क लिखल जाय, रा हांगफेससँ जोडि क , हँ क बहि ।

१३. लिख तथा दिख शैलेमे रँकारवी (२) बहि नगाउन जाय ।

२०. अरु देरनागवी कयमे बाखल जाय ।

२२. किछु धुनिक लेव नरीन चिह्न रँकराउव जाय । जा अरु बहि रँकरा अछि तरित एहि दुनु धुनिक रँदना पुरँरिह अथ/ आथ/ अथ/ अथ/ आउ/ अउ लिखल जाय । अरुि ए रा ओ सँ ररु कयल जाय ।

ह.- लारिन्द मा ११/१३ श्रीकास्तु अरुव ११/१३ सुकेन्द्र मा सुम ११/०५/१३

## २. मैथिलीमे भाषा सपादन पाठकय

### २.१. उँचका निदेमे: (रौले कय कय अरु):-

दनु न क उँचकामे दौँतमे जीह सँ- जेना रौजू नाम , दूदा न क उँचकामे जीह मुँसामे सँ- (ले सँ- उँ उँचका दौय अछि)- जेना रौजू गशेनि । तानरा शैमे जीह तारुसँ , शयमे मुँसि आ दनु सयमे दौँसँ सँ- । निगौँ, सत आ शौषा रौजि कइ देखु । मैथिलीमे श केँ रौदिक संकृत जकाँ अ सेहो उँचवित कयल जागत अछि, जेना ररुा, दौय । य अलको सुअणव ज जकाँ उँचवित होगत अछि आ न उ जकाँ (यथा संयोग आ गशेनि संजोग आ

गइसे उँचवित होगत अछि) । मैथिलीमे र क उँचका रँ, न क उँचका स आ य क उँचका ज सेहो होगत अछि ।

ओहना दनु ग रँशीकान मैथिलीमे पहिल रौजल जागत अछि कान देरनागवीमे आ शिखिनासुवमे दनु ग अरुवक पहिल लिखल जागत आ रौजल जागत छै। कान जे हिन्दीमे एकव दौयपूर्ण उँचका होगत अछि (लिखल तँ पहिल जागत अछि दूदा रौजल रौदमे जागत अछि), से शिक्षा गइतिक दौयक कान हम सत ओकव उँचवण दौयपूर्ण उँगसँ कइ बहन छी ।

अछि- अ ग उ अँ उँ (उँचका)

छथि- छ ग थ छैथ (उँचका)

गहँछि- ग हँ ग छ (उँचका)

अरुि अ आ ग अ ए अँ ओ उँ अ अः म अँ सत लेन माला सेहो अछि, दूदा अँमे अ अँ ओ उँ अ अः म केँ संशुअरुव कयमे गनत कयमे प्रशुअ आ उँचवित कयल जागत अछि । जेना म केँ री कयमे उँचवित कवरै । आ देखियौ- अँ लेन देखिओ क प्रयोग अरुचित । दूदा देखिअँ लेन देखियौ अरुचित । क सँ ह धवि अ समिलित लेनसँ क सँ ह रँलैत अछि, दूदा उँचका कान हनुअु हाउ शैलेक अरुवक उँचकाक प्ररुति रँउन अछि, दूदा हम जखन मलोजमे ज अरुमे रँजेत छी, तखना थुकका लोककेँ रँजेत सुगरँहि- मलोज, रासुरमे ओ अ हाउ ज = ज रँजे छथि ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

होव त्र अछि जू आ ए३ क सहाउ द्ददा गनत उँचावण होगत अछि- गा । ओहिना छ अछि कू आ य क सहाउ द्ददा उँचावण होगत अछि छ । होव नू आ व क सहाउ अछि त्रै ( जेना त्रैमिक) आ स आ व क सहाउ अछि स (जेना सिम) । त्र भेन त+व ।

उँचावणक ऑडियो फागल विदेह आर्कागर <http://www.videha.co.in/> गव उँगनछ अछि । होव केँ / सँ / गव पूरि अक्खसँ सँठी कइ लिखू द्ददा तँ / कइ सँठी कइ । एहो सँ ये गहिन सँठी कइ लिखू आ रौदरौना सँठी कइ । अकक रौद ठी लिखू सँठी कइ द्ददा अत्र ठीग ठी लिखू सँठी कइ जेना

**छसँठी द्ददा सभ ठी । होव उत्र म स्रातम सिनु- छठम स्रातम ले । घवरौनामे रौना द्ददा घवरौनामे रावौ श्रयउ कक ।**

बहए-

**बह द्ददा सकेए (उँचावण सके-ए) ।**

द्ददा कथला कान बहए आ बह ये अर्थ तिल्लता सेहो, जेना से कया जगहमे पाकिंग कवरौक अत्रास बहै ओकरा । पढनागव गता नागन जे त्रुणुण नामा अ ड्रागनव कगठ हसक पाकिंगमे काज करौत बहए ।

डलौ, डलए ये सेहो ए तवहक भेन । डलए क उँचावण डल-ए सेहो ।

संयोगल- (उँचावण संजोगल)

केँ/ कइ

केव- क (

केव क श्रयोग गत्रमे ले कक , गत्रमे कइ सके छी । )

क (जेना बागक)

**बागक आ सँग (उँचावण बाग के / बाग कइ सेहो)**

**सँ- स२ (उँचावण)**

चन्द्रसिन्दू आ अन्नबाव- अन्नबावमे कठ धरि क श्रयोग होगत अछि द्ददा चन्द्रसिन्दूमे ले । चन्द्रसिन्दूमे कलक एकावक सेहो उँचावण होगत अछि- जेना बागसँ- (उँचावण बाग स२) बागकेँ- (उँचावण बाग क२/ बाग के सेहो) ।

केँ जेना बागकेँ भेन सिन्दूक को (बाग को)- बाग को= बागकेँ

क जेना बागक भेन सिन्दूक का ( बाग का) बाग का= बागक

कइ जेना जा कइ भेन सिन्दूक कव ( जा कव) जा कव= जा कइ

सँ भेन सिन्दूक से (बाग से) बाग से= बागसँ

स२ , त२ , त , केव (गत्रमे) एते टाक शेरुँ, सरहक श्रयोग अरुँछित ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

के दोसब अर्थे प्रशङ्क भऽ सकैए- जेना, के कहलक ? रिभक्ति “क”क रँदना एकव प्रयोग अरुचित ।

नप्रि, नहि, ले, नग, नँग, नगँ, नगँ ए सभक उच्चारण आ लेखन - ले

ओरु क रँदनामे हु जेना मरुगुर्ण (महोरुगुर्ण ले) जतए अर्थ रँदलि जए ओतहि मात्र तीस अक्षरक सशुभाक्षरक प्रयोग उचित । सम्पति- उच्चारण स स ग त (सम्पति ले- काका सही उच्चारण आसानीसँ सञ्चर ले) । ऋदा सरोत्तम (सरोत्तम ले) ।

बाह्रिय (बाह्रिय ले)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोडिये/ पोडि लेन/ पोडि लेन

पोडिये/ पोडि/ (अर्थ परिवर्तन) पोडि/ पोडि

ओ लोकनि ( ठी कऽ, ओ मे रिंकावी ले)

ओरु ओहि

ओहिये/

ओहि लेन/ ओही वऽ

जवरौं रँसरौं

गँचज्याँ

देखियोक/ (देखिओक ले- तहिना अ मे ज्ञान आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अरुचित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तँ

हेत / हेत

नप्रि/ नहि/ नँग/ नगँ ले

सौंसे/ सौंसे

रँच /

रँची (सोबाओन)

गाए (गांग नहि), ऋदा गांगक दूध (गांगक दूध ले । )

बरौं गहिबौं

हमरी/ अही



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सरै - सभ

सरैरुक - सभरुक

धवि - तक

गग- रात

रूमरै - समरै

रूमरौ/ समरौ/ रूमरहू - समररहू

रुमरौ आव - रुम सभ

आरि- आ कि

सकैड/ कबैड (गद्यमे प्रयोगक आरथकता ले)

होग/ होगि

जाग (जानि ले, जेना देन जाग) रुदा जागि-रूमि (अर्थ परिवर्तन)

गर्ग/ जाग

आड/ जाड/ आडु/ जाडु

ये, कै, सँ, गव (शेदसँ सँ क२) उँ क२ ध२ द२ (शेदसँ सँ क२) रुदा दूरी रा रैसी रिभक्ति संग  
बहनागव गवि रिभक्ति ठाकै सँ उँ । जेना एये सँ ।

एकरी , दूरी (रुदा क२ ठी)

रिकारीक प्रयोग शेदक अन्तमे, रीटमे अन्तरेक कर्पे ले । आकावाञ्चु आ अन्तमे अ क रौद रिकारीक  
प्रयोग ले (जेना दिथ

. आ/ दिथ , आ, आ ले )

अपेन्द्राणीक प्रयोग रिकारीक रैदनामे कवर अन्तरेक आ मात्र शक्यतक तकनीकी गुणताक परिचायक-  
उना रिकारीक संयुत क२ अन्तरेक कलन जागत अछि आ ररुनी आ उँचावा दूरी ठाम एकव जाग बहेत  
अछि/ बहि सकैत अछि (उँचावनामे जाग बहिते अछि) । रुदा अपेन्द्राणी सेहो अन्तरेकमे गनेसिर  
कसमे जागत अछि आ शैलमे शेदमे जतए एकव प्रयोग जागत अछि जेना *raison d'être*  
एतए सेहो एकव उँचावना रैजेन डेठव जागत अछि, माले अपेन्द्राणी अरुकासे ले दैत अछि रवण  
जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिकारीक रैदना देनाग तकनीकी कर्पे सेहो अन्तरेक) ।

अगमे, एहिमे/ एये

जगमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कै (कै नहि) ये (अनुयाव बहिल)

भ२

ये

द२

तै (त२, त लै)

सै (स२ स लै)

गाछ भव

गाछ वग

साँस खल

जो (जो go, करै जो do)

तै/तथ जेना- तै दुखारे/ तगसे/ तगले

जै/जथ जेना- जै कावण/ जगसै/ जगले

अ/अथ जेना- अ कावण/ असै/ अगले/ रुदा एकव एकटा खास प्रयोग- नावति कतेक दिससँ कहैत बहैत अग

लै/वथ जेना लैसै/ नगले/ लै दुखारे

नहै/ लौ

गेलौ/ ललौ/ ललै/ गेलहूँ/ ललहूँ/ ललै

जथ/ जाहि/ जै

जहिठाम/ जाहिठाम/ जगठाम/ जैठाम

एहि/ अहि

अग (बोझक अतमे ब्राह्मण / अ)

अगड/ अछि अड

तथ/ तहि/ तै/ तहि

उहि/ उथ

सोथि/ सोथ



जीरि/ जीरी/ जीरै

भलेही/ भवहि

ते/ तैग/ तै

जापरै/ जपरै

नग/ नै

छग/ छै

नहि/ नै/ नग

गग/ गै

ठनि/ ठनहि ...

समय मेरुंदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठै छै तखन समे जना समेपर गत्यादि । असंगबमे दान  
आ रिभक्ति जूठैल दाने जना दानेसँ, दानेमे गत्यादि ।

जअ/ जाहि/

जे

जहिगाम/ जाहिगाम/ जअगाम/ जैगाम

एहि/ अहि/ अग/ अ

अगछ/ अछि अछ

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उअ

सोथि/ सोथ

जीरि/ जीरी/

जीरै

भले/ भलेही/

भवहि

ते/ तैग/ तै

जापरै/ जपरै

नग/ नै



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

डग/ डे

बहि/ ले/ बग

गग/

ले

डगि/ डगि

डूकन अडि/ डेव गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

बीटाक सुटीमे देत रिक्वैस्टमेसँ लेखक एडिटर द्वारा कोष कए चुनत जेरीक चाली:

लौन्ड कएत कए ग्रह:

१. होयरीना/ होरीयरीना/ होमयरीना/ हेरीरीना, हेमरीना/ होयरीक/ होरीयरीक / होयरीक

२. आ/आ२

आ

३. क लेल/क२ लेल/क३ लेल/क४ लेल/क५ लेल/क६ लेल/क७ लेल/क८ लेल/क९ लेल/क१० लेल

४. ड' डेव/ड२ डेव/ड३ डेव/ड४ डेव/ड५ डेव/ड६ डेव/ड७ डेव/ड८ डेव/ड९ डेव/ड१० डेव

डेव

५. कव' डेवलेह/कव२

डेवलेह/कव३ डेवलेह/कव४ डेवलेह

६.

डिख/दिख डिय,दिय,डिख,दिय/

७. कव' रीना/कव२ रीना/ कव३ रीना कवरीरीना/कव' रीना /

कवरीरीना

८. रीना रना (शुकय), रानी (सूनी) ९

.

आइव आइव

१०. आइव: आइव

११. दु:ख दु:ख १



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२. चलि गेज चव लाव/टेज गेज

१३. देवबिह देवकिह, देवबिह

१४.

देखबहि देखबनि/ देखबेह

१३. डबिह/ डबहि डबिह/ डबेह/ डबनि

१३. चलेत/देत चबति/देति

११. एखला

खखला

१४.

बेठनि बेठजनि बेठहि

१६. ०/०२(सररिगाम) ०

२०

. ० (सियेजक) ०/०२

२१. फागि/फागि फागि/फागि

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुबब ना-बुबब

२४. केवहि/केवनि/कबबहि

२३. तखत/ तखत

२३. जा

बलब/जबब बलब/जबब बलब

२१. निकबब/निकबब

वागब/ वगब बेबबाय/ बेबबाय वागब/ वगब निकब/बेबबे वागब

२४. ०तय/ जतय जत/ ०त/ जतय/ ०तय

२६.

की बुबब जे कि बुबब जे

३०. जे जे/जे२





मानवीशिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३१. कृदि / यदि (योग पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

यदि (योग)

३२. ओलो/ ओलो

३३.

हंस/ हंस हंस

३४. लो आदि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

३५. सान्-सन्व सान्-सन्व

३६. छह/ सात छ/छः/सात

३७.

की की/ की (दीर्घावाप्तये २ रजित)

३८. जराँ जराँ

३९. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दमाण दिशि दमाण दिशि/दमाण दिस

४१

. लोवाह गवाह/गवाह

४२. किछ आवा किछ उवा/ किछ आवा

४३. जाग भवा जागत भव जाति डन/जैत डन

४४. गहुँच/ भैँ जागत भव भैँ जाग भव गहुँच/ भैँ जागत डन

४५.

जराँ (शरा)/ जराँ (शरा)

४६. वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

४७. व/व२ कय/

कय

४८. एथन / एथल / अथन / अथल

४९.

अलीकँ अलीकँ



मनुषीभि संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३०. गरीब गरीब

३१.

**धाव गाँव कन्याँ धाव गाँव कन्याँ/कन्याँ**

३२. जेकाँ जेकाँ

**झकाँ**

३३. तहिन तहिन

३४. एकव अकव

३५. रँहिन रँहिन

३६. रँहिन रँहिन

३७. रँहिन-रँहिन

**रँहिन-रँहिन**

३८. नहि/ लै

३९. कवरौ / कवरौय/ कवरौय

४०. तँ/ त २ तय/तय

४१. तैयारी ये जेठ-भाय/तै, जेठ-भाय/जय

४२. पितायै दु भाग/भाय/भाय

४३. ङ पौथी दु भाय/भाय/भाय। यारत झरत

४४. माय मै / माय दूदा मायक मयत

४५. देहि/ दय दय/ दयहि/ दयहि दहि/ दैहि

४६. द/ द/ द

४७. उ (संयोजक) उ२ (सरनाय)

४८. तका कय तकाय तकय

४९. पैले (on foot) पयले कयक/ कैक

५०.

**तहिन तहिन**

५१.



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

## प्रतीक

१२.

रैल्ला कय/ कए / क२

१३. रैल्लाया/ रैल्लाया

१४. रैल्ला

१३.

## द्वितीया द्वाका

१३.

## ततलि

११. गवरोवलि/ गवरोवलि/

गवरोवलि/ गवरोवलि

१४. रौव रौव

१५.

## छह छह(अक्षर)

+०. जे जे

+१

. सो के सो/के

+२. अक्षरका अक्षरका

+३. छहिलार छहिलार

+४. सुख

/ सुखक/ सुख

+३. सठलक सठलक +३.

## द्वितीया

+१. कवगयो/३ कवगयो ल देवक /कवगयो-कवगयो

+४. प्रवादि

प्रवादि



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१७. सगड़ १-साँही

**सगड़ १-साँही**

१०. गंधल-गंधल शौल-शौल

११. खेवण्डक

१२. खेवण्डक

१३. वगी

१४. लोथ- लो लोथ

१५. ब्रूमव ब्रूमव

१६.

**ब्रूमव (संबोधन अर्थमे)**

१७. योह यणह / गणह/ सेह/ सणह

१८. तातिय

१९. अयलाय- अयलाग/ अयलाग/ अयलाग

२०. निन्न- निन्द

२१.

**बिबु बिब**

२२. जग जग

२३.

**जाग (in different sense)-last word of sentence**

२४. छत गव थोबि जाग

२५.

**ल**

२६. खेवाथ (play) खेवाथ

२७. शिकागत- शिकागत

२८.

**ठग- ठग**



१०९

. गठ- गठ

११०. कनिष्ठा/ कनिये कनिये

१११. वाक्य- वाक्ये

११२. लोभ/ लोभ लोभ

११३. अडबट-

**उत्तर**

११४. बुझवहि (different meaning- got understand)

११५. बुझवहि/बुझवहि/ बुझवहि (understand himself)

११६. छवि- छवि/ छवि छवि

११७. खयाल- खयाल

११८.

**मोक्ष गौडवहि/ मोक्ष गौडवहि/ मोक्ष गौडवहि**

११९. कैक- कैक- कैक

१२०.

**वग वग**

१२१. जलवाग

१२२. जलवाग जलवाग- जलवाग/

**जलवाग**

१२३. लोभत

१२४.

**गवरोवहि/ गवरोवहि गवरोवहि/ गवरोवहि**

१२५.

**टिस्ट- (to test) टिस्ट**

१२६. करवयो (willing to do) करवयो

१२७. जेकवा- जेकवा



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१२५. तकरवा- तेकरवा

१२६.

**बिदेसब झालमे/ बिदेसबे झालमे**

१३०. कबरौंनहूँ/ कबरौंनहूँ/ कबरौंनहूँ कबरौंनहूँ

१३१.

**हाबिक (उछावना हाबिक)**

१३२. ओझन रजन आबिसोचा/ आबिसोस कागत/ कागटा/ कागज

१३३. आबे भाग/ आब-भागे

१३४. गिटा / गिताय/ गिता

१३५. गण/ ग

१३६. रीटा गण

**(ग) गिटा ज्ञाय**

१३७. तखन ग (गण) कहैत अछि। कहै/ सुलै देबै छव दूदा कहैत-कहैत/ सुलैत-सुलैत/ देबैत-देबैत

१३८.

**कतेक लोटे/ कतक लोटे**

१३९. कमाग-धमाग/ कमाग- धमाग

१४०

**वग वग**

१४१. खेवाग (for playing)

१४२.

**डबिहा डबिहा**

१४३.

**लोगत लोगत**

१४४. का कियो / केउ

१४५.

**कमे (hair)**



१४७.

**कस (court -case)**

१४७

**रैलगाथ/ रैलगाथ/ रैलगाथ**

१४८. **खलगाथ**

१४९. **ककरी कर्सी**

१५०. **चवटा चटा**

१५१. **कर्म कवम**

१५२. **डूराँरै/ डूराँरौ/ डूराँरि डूराँरम/ डूराँरि**

१५३. **एथुनका/**

**अथुनका**

१५४. **कथ/ विथ (राकाक अंतिम गेह)- कथ**

१५५. **कथक/**

**कथक**

१५६. **गवरी गर्गी**

१५७

**रवदी रदी**

१५८. **सुना लोवाह सुना/सुना२**

१५९. **एगाथ-लगाथ**

१६०.

**लेना ल खेवदलि लेना ल खेवदलि**

१६१. **नदी / ले**

१६२.

**करो करो**

१६३. **कतहु/ कतौ कती**

१६४. **उमविगव-उमवगव उमवगव**



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१७३. **भविगव**

१७७. **धोन/धोथव धोएन**

१७१. **गण/गण**

१७४.

**क क**

१७६. **दवरैका/दवरैजा**

११०. **ठाघ**

११९.

**धवि तक**

११२.

**धुवि लोष्ट**

११३. **बोवरोक**

११४. **बहु**

११३. **तो/तु**

११७. **तोहि (गद्यमे ग्राह)**

१११. **तोही / तोहि**

११४.

**कवरौगए कवरौगए**

११६. **एकेठा**

११०. **कवितथि / कवतथि**

११९.

**गहुँटि/ गहुँट**

११२. **बाखनहि बखनहि/ बखननि**

११३.

**वगनहि वगननि वागनहि**

११४.





### बुनि (उँटावा बुज)

१+३. बुनि (उँटावा बुज)

१+३. एवनि लावनि

१+१. बितोल/ बितोला

### बितोल

१+१. कबरौउवहि/ कबरौवनि

### कबरौवहि/ कबरौवनि

१+२. कबरौवहि/ कबरौवनि

१+०.

### आनि कि

१+५. अँटि

### अँटि

१+२. रौती जवाय/ जबाय जबा (आनि नगा)

१+३.

### मे मे

१+४.

### हौ मे हौ (हौमे हौ विभक्तिमे ली क)

१+३. ह्येव ह्येव

१+३. अँजव(spacious) ह्येव

१+१. होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/ होयतनि/ होयतहि

१+१. हाथ मटियाएरै/ हाथ मटियाएरै/ हाथ मटियाएरै

१+२. ह्येका ह्येका

२+०. देखाए देखा

२+०. देखाएरै

२+२. सतुवि सतुव

२+३.



## सालेरें सालेरें

२०४. गोलोह/ लावहि/ लावनि

२०३. लेखीक/ लेखीक

२०३. केजो/ कएजहुँ/ कएजो/ केजुँ

२०१. किड न किड/

## किड ल किड

२०४. घुमेजहुँ/ घुगओजहुँ/ घुमेजो

२०६. एजाक/ अएजाक

२१०. अः/ अह

२११. जय/

## जय (अर्थ-गविरुतन) २१२. कनीक/ कलक

२१३. सरलक/ सलक

२१४. गिना२/ गिवा

२१३. क२/ क

२१३. जा२/

## जा

२११. आ२/ आ

२१४. भ२ / भ' (१ शक्यक कमीक द्यातक)

२१६. निप्रय/ नियम

२२०

## लेखीअव/ लेखीयव

२२१. गहिव अफव ठा रीदक/ रीचक ठ

२२२. तहि/ तहिँ/ तयी/ तै

२२३. कहि/ कही

२२४. तँअ/

तै / तअ



मनुषीभि संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२२३. नँग/ नगँ नयि/ नलि/ले

२२७. हे/ हए / एवीहँ/

२२१. डयि/ डै/ डैक / डग

२२४. दृष्टि/ दृष्टियँ

२२६. थी (come)/ थीर (conjunction)

२३०.

थी (conjunction)/ थीर (come)

२३५. कला/ काला, काना/ कना

२३२. लोह-लवहि-लवनि

२३३. लोह-लोह

२३४. कलौ- कलौ- कलौ/ कलौ

२३३. किड न किड- किड ल किड

२३७. कल- कल

२३१. थीर (come)- थी (conjunction-and)/ थी । थीर- थीर / थीर- थीर

२३४. लत- लत

२३६. घुमन- घुमन- घुमन

२४०. एवाक- एवाक

२४५. लोनि- लोनि/ लोनि

२४२. उ- वाय उ एवाक रीट (conjunction), उर कहक (he said)/ उ

२४३. की ह/ कानी एवा ह/ की ह । की हग

२४४. दृष्टि/ दृष्टियँ

२४३.

. गोमि/ गोमि

२४७. तै / तै/ तयि/ तहि

२४१. जौ

/ जौ/ जौ

२४४. सभ/ सरै



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२४९. सभक/ सर्वेक

२५०. कहि/ कही

२५१. कला/ काला/ कालहूँ/

२५२. शबकती भय गेव/ भय गेव/ भय गेव

२५३. कला/ कला/ कला/ कला

२५४. अः/ अह

२५५. जले/ जलए

२५६. गेवनि/

**गेवह (अर्थ परिवर्तन)**

२५७. केवहि/ केवहि/ केवनि/

२५८. नय/ नय/ नय (अर्थ परिवर्तन)

२५९. कनीक/ कलक/ कनी-मनी

२६०. गठवहि गठवनि/ गठवगल/ गठवगलि/ गठवोवनि/

२६१. निथय/ निथय

२६२. हेबटथव/ हेबटथव

२६३. गलि अरुव बल ठा रीठमे बल ठ

२६४. आकावाप्तये रिंकारी प्रयोग उचित ले/ अपोद्धातक प्रयोग हास्यक तकनीकी न्यूनताक परिचायक  
ओकव रीदना अरुग्रह (रिंकारी) क प्रयोग उचित

२६५. केव (पद्यमे ग्राह) / -क/ क२/ के

२६६. ठैलि- ठलि

२६७. नलोए/ नलोए

२६८. लोएत/ लएत

२६९. जएत/ जएत/

२७०. अएत/ अएत/ अओत

२७१

. अएत/ अएत/ अएत

२७२. लिअरौक/ लिअरौक/ लिअरौक



२१३. गुरु/ गुरुह

२१४. गुरुह/ गुरुह

२१५. अतार/ अतार/ अतार/ अतार

२१६. जाहि/ जाग/ जाग/ जे/ जे

२१७. जागत/ जेतए/ जागत

२१८. अथव/ अथव

२१९. केक/ कक

२२०. अथव/ अथव/ अथव

२२१. जा/ जा/ जा (नामति जा नगदीह ।)

२२२. बुकएन/ बुकएन

२२३. कर्तुअथव/ कर्तुअथव

२२४. ताहि/ ते/ तग

२२५. गायरौ/ गायरौ/ गायरौ

२२६. सकै/ सकै/ सकै

२२७. सेवा/सवा/ सवा (तात सवा गेन)

२२८. कहेत बली/देखेत बली/ कहेत छलौ/ कहे छलौ- अहिना छलैत/ गटेत

(गटे-गटेत अर्थ कथला काव परिवर्तित) - आव बुसो/ बुसोत (बुसो/ बुसो छी कदा बुसोत-बुसोत)/ सकैत/ सकै । करैत/ करै । दे/ देत । डे/ डे । बरै/ बरैक । बरौ/ बरौक । बि/ बि । वातिक/ वातिक बुसो अथ बुसोत केव अग-अग जगलव शयोग समीप अछि । बुसोत-बुसोत अथ बुसोत । हय्य बुसो छी ।

२२९. दुआरे/ द्वारे

२३०. भेट/ भेट/ भेट

२३१.

अथ/ अथ/ अथ (अथ अथ अथ अथ अथ)

२३२. तक/ धवि

२३३. ग/ लो (meaning different - जनरौ ग)

२३४. स/ स (कदा द, न)



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२९३. ठुइ (तीन अक्षरक मेन रँदना प्रकृष्टिक एक आ एकठा दोसबक उँगयोग) आदिक रँदना हु  
आदि । मह ठुइ/ महइ/ कर्ता/ कर्ता आदिमे त संशुद्धक कोनो आरंभकता मैथिलीमे ले अछि । **रउर**

२९७. रौसी/ रौसी

२९१. रौना/ राना **रौना/ रना** (बहरौना)

२९४

**रावी/ रँदनेरावी**

२९९. राती/ राती

३००. **अनुबर्द्धिय/ अनुबर्द्धीय**

३०५. **समथ/ सरेथ**

३०२. **समथवका/ समथवका**

३०२. **वालो/ वलो** (

**जेठैत/ जेठै)**

३०३. **वागव/ वगव**

३०४. **हरौ/ हरौ**

३०३. **वाथवक/ वथवक**

३०७. **आ (come)/ आ (and)**

३०१. **गशाताग/ गशाताग**

३०४. २ केव रारहाव शिद्धक अनुभवे मात्र, यथासंभव रीटमे ले ।

३०९. **कहेत/ कहे**

३१०.

**बल्य (डव)/ बहे (डवै) (meaning different)**

३१५. **तागति/ ताकति**

३१२. **खवाग/ खवाग**

३१३. **रौगण/ रौगि/ रौगणि**

३१४. **जाठि/ जाठि**

३१३. **कागज/ कागज/ कागत**

३१७. **गिबै (meaning different - swallow)/ गिब (खस)**



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३१. बर्हिद्य/ वाह्दीय

**DATE-LI ST (year – 2013–14)**

**(१४२५ फरवरी साव)**

***Marriage Days:***

*Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29*

*Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13*

*January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.*

*Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.*

*Mar ch 2014- 2, 3, 5, 7, 9.*

*April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.*

*May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.*

*June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.*

*July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.*

***Upanayana Days:***

*Febr uar y 2014- 2, 4, 9, 10.*

*Mar ch 2014- 3, 5, 11, 12.*

*Apr il 2014- 4, 9, 10.*

*June 2014- 2, 8, 9.*

***Dvi r agaman Dī n:***

*November 2013- 18, 21, 22.*

*December 2013- 4, 6, 8, 9, 12, 13.*

*Febr uar y 2014- 16, 17, 19, 20.*

*Mar ch 2014- 2, 3, 5, 9, 10, 12.*



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

April 2014– 16, 17, 18, 20.

May 2014– 1, 2, 9, 11, 12.

***Mundan Din:***

November 2013– 20, 22.

December 2013– 9, 12, 13.

January 2014– 16, 17.

February 2014– 6, 10, 19, 20.

March 2014– 5, 12.

April 2014– 16.

May 2014– 12, 30.

June 2014– 2, 9, 30.

**FESTIVALS OF MTHILA (2013–14)**

Mauna Panchami –27 July

Madhushravani – 9 August

Nag Panchami – 11 August

Raksha Bandhan– 21 Aug

Krishnastami – 28 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat – 5 September

Hartalika Teej – 8 September

ChauthChandra–8 September

Vishwakarma Pooja– 17 September

Anant Chaturdashi – 18 Sep





मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Pi tri Paksha begins - 20 Sep  
Ji moot avahan Vrat a/ Ji ti a - 27 Sep  
Mat ri Navami - 28 Sep  
Kal ashst hapan - 5 Oct ober  
Bel naut i - 10 Oct ober  
Pat ri ka R avesh - 11 Oct ober  
Mahast ami - 12 Oct ober  
Maha Navami - 13 Oct ober  
Vi j aya Dashami - 14 Oct ober  
Koj agar a - 18 Oct  
Dhant er as - 1 November  
Di yabat i , shyama pooj a - 3 November  
Annakoot a/ Govar dhana Pooj a - 4 November  
Bhr at ri dwi ti ya/ Chi tr agupt a Pooj a - 5 November  
Chhat hi - 8 November  
Sama Pooj aar ambh - 9 November  
Devot t han Ekadashi - 13 November  
r avi vr at ar ambh - 17 November  
Navanna par van - 20 November  
Kar ti k Poor ni ma - Sama Vi sar j an - 2 December  
Vi vaha Panchmi - 7 December  
Makar a/ Teel a Sankr anti - 14 Jan  
Nar akni var an chat ur dashi - 29 Januar y



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Basant Panchami / Saraswati Pooja - 4 February

Achha Saptmi - 6 February

Mahashivaratri - 27 February

Holikadahan - Fagua - 16 March

Holi - 17 March

Saptadashmi - 17 March

Varuni Trayodashi - 28 March

Jurishital - 15 April

Ram Navami - 8 April

Akshaya Tritiya - 2 May

Janaki Navami - 8 May

Ravi Brahmant - 11 May

Vat Savitri - Barasait - 28 May

Ganga Dashhar - 8 June

Harivastar Vrat - 9 July

Shree Guru Purnima - 12 July

VI DEHA ARCHIVE

पत्रिकाक सबठो पुरान अंक ब्रैल-बिदेह अ, तिवहूता अ देरनागरी कगमे Vi deha e journal's  
all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह अ अंक ३.० पत्रिकाक पहिल -

बिदेह अ अंक ३.० पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-ii/>

[मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download](#)



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pot hi>

[इडियो संकलन ऑ मैथिली. Maithili Audio Downloads](http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio)

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

[४. मैथिली रीडियो संकलन Maithili Videos](http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio)

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-videos>

[३. आधुनिक चित्रकला आ चित्र / मिथिला चित्रकला. Mithila Painting/ Modern Art and Photos](http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos)

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

**बिदेह क एहि सब सहयोगी बिकसव सेहो एक लेब जाई ।**

३. बिदेह मैथिली ब्लॉग :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानबूत एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

५. बिदेह मैथिली साहित्य अग्रजोमे अबुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पुरि-कप "भानसबिक गाढ" :

<http://gajendrat hakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गडबुल :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह फागल :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहुता (मिथिलासब) जानबूत (बैरंग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. बिदेह: ब्रैन: मैथिली ब्रैनमे: पहिल लेब बिदेह द्वारा



मनुषीषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४.VI DEHA I ST MAI THILI FORTNI GHTLY EJ OURNAL ARCHI VE

<http://videha-archiv.blogspot.com/>

१३. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका मैथिली प्पाथीक आर्कागर

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१३. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका ऑडियो आर्कागर

<http://videha-audio.blogspot.com/>

११. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका रीडियो आर्कागर

<http://videha-video.blogspot.com/>

१५. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवृत्त)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२०.प्रकाशिन त्रुति.

<http://www.shruti-publication.com/>

२१.<http://groups.google.com/group/videha>

२२.[http://groups.yahoo.com/group/VI\\_DEHA/](http://groups.yahoo.com/group/VI_DEHA/)

२३.गजेन्द्र ठाकुर गडेकर

<http://gajendratyakur123.blogspot.com>

२४. लना कुरका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>


२३.रिदेह रेडियोकरिता आदिक पहिन प्पाडकास्ट सांठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२७.  Vi deha Radi o

२१.  Joi n of fi ci al Vi deha f acebook gr oup.

२४. बिदेह मैथिली बाँधे उमेर

[ht t p://mai t hi l i -dr ama.bl ogspot .com/](http://maithili-drama.blogspot.com/)

२६. समादिया

[ht t p://es amaad.bl ogspot .com/](http://esamad.blogspot.com/)

३०. मैथिली फिल्म

[ht t p://mai t hi l i f i l ms .bl ogspot .com/](http://maithilifilms.blogspot.com/)

३५. अचिन्हार आखर

[ht t p://anchi nhar akhar kol kat a.bl ogspot .com/](http://anchinharakharakatablogspot.com/)

३२. मैथिली हाङ्कु

[ht t p://mai t hi l i -hai ku.bl ogspot .com/](http://maithili-hai.blogspot.com/)

३३. मानक मैथिली

[ht t p://manak -mai t hi l i .bl ogspot .com/](http://manak-maithili.blogspot.com/)

३४. बिहनि कथा

[ht t p://vi hani kat ha.bl ogspot .i n/](http://vihani-katha.blogspot.in/)

३३. मैथिली कविता

[ht t p://mai t hi l i -kavi ta.bl ogspot .i n/](http://maithili-kavita.blogspot.in/)

३७. मैथिली कथा

[ht t p://mai t hi l i -kat ha.bl ogspot .i n/](http://maithili-katha.blogspot.in/)

३१. मैथिली समालोचना

[ht t p://mai t hi l i -s amal ochna.bl ogspot .i n/](http://maithili-samalochna.blogspot.in/)



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

**महत्त्वपूर्ण सूचना:** The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



बिदेह:सदेह:९: २: ३: ४:३:७:१:७९० "बिदेह"क छिठ संकषण: बिदेह-३-पत्रिका (<http://www.videha.co.in/>) क छान बषण समिति ।

संपादक: गजेन्द्र ठाकुर ।



मनुषीषिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VI DEHA

Details for purchase available at publisher's (print-version) site  
<http://www.shruti-publication.com> or you may write to  
[shruti\\_publication@shruti-publication.com](mailto:shruti_publication@shruti-publication.com)

रिदेह



मैथिली माहिल आन्दोलन

(c) २००४-१३. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए संपादकाधीन । रिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ-पत्रिका । SSN 2229-547X VI DEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उषेने मंडव । सहायक संपादक: गिर कर्माव साँ, बाय रिवाम साँ आँ कुमारी गेलाराज कर्माव कर्माँ । भाषा-संपादन: गजेन्द्र कर्माव साँ आँ पञ्जीकाव विद्यानन्द साँ । कव-संपादन: ज्योति साँ टोषरी आँ बग्गि लेखाँ मिश्रा । संपादक-शोध-अनुसंधा: साँ. जया रर्मा आँ साँ. बाजरी कर्माव रर्मा । संपादक-नाटक-वैगर्क-चवचि- लेख ठाकुर । संपादक-सुचना-संपर्क-समाद- पुनम मंडव आँ धियरकाँ साँ । संपादक-अनुवाद विभाग- विनीत उषेव ।

बचनाकाव अण मूलिक आ अत्रकाशित बचना (जकब मूलिकताक संपूर्ण उतबदागिन्न लेखक णाक मया छहि) [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) केँ मेन अटैचमेण्टक कर्गमे .doc, .docx, .rtf राँ .txt फर्गमेठैमे णाँ सकेत छुथि । बचनाक सग बचनाकाव अण सक्रिय परिचय आ अण कएन गेन ह्योठै णठैताह, मे आशा करैत छी । बचनाक अतमे षाँगण बहय, जे ङ बचना मूलिक अछि, आ पहिल प्रकाशिक हेतु रिदेह (पाष्किक) ङ पत्रिकाकेँ देन जा बहन अछि । मेन प्राणु होयराँक बाँद यथार्थतर शीघ्र ( सात दिनक तीतब) एकब प्रकाशिक अकक सुचना देन जायत । 'रिदेह' प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका अछि आ एमे मैथिली, संसृत आ अत्रेज्जीमे मिथिला आ मैथिलीसँ सँरिषित बचना प्रकाशित कएन जागत अछि । एहि ङ पत्रिकाकेँ त्रीमति नक्का ठाकुर द्वावा मासक ०१ आ १३ तिथिकेँ ङ प्रकाशित कएन जागत अछि ।

(c) 2004-13 सर्वाधिकार स्वबकित । रिदेहमे प्रकाशित सतुठा बचना आ आर्काँगरक सर्वाधिकार बचनाकाव आ सँग्रहकर्ताक नगमे छहि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशिक किरा आर्काँगरक उपयोगक अघिकाव किराँक हेतु [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब संपर्क कक । एहि साँगठकेँ त्रीति माँ ठाकुर, मधुनिका टोषरी आँ बग्गि प्रिया द्वावा डिजाँगण कएन गेन । ३. जुनाँ २००४ केँ

<http://gajendrat.hakur.bl.ogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> "भानसबिक गाँठ"- मैथिली ज्ञानरतुसँ प्राबन्ध गठबलेठपब मैथिलीक प्रथम उषिठितिक यात्रा रिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका धवि णहूँचन अछि,जे <http://www.videha.co.in/> पब ङ प्रकाशित होगत अछि । आँ "भानसबिक गाँठ" ज्ञानरतु रिदेह ङ-पत्रिकाक प्ररडाँक सग मैथिली भाषाक ज्ञानरतुक एणीठैबक कर्गमे प्रयाँ ७२ बहन अछि । रिदेह ङ-पत्रिका । SSN 2229-547X VI DEHA



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



मिह वडु

